ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता

जून-जुलाई - 2026 / वर्ष - 11, अंक - 4

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518

CNS
Network Services

CompuNet Solution

COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING

GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group

Shri Ram
Associates

K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559

बुकिंग मात्र
11000 में

FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू

2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू

FREE HOLD PLOTS
VILLAS | FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा

Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.

Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution

CNS
Network Services

Service
AMC

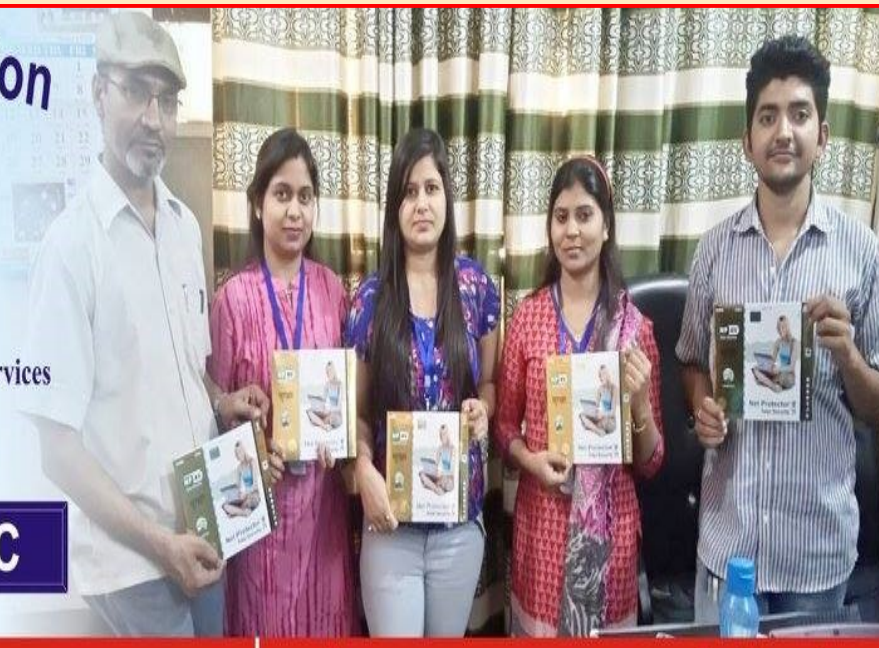

Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
विनोद यादव, गाजियाबाद

प्रकाशक आ संपादक
जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक
डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक
केशव मोहन पाण्डेय (दिल्ली)

सहायक सम्पादक
डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)
प्रियंका पाण्डेय (लखनऊ)

सलाहकार सम्पादक
मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
सौरभ पाण्डेय,नैनी, प्रयागराज (उ0प्र0)
दिनेश पाण्डेय, पटना
डॉ जयंत शुक्ला, इंदौर (म0प्र0)

तकनीकी एडिटिंग-कम्पोजिंग
सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र (कवर पेज)सहयोग
केशव मोहन पाण्डेय –**नई दिल्ली**

प्रतिनिधि
आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्य गण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची),

डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण , पटना, डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

संपादकीय

युद्ध के विभीषिका आ हमनी के –जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /5

धरोहर

बबुआ बोलता ना – राम जियावन दास बावला /6

कहानी/लघुकथा / रम्या रचना

पौरुष का पुनर्जन्म –दिवाकर प्रसाद तिवारी /14-16
खून से बड़हन रिस्ता –डॉ रजनी रंजन/18-19
गइल भंइस पांकी में-शरण आशुतोष /20-23
एगो भुला दिहल गइल मेहरारू –शालिनी कपूर /23-25
गाँव के परधानी –डॉ प्रतिभा सिंह /37-38
तीसरकी बेटी-डॉ प्रतिभा सिंह /40-43
भकजोन्ही-केशव मोहन पाण्डेय /43-46

कविता/गीत/गजल

ए भंते जी – अनिल पाण्डेय अकेला /13
एगो रोटी बदे-तारकेश्वर मिश्र राही /16
कनक किशोर के चार गो कविता- कनक किशोर /17
गउवें में रहीं सइयाँ- दिवाकर तिवारी /25
आखिर सभे फंस गइल-रंजन प्रकाश /26
एने से इंडिया रेलित –डॉ सुनील कुमार पाठक /26
का ई सांच ह –कनक किशोर /27-28
गीत –डॉ कमलेश राय /29
बफर-उदय शंकर प्रसाद /29
मोबाइल के जंजाल –अशोक कुमार मिश्र/30
कउवा जनि बावS कोणाच तू – संगीत सुभाष/30
भोजपुरी गजल – मनोज भावुक /31
पहुना-धीरेंद्र पांचाल /34
बाबूजी-सन्नी भारद्वाज /35
दोहरा चरित्र- अभियंता सौरभ कुमार /35
सासु जी के मेहना– जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /36
निर्गुण-आकृति विज्ञा 'अर्पण'/36
पिया छोड़ा ना सहरिया –श्याम कुँवर भारती /39
सतुआ भइल किसान-डॉ एम डी सिंह /39

पुस्तक चर्चा /समीक्षा

समकालीन भोजपुरी कविता में युवा कवियन के धमक
–डॉ सुनील कुमार पाठक /7
दरद के सोन्हाई: भोजपुरी काव्य संवेदना के मार्मिक दस्तावेज़
-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /8-9
जनवादी झलक के बढ़त डेग ह : अंगुठा कटत हमार बा
–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /9-10
जब नेह के धागा टूटेला- सामाजिक यथार्थ पर एगो गहन दीठी
–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /10-11
चुभेलागल बरगद के छाँव के बहाने से जनसरोकार के बात
–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /11-12
समाज के पतझड़ में बसंती उमेद के दीया: ललमुनिया
-अभिषेक पाण्डेय/12-13
जीवन अनुभूति के गझिन बुनावट निबंध के आधार
– कनक किशोर /32-34

■■

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

युद्ध के विभीषिका आ हमनी के

युद्ध मानव सभ्यता के इतिहास के एगो अइसन तीखर साँच ह, जवना के छाया सदियन से मनई के जिनगी पर पड़त आइल बा। जब-जब धरती पर युद्ध के आगि भड़केला, तब-तब खाली सीमा पर ठाढ़ सैनिक ना, बलुक पूरा समाज के ओकर पीड़ा झेले के पड़ेला। युद्ध के मैदान में चलल गोली आ बरसल बम के आवाज बहुत दूर तक सुनाई देला, बाकिर ओकर दर्द पीढ़ी-दर-पीढ़ी मानवता के भीतर गूंजत रहेला। आज के समय में हमनी के ई समझे के जरूरत बा कि युद्ध कवनो समस्या के स्थायी समाधान ना ह, बलुक बिनास के एगो भयानक रास्ता ह।

युद्ध के सबसे बड़ शिकार आम आदमी होला। जवन लोग खेत में अन्न उपजावेला, जवन मजदूर अपना मेहनत से समाज के बनावेला, जवन बच्चा स्कूल में भविष्य के सपना देखेला—सबसे पहिले ओकरे जीवन प्रभावित होला। युद्ध के समय घर-परिवार उजड़ जाला, लोग अपना जनम भूमि छोड़े पर मजबूर हो जाला आ शरणार्थी बनके भटके लागेला। हजारन महतारी के गोद सूना हो जाला, बहिन-बेटी के आँख में डर समा जाला आ बच्चन के बचपन छिन जाला।

युद्ध खाली जान-माल के नुकसान ना करेला, ई प्रकृतियो के बड़हन नोकसान पहुंचावेला। बमबारी से जंगल उजड़ जाला, नदी-नाला प्रदूषित हो जालें आ धरती के संतुलन बिगड़ जाला। आधुनिक समय में परमाणु हथियार आ घातक अस्त्र-शस्त्र के बढ़त इस्तेमाल पूरा मानव जाति खातिर खतरा बन गइल बा। अगर युद्ध के आगि बेकाबू हो गइल त ओकर परिणाम खाली कुछ देश तक सीमित ना रही, पूरा संसार प्रभावित हो सकेला।

इतिहास गवाह बा कि युद्ध के बाद जीत के जश्न कुछ दिन मनावल जाला, लेकिन हार-जीत से अलग असली नुकसान मानवता के होला। कवनो भी युद्ध में सैनिक चाहे ऊ कवनो देश के होखे, उहो कवनो परिवार के बेटा, पति, पिता भा भाई होला। ओकरे जिनगी के कीमत केहू पदक भा सम्मान से पूरा ना कर सकेला। एह से युद्ध के पीछे छिपल मानवीय पीड़ा के समझल जरूरी बा।

आज के समाज में हमनी के भूमिका बहुत महत्वपूर्ण बा। हमनी के आपसी मतभेद के समाधान बातचीत, समझदारी आ सह-अस्तित्व के भावना से करे के चाहीं। धर्म, जाति, भाषा भा देश के नाम पर नफरत फैलावे के बजाय प्रेम, सहयोग आ शांति के रास्ता अपनावल जरूरी बा। शिक्षा के असली उद्देश्य इहे होखे के चाही कि मनई दूसरका के दरद समझ सके आ हिंसा के जगह संवेदना के महत्व जाने।

युद्ध के विभीषिका हमनी के ई सिखावेला कि शांति कवनो कमजोर के निशानी ना, बलुक सबसे बड़ ताकत ह। एगो देश के असली विकास ओकर हथियार के संख्या से ना, बलुक ओकरे नागरिकन के खुशहाली, शिक्षा आ मानवता से नापल जाला। अगर दुनिया के राष्ट्र आपस में सहयोग करS लागें, त बहुत समस्यन बेगर संघर्ष के सुलझावल जा सकेला।

हमनी के अपना रोजमर्रा के जिनगी में शांति के सनेसा अपनावे के चाहीं। घर, समाज आ देश में आपसी सम्मान आ सहनशीलता बढ़ावल जरूरी बा। छोट-छोट विवाद अगर समय पर प्रेम से सुलझा लिहल जाव, त बड़ संघर्ष के संभावना कम हो जाला। हर मनुष्य के भीतर ई भावना होखे के चाहीं कि "हमनी के सभे एके मानव परिवार के हिस्सा बानी।"

अंत में कहल जा सकेला कि युद्ध के विभीषिका मानवता खातिर एगो चेतावनी ह। ई हमनी के याद दिलावेला कि बिनास के रास्ता बहुत आसान होला, बाकिर निर्माण आ शांति के रास्ता कठिन होखला का बादो सभेले सुन्नर होला। हमनी के अइसन दुनिया बनावे के कोशिश करे के चाहीं जहाँ तलवार आ बंदूक के जगह संवाद आ प्रेम के आवाज गूंजे। काहे कि असली विजय युद्ध में ना, बलुक मानवता के बचावे में बा।

एह बाति के संगे भोजपुरी साहित्य सरिता परिवार के मय दुनिया से निहोरा इहे बा कि शांति के हर संभावना के खोजे भर ना करे बलुक ओकरा भुइयाँ उतारे के चाही। आजु एकरे सभेले बेसी जरूरत बा।

■■

रउरा सभे के आपन--

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

बबुआ बोलता ना

कहवाँ से आवैला कवन ठाउँ जइबा बबुआ बोलता ना।
कौन दिहले तोके बनबास, बबुआ बोलता ना।

कवने करनवाँ बतावा अइला बनवां।
कोने कोने घूमेला भँवरवा जइसे मनवाँ।

कउनी हो नगरिया में अँजोरिया नाहीं भावै, बबुआ बोलता ना।
कहवां रात भावै बरहो मास बबुआ बोलता ना।।

रूठि गइलीं रिधि सिधि चललीं रिसियाइ के।
कउनी हो नगरिया में अगिया लगाइ के।

कहवाँ के लोगवा के भोगवा नाहीं भावे बबुआ बोलता ना।
दिहलें तोहके घरवा से निकास, बबुआ बोलता ना।।

विधना जरठ मति अटपट कइलैं रे।
कि या कवनों भूल तीनों मूरती से भइलैं रे।

किया रे अभागा कउनों लागा बाँदी कइलैं, बबुआ बोलता ना।
कि या कतहूँ पउला ना सुपास, बबुआ बोलता ना।।

हम बनवासी बबुआ माना हमरी बतिया।
बावला समाज में बिताय ला एक रतिया।

कन्द मूल फल जल सेवा में जुटइबै बबुआ बोलता ना।
सेवा करबै माना बिसवास, बबुआ बोलता ना।।

■■

(गीत लोक से साभार)

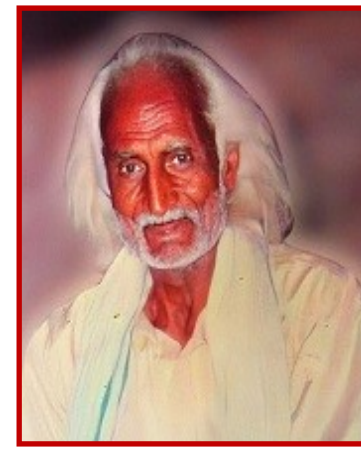

रामजियावान दास 'बावला'

जन्म—1 जून 1922
मृत्यु—1 मई 2012

प्रकाशित पुस्तक -

- गीतलोक
- गीत मंजरी

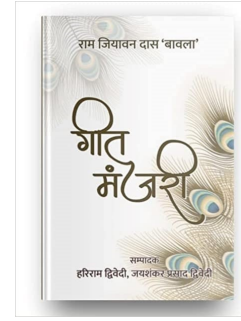

❍ भीषमपुर , चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

समकालीन भोजपुरी कविता में युवा कवियन के धमक

डॉ सुनील कुमार पाठक

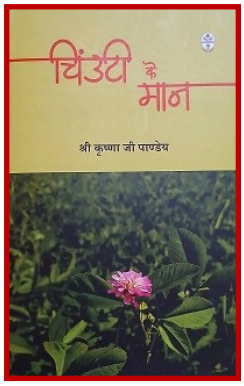

समकालीन भोजपुरी कविता में युवा कवियन के धमक अब साफ-साफ सुनाये लागल बा। श्री कृष्णा जी पांडेय ,अरक-बिचला टोला (बक्सर) एगो अइसनका होनहार कवि बाड़न जिनका कविता में लोक के रमणीय बहुविध सौन्दर्य, समकालीनता के समहर बोध , कहन में एगो ताजगी भरल मौलिकता आ शैली में भोजपुरिहा मस्ती भरल थोरिके अनगढ़ अक्खड़पना - देखे लायेक बा।पहिल बेर कवि के पहिलका संग्रह 'चिउँटी के मान' (68 गो कवितन वाला) खोलिके पन्ना पलटत एगो छोटहने कविता पर नजर जाके टिक गइल हऽ -

"बे मरदे
चास दऽ दोखार दऽ
हर त बड़ले बा
ना होखे त उखाड़ दऽ
बे मरदे जन देखऽ अब
गझिन -फाँफर
का सोचे के बा कबार द
बे मरदे अपने जन करिहऽ
इचिको कुछुओ
खाली दोसरा के ललकार दऽ
बे मरदे जोड़ऽ जन का नाफा बा
फोड़े में महातम बा
फोड़ दऽ तूड़- ताड़ दऽ। " (बे मरदे)

बे मरदे !एगे अइसनका अनझटाह संबोधन हऽ जवना के नकारो में एगो खास तरे के अपनापन भरल दिखेला।

एह लघु कविता में जवना तरे के मारक संवादधर्मिता आ व्यंग्य के नुकीलापन बा ऊ अपना अभिधात्मकते में भोजपुरिहा माटी आ पानी के अइसनका बानगी सोझा करि देत बा जवना से ई साफ हो जात बा कि बिना गझिन-फाफर,नीक-जबून,नाफा-नोकसान सोचले -बिचरले एह देस-समाज के मनई साँच के आँच ना आवे देबे खातिर जिदिआइल दिखेलन।दोसरका ओरि एह माटी के मनई के एगो इहो खुराफाती लछन होला कि ऊ चढ़ी-बढ़ी देके अपने बचिके आन के फँसा-उलझा देबे के कला में खूब माहिर होलें। "खाली दोसरे के ललकार दऽ " में अइसनका बेधकता बा जवना से अचिको उकसावा ना बरजने के अरथ व्यंजित होत बा।अइसनका आभी-गाभी एह संग्रह के अधिकतर कवितन में देखे के मिल रहल बा जवन एह माटी के खास पहिचान हटे।

एगो दोसर नन्हबितनी कविता बिया- ' पता'।एकर पाँति बाड़ी सँ-

"जिनिगी
बीतल
ओही ठइयाँ
जहाँ जानत सभे रहे
बाकी चीन्हत
कुछुए लो रहे।"

-जाने आ चीन्हे में बड़ा अंतर होला।केहू से सुनिके केहू भा कुछऊ के बारे में जानल जा सकत बा बाकिर कवनों चीझ-बतूस ,मनई भा आउरो कुछऊ के ठीक से चीन्हल - पहचानल आज के दौर में बहुते कठिन हो गइल बा। 'पता' शीर्षक कविता एही दूगो शब्दन-'जानत' आ 'चीन्हत ' में पुरा के रहि गइल बिया।कवि के मलाल बा कि आज के मनई के जहाँ पूरा जिनिगी सिरा जात बा ओजवो के लोग बस एतने सँकार पावत बा कि "हँ जी नाँव त सुनल लागत बा बाकिर भेंट-मुलाकात ना ह कबो के।" आज के इंसान के ई अजनबीपन मनुष्यता के सामने आज एगो बड़हन संकट बनि के ठाड़ हो गइल बा।

छोट-छोट कवितन के इहे सहज-स्वाभाविक गँवई अंदाज आ ढंग एह संग्रह के कवितन में जान डालि देबे में कामयाब हो गइल बा। संग्रह के भूमिका डा.देवेन्द्र तिवारी जी बढ़िया लिखले बाड़न।

संग्रह के कवि भारत सरकार के राजभाषा विभाग में बाड़न आ 'आखर' से इनकर सक्रिय जुड़ाव बा।आज दिल्ली-लवटानि में हमरा से पटना में मिलत-जुलत आ आपन किताब सँउपत निकल गइलन हँ ।बढ़िया लागल हऽ व्यापक समझ आ धारदार सोच वाला एगो धुरंधर भोजपुरिहा से मिलिके।बहुत-बहुत बधाई भाई।

❑❑

❍ फ्लैट नंबर–303,परमानन्द पैलेस
(दानापुर–801503(पटना),बिहार।

'दरद के सोन्हाई': भोजपुरी काव्य-संवेदना के मार्मिक दस्तावेज

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

साहित्य के जीये आ महसूसे वाले लोगन के ई मालूम बा कि गजल अरबी साहित्य के प्रसिद्ध काव्य-विधा ह, जवन बाद में फारसी, उर्दू, नेपाली आ हिन्दी साहित्य के संगे भोजपुरी साहित्यो में खूब लोकप्रिय भइल। अरबी भाषा के एह शब्द के माने औरतन से भा औरतन का बारे में बात कइल। बाक़िर समय का संगे एकरे फलक में जबर पसराव भइल। दुष्यंत कुमार गजल के विषय वस्तु में सामाजिक-राजनैतिक जिंदगी के साँच के चासनी में चभोर के जवन पसराव देहलें, उहें एडम गोंडवी ओकरा के 'बेवा के माथे के शिकन' तक ले गइलें। कहे के माने-मतलब ई बा कि आजु कवनों अइसन क्षेत्र नइखे ,जवन गजल से बाचल होखे।

आजु के एह सत्र में कृष्णदेव 'घायल' जी के गजल संग्रह 'दरद के सोन्हाई' पर बात कर रहल बानी। ई संग्रह अपना भीतरि 82 गो मोती सइहार के भोजपुरी साहित्य जगत के सोझा ठाढ़ बाटे। कृष्णदेव 'घायल' जी क गजल-संग्रह "दरद के सोन्हाई" मानवीय पीड़ा, सामाजिक विडम्बना आ टूटत मानवीय संबंधन के गहिर अभिव्यक्ति ह। एह कृति में गजलगो अपने व्यक्तिगत अनुभूति के समाज के व्यापक यथार्थ से जोड़त बाड़ें। संग्रह के गजलन में प्रेम, विश्वासघात, सामाजिक असमानता, राजनीति के गिरावट, गाँव के स्मृति आ मनुष्य के अंतर्द्वंद्व के सशक्त चित्रण कइल गइल बाटे। 'घायल' जी के भाषा सहज, लोकधर्मी आ संवेदनशील बा। ऊ कठिन भावना के बहुत सरल भोजपुरी शब्दन में अभिव्यक्त कइले बाड़ें। संग्रह के समहुत से देखीं –

"नित सुधा के भरम में विष पी रहल बा आदमी
दर्द में बेबस घुटन में जी रहल बा आदमी।"

एह शेर में आधुनिक मनुष्य के विवशता आ छलपूर्ण समाज के चित्र साफ झलकता। कवि बार-बार एह बात पर जोर देत बाड़ें कि आदमी आज बाहरी चमक में भीतर से टूटत जा रहल बा। एह गजल संग्रह के एक बड़ विशेषता सामाजिक चेतना बा। गजलगो राजनीति, भ्रष्टाचार, जातीय विभाजन आ नैतिक पतन पर तीखर प्रहार करत देखात बाड़ें—

"देखि अत्याचार अनाचार मन भइल 'घायल'
ईमान सरेआम बा बिकात सुनी ए साहेब"

आजु के राजनीतिक आ प्रशासनिक बेवस्था पर चोट करत गजलगो जनजीवन के पीड़ा आ व्यवस्था से होत मोहभंग के बहुते साफ़गोई का संगे उकेरले बाड़ें। गजलगो कृष्णदेव 'घायल' जी बस शिकायते करत नइखे देखात बलुक समाज के चेतावे के कामो कर रहल बाड़ें।

गजलगो 'घायल' जी के एह कृति में गाँव के माटी आ प्रकृति के मोहक चित्रन के बखूबी उपस्थिति भेंटात बा।

"गँउवा के छोड़ जब से अइनी सहरिया
रहि रहि हियरा में उठेले लहरिया।"

एह गजल में गँवई जिनगी के आत्मीयता, हरियर खेत, सरसों के फूल, बंसुरी के तान आ माटी के सोन्ह सुगंध बहुते प्रभावशाली ढंग से उभरल बा। ई गजल घायल जी के ग्राम्य-संवेदना आ माटी से जुड़ाव के करीने से सोझा रखले बा।

राजनीति के दोमुहापने पर ठसक का संगे 'घायल' जी के एह गजल से उनुका तेवर उभर के सोझा आ रहल बा। ओह गजल के कुछ शेर देखे आ बिचारे जोग बा –

"बियाह कS के मेहरी छोड़ देहल कवन करम हS
ओसे नारी के कुछ भला होई राउर भरम हS

भादों में भूमि पूजन आ पितरपख में शिलान्यास
नई खोज भइल रहे प्रभु पुरान नया धरम हS

सुंदरीकरन के आड़े उजर गइल बसेरा गरीब के
रोजी रोजिगार छिन के कहात मोहतरम हS।"

'घायल' जी के गजलन में लोकभाषा के मिठास आ भावनात्मक गहराई एक संगे भेंटा रहल बा। ऊ कठिन सामाजिक सवालनो के सहज भोजपुरी लय में रखेलें। संग्रह के गजलन में लय आ भाव के संतुलन सराहनीय बा। कहीं-कहीं व्यंग्य बहुत

जनवादी झलक के बढ़त डेग ह - अंगुठा कटत हमार बा

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

धारदार हो गइल बा, जे पाठक के सोचला पर मजबूर कर रहल बाटे।

एह संग्रह के शीर्षक "दरद के सोन्हाई" अपने-आप में प्रतीकात्मक बा। गजलगो बतावत बाड़ें कि पीड़ा खाली दुखे ना देला, बलुक मनई के भीतरि के संवेदना के झकझोरे क समरथो राखेला। एह संग्रह के गजलन में जिनगी के कठोर सच्चाई के बीच मानवीयता आ प्रेम के बचावे के कोशिस खूब भइल बा।

बेगार शक सुबहा के हम कह सकत बानी कि "दरद के सोन्हाई" भोजपुरी साहित्य में जनवादी चेतना, समाज के पीर आ माटी से नेह के एगो मजगूत दस्तावेज ह। एकरे बादो ई गजल संग्रह कतना जबर बा, एकर निरनय करे के अधिकार पढ़निहार लोगन के होला, त ई काम हम ओहनी लोगिन पर छोड़ रहल बानी। हमरा बिसवास बा कि एह गजल संग्रह "दरद के सोन्हाई" के भोजपुरी साहित्य जगत के नेह जरूर भेंटाई। एही मंगलकामना का संगे गजलगो कृष्णदेव 'घायल' जी के अनघा बधाई आ शुभकामना।

पुस्तक- दरद के सोन्हाई'
रचनाकार – कृष्ण देव 'घायल'
विधा- गजल संग्रह
मूल्य- रु 180.00
प्रकाशन वर्ष -2023
प्रकाशन संस्थान – सर्वभाषा प्रकाशन , नई दिल्ली

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

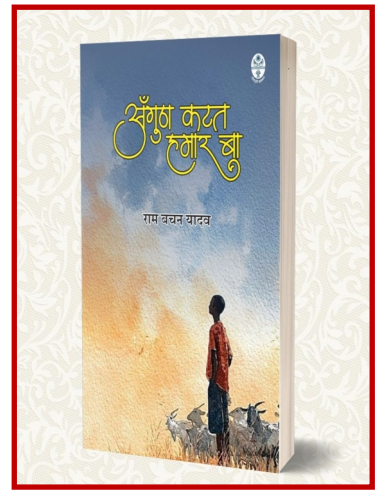

भोजपुरी साहित्य जगत में सभे ई मानेला कि जब केहु अपना मातृ भाषा में लेखनी चला रहल बा, त ओकरा के सनमान से देखे,पढ़े आ समुझे के चाही। ई केहु नइखे जानत कि ओकरा लेखनी क धार कब चोखगर होके अइसन सिरजना क देही, जवना के पढ़े खाति बेकल हो जाई लो। अइसने एगो नवही सृजन जतरा **'अंगुठा कटत हमार बा'** बा, जवना के आजु चरचा कइल जा रहल बा। पहिल बेर कवनो गैर सरकारी संस्था 'तथागत' भोजपुरी साहित्य के लेखक लोगन के पाण्डुलिपि प्रकाशन योजना से कुछ साहित्यकार लोगन के कृति के प्रकाशित करवलस , जवना खुले मन से सभे सोवागत कइलस ।ओही चयनित कृतियन में एगो कृति बा- **'अंगुठा कटत हमार बा'**, जवना के रचनाकार बानी डॉ राम बचन यादव जी। एगो सुपरिचित रचनाकर, जेकरे रचनाकर्म के चरचा उनुका छात्र जीवन से लगातार चल रहल बा। ई कविता संग्रह अपना भीतरी 67 गो मोतियन के संजोवले भोजपुरी साहित्य जगत के सोझा उपस्थित बा।

अंगुठा कटत हमार बा भोजपुरी कविता के एगो तेज, जनपक्षधर अउर प्रतिरोधी काव्य-संग्रह ह। एह कृति में कवि समाज के विसंगति, जाति-व्यवस्था, धार्मिक पाखंड, राजनीतिक छल, नारी-असमानता आ बहुजन पीड़ा के बहुत धारदार ढंग से उठवले बाड़ें। भाषा लोकजीवन से जुड़ल बा आ कविता में सीधा संवाद के ताकत बा।

कवि के सबसे बड़ खासियत ई बा कि ऊ बिना लाग-लपेट के हर व्यवस्था पर चोट करेलें। भले उ कवनो धरम से जुड़ल बाति होखे -

'सब मूरख -अंधा ह भाई
धरम कुछ ना धंधा ह भाई!

मंदिर मसजिद मठ गुरुद्वारा
गिरजाघर में पाँव पसारा

सब में बइठैं बजर कसाई
धरम कुछ ना धंधा ह भाई!'

एह कविता में धार्मिक पाखंड पर करारा प्रहार बा, जहाँ कवि

कहेलन कि धर्म के नाम पर समाज में नफरत आ शोषण फैलावल जा रहल बा। एह तरह "जात में जात इहां जतिए प्रधान बा" कविता भारतीय समाज में जातिगत विभाजन के गहिराई के उजागर कर रहल बा।

एह संग्रह के केंद्र में बहुजन चेतना साफ दिखाई दे रहल बाटे। "सौ में पचासी" आ "13 पाइंट रोस्टर" जइसन कवितन में सामाजिक न्याय, हिस्सेदारी आ अधिकार के सवाल मुखर रूप से उठावल गइल बा। कवि डॉ. आंबेडकर, फुले आ सामाजिक परिवर्तन के विचारधारा से प्रभावित जान पड़ेलन।

नारी-विमर्श एह कृति के एगो महत्वपूर्ण पक्ष बा। "नारी के ना कउनों पहचान", "करबे पढ़ाई पिया ना" आ "हो सके हमके बचाइला" जइसन कवितन में स्त्री के संघर्ष, शिक्षा के आकांक्षा आ बेटी-बचावे के संवेदना प्रभावशाली ढंग से उभर के सोझा आ रहल बा।

राजनीतिक व्यंग्य एह संग्रह के एगो दोसर आ खास पक्ष ह। "चौपट राजा", "मखमली जबान", "जै श्रीराम" आ "देस खतरे में बा" जइसन कवितन में सत्ता, मीडिया, बेरोजगारी, महँगाई आ सांप्रदायिक राजनीति पर तीखा व्यंग्य बा। कवि के भाषा में लोकधुन, कहावत, व्यंग्य आ प्रतिरोध के गजब मेझरवन बा।

भाषा के दिसाई ई कृति लोकभाषा भोजपुरी के ताकत के प्रमाण ह। कवि भोजपुरी के सहज, बोलचाल वाली शैली के इस्तेमाल कइले बाड़ें, जवन पाठक के सीधा जोड़ रहल बा। कविता में मंचीय प्रभावो खूब बा; कई रचना नारा, गीत आ जनआंदोलन के सुर लेखा लाग रहल बाड़ी।

कुछ जगह कवितन में वैचारिक आक्रोश अतना तीखर बा कि कलात्मक संतुलन थोड़ा कमजोर होत देखाई पड़ रहल बा। कतों-कतों नाराबाजी कविता पर भारी हो रहल बाटे। बाकिर एह से कृति के सामाजिक असर कम ना होखी।

हमरा ई कहे में जरिको अनेसा नइखे कि 'अंगुठा कटत हमार बा' भोजपुरी साहित्य में जनवादी चेतना, सामाजिक प्रतिरोध आ बहुजन विमर्श के मजबूत दस्तावेज ह। ई संग्रह खाली कविता ना, बल्कि समाज के पीड़ा, विद्रोह आ बदलाव के आकांक्षा के आवाज ह। एकरे बादो ई संग्रह कतना जबर बा, एकर निरनय करे के अधिकार पढ़निहार लोगन के होला, त ई काम हम ओहनी लोगिन पर छोड़ रहल बानी। हमरा बिसवास बा कि एह कविता संग्रह '**अंगुठा कटत हमार बा**'के भोजपुरी साहित्य जगत के नेह जरूर भेंटाई। एही मंगलकामना का संगे कवि डॉ राम बचन यादव जी के अनघा बधाई आ शुभकामना।

पुस्तक – अँगूठा कटत हमार बा
विधा- काव्य संग्रह
रचनाकार – डॉ राम बचन यादव
प्रकाशन वर्ष- 2026
प्रकाशन संस्थान – भोजपुरी प्रकाशन , नई दिल्ली

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

जब नेह का धागा टूटेला- सामाजिक यथार्थ पर एगो गहन दीठी

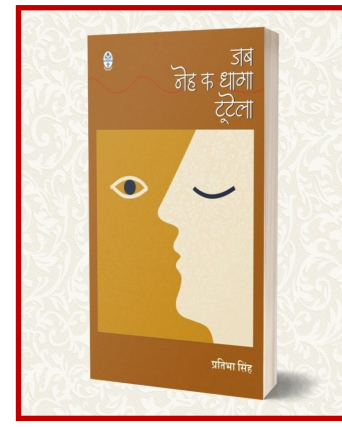

अपने माई भाषा भोजपुरी में आजु कहानी के सिरजना करे वाली महिला लेखिका लो अंगुरी पर गिने भर बाड़ी।सुयोग ई कि ई कहानी संग्रह गैर सरकारी संस्था 'तथागत', के पाण्डुलिपि प्रकाशन योजना से चयनित कुछ भोजपुरी साहित्यकार लोगन के कृतियन में से एगो बा। सन 2026 में संस्था 4 गो भोजपुरी के युवा साहित्यकार लोगन के पाण्डुलिपि चयनित क के प्रकाशीत करवालस। ओही चयनित कृतियन में से इहे एगो गद्य (कहानी संग्रह) कृति बा- 'जब नेह का धागा टूटेला', जवना के कथाकार बानी डॉ प्रतिभा सिंह जी। ई संग्रह अपना भितरी 10 गो कहानियन के समेटले बा।

जब नेह का धागा टूटेला भोजपुरी कथा-साहित्य के एगो संवेदनशील आ समाजिक यथार्थ से भरल कहानी-संग्रह ह। एह संग्रह में लेखिका गाँव-घर, औरत के पीड़ा, पारिवारिक संबंध, शिक्षा, प्रेम, विश्वासघात आ समाज के दोहरा मानदंड के बड़ा सहज भाषा में सामने ले के आइल बाड़ी।

संग्रह के मथेला कहानी "जब नेह क धागा टूटेला" खास तौर पर मन के झकझोर देवे वाली कहानी बा। एह कहानी में रीमा का माध्यम से औरत के भावनात्मक शोषण, पारिवारिक उपेक्षा आ पितृसत्तात्मक सोच के गहराई से देखावल गइल बा। कहानी एह बात के उजागर करि रहल बा कि समाज में गलती चाहे केहुओ के होखे, दोष अक्सरहाँ

मेहरारूये पर डाल दिहल जाला।

लेखिका प्रतिभा सिंह के भाषा बहुत सहज, बोलचाल वाली आ जीवंत बा। पढ़त घरी लागेला जइसे गाँव के कउनो टटका घटना आँख के सामने घटत होखे। पात्रन के संवाद बहुत सोभाविक बा, खासकर रीमा आ कथावाचिका के बातचीत, कहानी के भावनात्मक ऊँचाई तक ले के जा रहल बा।

एह संग्रह के एगो खास ताकत बा — समाजिक सवालन के उठावल। लेखिका औरत के शिक्षा, बेटा-बेटी में भेदभाव, विवाह संस्था, आर्थिक निर्भरता आ पारिवारिक स्वार्थ पर खुल के चोट कइले बानी। रीमा के संवाद — "कर्तव्य के बेरा बेटी, अधिकार के बेरा बेटा" — पूरा समाज के मानसिकता पर करारा व्यंग्य बा।

"संझा क सुरुज" जइसन कहानी में गुरु-शिष्य संबंध, अकेलापन आ बदलत पारिवारिक मूल्य के मार्मिक चित्रण बा। बूढ़ होत गुरुजी के जीवन, पत्नी आ बेटा के बिछोह, आ अकेलापन पाठक के भीतर तक छू रहल बा।

कुल मिला के, ई कहानी-संग्रह खाली मनोरंजने नइखे करत , बलुक समाज के आईना बन के सोझा आ रहल बाटे। आजु के समय में एह किताबि के महातिम एह बाति से बा कि ई भोजपुरी के मिठास बचावत आजु के समाज के सवालन के गंभीरता से उठा रहल बाटे। भाषा, भाव आ कथ्य — तीनों स्तर पर एह कृति के जबर पोथी कहे में हमरा इचिको हिचक नइखे।

सोझ आ सपाट भाषा में लिखाइल ई कहानी संग्रह कहानीकार के वैशिष्टता दे रहल बा। भाषा में कतो जबरी पांडित्य के देखावा नइखन। पढ़निहार लोग के जोड़ के राखे के तागतो बा आ सरल भाषा में बात राखे के सलीका जवन पहिल कहानी में लउकल उ अंतिम तक ले ओइसहीं बा। समसामयिक समस्यन पर कहानीकार के दिठी त बड़ले बा, ओकरा लेके आदर्शो स्थापित करे आ समाज के नीमन सनेस देवे क परयासो बा। आगु आवे वाला समय में कहानीकार डॉ प्रतिभा सिंह जी के लेखनी अउर चोंख होखी, एहुके उमेद ई कृति जगा रहल बा। भाषा से नेह-छोह आ ई सरलता डॉ प्रतिभा सिंह जी के असली तागत बनी, ई उमेद त बड़ले बा। भोजपुरी प्रकाशन आपन विशेषता बना के राखे में इहवों पिछुवाइल नइखे। पहिल कहानी संग्रह ला ढेर सारा बधाई आ अगिला के उमेद का संगे शुभकामना।

पुस्तक – जब नेह के धागा टूटेला
विधा –कहानी संग्रह
कहानीकार-डॉ प्रतिभा सिंह
मूल्य- रु 225/- मात्र
प्रकाशन वर्ष – 2026
प्रकाशन- भोजपुरी प्रकाशन, नई दिल्ली

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

चुभे लागल बरगद के छाँव के बहाने से जनसरोकार के बात

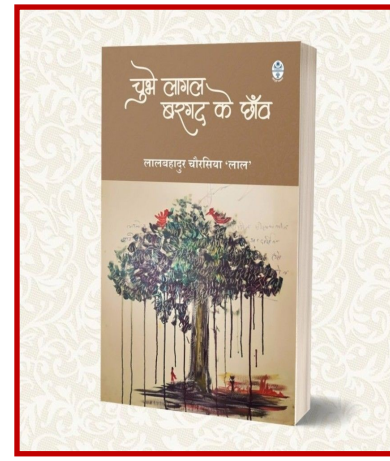

भोजपुरी भाषा आ ओकरे साहित्य पर अक्सरहाँ अंगुरी के उठल कवनो नई बात नइखे । अइसना में ओह उठ रहल अँगुरियन के जबाव बनिके जब कवनो किताब सभका सोझा आवेलीं सन,त ओकरा से सहज में नेह-छोह जुड़िये जाला। मन-बेमन से कुछ लोग सोवागत करेला, ढेर लोग ओहसे दूरी बनावे के कोसिसो करत भेंटाला। भोजपुरी भाषा के किताबन के संगे घटे वाली अइसन घटना के सामान्य घटना मानल जाला। अँगुरी उठावे वाला लोग अफनाये लागेलन। उनुकर उठलकी अँगुरिया ढेर-थोर पीसात बुझाये लागेले।पहिल बेर कवनो गैर सरकारी संस्था 'तथागत' भोजपुरी साहित्य के लेखक लोगन के पाण्डुलिपि प्रकाशन योजना से कुछ साहित्यकार लोगन के कृति के प्रकाशित करवलस , जवना खुले मन से सभे सोवागत कइलस ।ओही चयनित कृतियन में एगो कृति बा- **'चुभे लागल बरगद के छाँव'** , जवना के रचनाकार बानी लालबहादुर चौरसिया 'लाल' जी। एगो सुपरिचित रचनाकर, जेकर रचनाकर्म के दसकन से खूब नीमन से सराहल जा रहल बा।

भोजपुरी गीत-संग्रह **चुभे लागल बरगद के छाँव** गँवई जिनगी , समाज में पइसल विसंगतियन पर जहवाँ ठसक का संगे प्रहार करे में ना चुकत नइखे देखात आ संगही मानवीय संबंधन अउर लोक-संवेदना के जीवंत दस्तावेज़ लेखा भोजपुरी साहित्य जगत के सोझा आपन

उपस्थिती दर्ज करा रहल बा। कवि लोकभाषा के सहजता अउर जनजीवन के पीर के बहुते सझुरा के सोझा रखले बाड़ें।

एह कृति के सबसे लमहर विशेषता एकर **लोक में पइसाँव** हवे। गीतन में गाँव, किसान, गरीबी, चुनावी राजनीति, सामाजिक विडंबना, पारिवारिक संबंध अउर बदलत समय के चिंता बेर-बेर उभर के सोझा आ रहल बा। जइसे "**हम रटत-रटत खोइया भइलीं** " में टूटल सड़क अउर विकास के थोथा दावन पर चोखगर व्यंग्य बा, उहें "कुल इस्कुलवा बंद करावा" में व्यवस्था पर जबर कचोट करत गीतकार देखात बाड़े।

गीतन के भाषा अपने लोक के भाषा ह, जवन अपनइत से भरल-पूरल बाटे। गीतन में मुहावरन के परयोग जीवंत बना रहल बा। गँवई बिम्ब अउर बात-बतकही के शब्द ओहमें चार चाँद लगा रहल बा। गीतकार "बचपन याद आवेलS" आ "बचपनवाँ" जइसन रचनन से लइकइयाँ के इयाद ताजा करा रहल बाड़ें। राजनीतिक अउर सामाजिक चेतनो एह संग्रह के एगो जबर पक्ष बाटे। "फिर परधानी आइल बा" आ "महापरब कै बजल नगारा" जइसन गीत चुनावी राजनीति के विडंबना आ अवसरवाद पर तीखर ब्यंग्य कर रहल बा।

एकरा इतर गीतकार प्रेम, करुणा आ मनई समाज के रिस्ता -नाता पर आपन कलम चलवले बाड़े। "नेह बाँटत रहा", "कठिन काम बा" आ "एगो चंदा बा उतरल" जइसन रचना पढ़निहार लोग के भावुक बना देवे क दम रखले बा।

ई गीत संग्रह भोजपुरी लोकजीवन के माटी से जुड़ल संवेदनशील आ जनपक्षधर गीतन के बड़हर आ मजगर उदाहरण बाटे। एहमें लोकभाषा के मिठास आ गरमाहट एक्के संगे भेंटात बाटे।

ई संग्रह अपना भितरी ढेर कुछ समेटले बा, जवन पढनिहार लो खातिर संस्कृति, संस्कार,प्रकृति से नेह-छोह के संगही जन सरोकार के बात-बतकही आ चिंता के अनुभूति से भेंट करावे में इचिको संकोच ना करी। ई परयास सुकवि लाल बहादुर चौरसिया 'लाल' के सराहे जोग बनि पड़ल बा। तबो ई संग्रह कतना जबर बा, एकर निरनय करे के अधिकार पढ़निहार लोगन के होला, त ई काम हम ओहनी लोगिन पर छोड़ रहल बानी। हमरा बिसवास बा कि एह संग्रह '**चुभे लागल बरगद के छाँव**' के भोजपुरी साहित्य जगत के नेह जरूर भेंटाई। एही मंगलकामना का संगे रचनाकार लाल बहादुर चौरसिया 'लाल' के अनघा बधाई आ शुभकामना।

पुस्तक-चुभे लागल बरगद के छाँव
विधा-गीत संग्रह
रचनाकार- लाल बहादुर चौरसिया 'लाल'
मूल्य- रु 210.00
प्रकाशन वर्ष-2026
प्रकाशन संस्थान – भोजपुरी प्रकाशन , नई दिल्ली

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

अभिषेक पाण्डेय

समाज के पतझड़ में बसंती उमेद के दीया: ललमुनिया

आकृति विज्ञा 'अर्पण गोरखपुर के रहनिहार बाड़ी। हिन्दी, भोजपुरी आ अंग्रेजी में इनकर सक्रिय लेखन, साक्षात्कार आ संचालन इनकर विशेषता बा। वनस्पति शास्त्र में एम एस सी, पीएचडी के अलावा आकृति भोजपुरी में स्नातकोत्तर में स्वर्ण पदक भी प्राप्त कईले बाड़ी। साहित्य में गद्य आ पद्य दूनों में आकृति के वैविध्यपूर्ण आ अर्थपूर्ण सक्रियता अदामकिक आ मंच दूनों क्षेत्र में सराहल जाला। विश्वविद्यालयन से लेके लिटरेचर फेस्टिवल तक कुल कबो कवि,कबो सूत्रधार त कबो संचालन खातिर आकृति के सुख्यात स्वीकार्यता बा। हजार से ढेर वैज्ञानिक, अकादमिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक कार्यक्रमन में इनकर सक्रिय भूमिका रहल बा। मैथिली भोजपुरी अकादमी से प्रतिष्ठित कार्यक्रमन आ पत्रिका तक में सुखद सक्रियता मन के तोष देले। लोक के प्रति नवोन्मुखी चेतना के क्रम में एगो महत्वपूर्ण नाम जेकर बहुआयामी व्यक्तित्व आ विविध विधा पर पकड़ लगातार कवि, लेखक के रूप में पढ़े आ सुघर ,सधल वक्ता के रूप सुने में आवत बा , जे खुदे लोकगीत, बसन्ती आ ललमुनिया नीयन बा अइसन आकृति के पहिलकी किताब ललमुनिया हाथ में लेके गजब संतोष मिलल। परंपरा के बोध आ समकालीनता के समझ आकृति के बड़वर विशेषता बा। जब ई सोचीले कि ऊ बाटनी में पीएचडी आ भोजपुरी में स्नातकोत्तर के गोल्ड मेडलिस्ट बाड़ी त मन आनंद से भर जला। ललमुनिया के भूमिका पढ़के आपन पुरनिया लो के प्रति मन कृतज्ञता से भर जाला। उनकर कृति "लोकगीत सी लड़की" होंगे चाहे "सुनो बसंती" दूनों में ऊ पुरखन के आपन मन सोंपेली। ललमुनिया एगो विविधता से

भरलि अइसन किताब बा जवन आज के ज़रूरत बा। बुझौनी,कहावत आ कहमुकरी के माध्यम से आकृति साहित्य के संरक्षण करत बाड़ी त ओहीं बियाह,गवन,जनेऊ, मुड़न,सोहर,खेलौना आदि लिखके परंपरा के टीका करत बाड़ी। सोहर आ बेटी खातिर, कजरी प्रकृति खातिर त कटनी,रोपनी किसान समाज खातिर रचत के आकृति समकालीनता के नया विमर्श खड़ा करत बाड़ी। कंपटीशन के बच्चा खातिर,लड़का लो खातिर बात करत के आकृति के दूरदर्शिता मन मोहत बा। "पढ़ ललमुनिया" त गदर मचा देले बा। पीड़ा,बोध, संस्कृति आ ज़िम्मेदारी के एकरूप करके आकृति सृजन के अमर क देले बाड़ी। सवैया, दोहा, चैती बरखा आ भोजपुरिया कविता समाज के अपना भीतर झांके पर मजबूर करेला। दूसरी तरफ़ टेराकोटा, सिउटर,कुस्मी, रामगढ़ ताल कविता सब से आकृति भोजपुरी में नयी कविता के प्रतिनिधि के रूप में भी देखल जा सकेली। अपने क्षेत्र के सौंदर्य के आकृति इयाद रखत बाड़ी ई बहुत महत्वपूर्ण बाति बा।

जहां जतसार में ऊ पारिवारिक ताना बाना के महत्व बतावत बाड़ी , ओहीं घाघरा में आँखिन लोर ला देत बाड़ी। गुमान,उत्थान,उत्सव ,दुख, किसानी, सर्जना, प्रश्न,चेतना, परंपरा, समकालीनता, प्रकृति,कविता, क्राफ्ट, प्रयोग आ विविधता सब में आकृति सशक्त हस्तक्षेप एह किताब के अद्वितीय बनावत बा।सूनापन आ लय त लघुकविता के मानदंड के चंदन करत बा त ओहीं मजदूर आ राजनीति समय के कड़वापन पर चोट।उनकर छठ गीत से उनकर समझ आ वैज्ञानिकता त निर्गुण से उनकर अध्यात्मिकता के ठोस समझ पता चलत बा। जिनगिया ग़ज़ल उनकर आब्जर्वेशन आ कविताई के साथ विधावार समझ बतावेले।विरह आ काजरगीत से उनकर सामाजिक समझ आ मर्म पर पकड़ पता चलता बा। चुहल से कब गंभीरता आ आँख के लोर आकृति धरा देली पते न चलेला।

कहल जा सकेला कि लोकगीत अस जीवन गावत ललमुनिया समाज के पतझड़ में भी बसंती उम्मीद क दीया जरावतिया। कहाँ झूली मोर काली माई? जस सवाल अपने आप में अद्वितीय बा, जवन आपके डाक्टर आकृति के मुरीद बना दी।हर घर में अस समझ वाली बेटी होखे त के हूं जीवन, संबंध आ विचार के विस्तार के नजरा न पाई।

पुस्तक-ललमुनिया
विधा-गीत संग्रह
रचनाकार– आकृति विज्ञा अर्पण
मूल्य- रु 210.00
प्रकाशन वर्ष-2026
प्रकाशन संस्थान – भोजपुरी प्रकाशन , नई दिल्ली

❑❑

❍ **गोरखपुर,उ0 प्र0**

अनिल पांडेय अकेला

ए भंते जी

ए भंते जी बुद्ध के समझल, बहुते गहिरा मरम हो गइल।
के कहलसि की पीपर तूरऽ,ई कहिया ले धरम हो गइल।।

अनहद भा अद्वैत बतावल,का केहू बऊरइला में,
पतई पतई देव बतवलस ,का केहू अंघुअइला में,
चललऽ ढोंग मेटावे बाकिर,
तोहरे बड़का भरम हो गइल।।

दीया बरल जे पहिला इहवाँ, ऊ चरबी भा घीव जरल,
का तोहरा बुद्धि प साँचो, कई गोबरहिया घूर परल,
बुद्ध के माने वाला काहें, अतना बड़ बेसरम हो गइल।।

धीर रहे ऊ बुद्ध कहाइल, जे चिचियाइल बौद्ध भइल,
मौन रहे वाला के काहें,बोलऽअतना क्रोध भइल,
नरम गुरु के चेला कइसे,टीना जइसन गरम हो गइल।।

मूर्ति पूजा के घोर नकारल,आपन पहिचान मेटा दिहलस,
अनुयायी ओकरे ओकरा के, छत्रप आज बना दिहलस,
बुद्ध के मूर्ति अइसे लउके, जइसे सगरे बरम हो गइल।
के कहलसि की पीपर तूरऽ, ई कहिया ले धरम हो गइल।।

❑❑

❍ **कैमूर , बिहार**

पौरुष क पुनर्जन्म

दिवाकर प्रसाद तिवारी

बाबा खेतबारी गाइ गोरू देखत संभारत जिनिगी काटि लिहलें। आटा पिसावे खातिर बाबू रामबली सिंह के मशीने पर अनाजे क भारी मोटरी कपारे पर लादि के ले जात क एक बेर गर्दन टेढ़ भयिल त कब्बो सोझ ना भयिल। ऊ टेढ़ुआइले रहि गयिल। बाबा एक ओर मूड़ी झुकवल ही चलें। उनके मुअला की बाद उनकर बेटा नाती लोग खातिर खेती गिरहत्ती क कार दूलम हो गयिल। बलेसर उनकर इकलौता बेटा रहलें। ऊ देही से पोढ़ पहलवान रहलें। कुश्ती लड़े खातिर लामे लामे जां, बाकिर बाप की मुअला की बाद कुश्ती क सवख मद्धिम परि गयिल आ गिरहत्ती संभरले क चिंता फिकिर ताल ठोकि के खाड़ हो गयिल। ऊ आगे बढ़ि के वरासत क जिम्मेवारी कस क थामि लिहलें।

बलेसर कड़क जरत घाम में माथे पर गमछा धयिले खेत की मेंड़ पर खड़ा हो के ऊंखी में पानी चलवावत रहलें बाकिर रहि रहि के अपनी बाबूजी के दुख का बारे में सोचे लागें। आंखि से लोर चुवे त गमछा से पोछि लें। लग्गे क आपन बारी बाबुये जी के रहते कटि गयिल रहे। ओसे जवन रोपया मिलल ऊ पक्का घर बनववले में खर्च हो गयिल रहे।बाबूजी क कहनाम रहे कि पट्टिदार लोग क घर पक्का हो गयिल त ऊनहू क घर पक्का बन जाये के चाहीं। ओने का ओर तकले पर बलेसर के बुझाइल कि उनकी खानदान में अब कुछु सत्त नयिखे बचल। उनकर दू बेटा दू ओर। जेठका जवने क नाव रमेसर रहल, बी ए क इम्तिहान दे के आसाम भागि के पाने क दोकानि क लिहलसि। तीनिये बरिस में दोकानी क धन्धा चटकि गयिल। छोटका जवने क नाव जलेसर रहे, इण्टर पास क के घर गिरहत्ती में रहि गयिल। दूनू जने क बिआह बाबा की जियते हो गयिल रहल काहें कि बाबा क साध रहे कि ऊ नातिन क बिआह देखि के मरें। बलेसर की दू जने लयिकी लोग क बिआह पहिलहीं हो गयिल रहे त ऊ लोग ससुरैतिन हो गयिल।

बलेसर क परान खेतिये में बसे। ऊ चाहें कि कठमन गल्ला गीरो। रोज जबले कुलि खेत ना घुरिया लें उनुके चैन ना परे। छोटका बेटा जलेसर कबो खेत्ते जां कबो खा पी के एन्ने ओन्ने घूमे लागें त घूमते रहि जां। बिआह भयिले छ सात बरिस बीति गयिल रहे। एक दिन बलेसर क खीसि ना खेपाइल त धरी धरा हो गयिल--

बलेसर --- 'करबे ना त खयिबे का रे ससुरा?खाली घूमे के बा आ मेहरारू की लग्गे सुत्ते के बा! तोर तीन तीन गो खवयिआ हो गयिलें!

जलेसर ---जबान संभारि के बोलअ। तू हमार भागिविधाता ना हव। जे मूंह चीरले बा ऊ खनवो देई।'

बलेसर --- जो मूंह चीरे वाला के बोलाउ ना त आजुये घर छोड़ि दे।'

जलेसर --- 'ना छोड़ब, घर तोहरी बाप क ह त हमरियो बाप क ह। हमरो हिस्सा बा।'

बलेसर आपे से बाहर होके जलेसर क बांहि पकरि के थपरा चलावे चललें। जलेसरा उनकर हाथ ध लिहलसि। लोग जुटि गयिल। समझा बुझा के फरके कइल लोग।

बलेसर क तीनों चक मिला के दस बिगहा क रकबा रहल। तीनों चक मटियार माटी क उपजाऊं गादि रहलें। खरीफ में धान के रोपाई खातिर लेव लगवले क तयियारी रहे। टीसि की मारे बड़का चक में बगलगीर पट्टीदार राति खा दू जगह मेंड़ काटि के लुका गयिल रहलें, सगरी पानी खेत्ते की बहरा आन की खेत्ते में बहे लागल त भोर होत होत बलेसर के पता चलि गयिल।ऊ मारे रीसिन फरसा ले के पटिदारे के खोजे लगलें। गाँव में हल्ला मचि गयिल। बलेसर आजु मनिहें ना। फौदारी हो के रही। लोग कवनो तरे जापत सापत करावल।

लड़ाई झगरा करत,खेतबारी संभारत, बलेसर बूढ़ा गयिलें। बड़का बेटा असाम से साल में एक बेर गांवे

आवे त अपनी लोग लयिका में अझुरा जा। ओकरी लग्गे मंहगा मोबाइल फोन रहल। मेहरी लयिका की साथे ऊ ओही में ना जने का देखे, का सूने। बलेसर आंखि तरेरें त खेत्ते का ओर भागि जा। समय अपनी गति से बीतत चलि गयिल। बलेसर क बार पाकि गयिल, नीचे ऊपर क आधा दांत टूटि गयिलें सन्। कर्हिआंइ बत्थे लागलि। आहि माई, आहि बाप क के उठें बयिठें। दूनू बेटा आ पतोहि कहे लागल लोग कि 'ए काका! अब खेतबारी क फिकिर छोड़अ, भगवान् क नाव जपअ, कुलि कार धन्धा हमनी क संभारि लिहल जाई।' बलेसर की आंखि की समने अन्हार हो गयिल। ऊ मन मारि के चुपा गयिलें। जांगर थकि गयिल रहे। करें त का? उनकर मलकिन सुरसती की आंखिन में मोतियाबिंद हो गयिल। चूल्हा फूंकत फूंकत रोवे लागें। छोटकी पतोह कबो पेट से होखे त कब्बो अउरी बेमारी क बहन्ना बना के महिन्ना में पनरह बीस दिन पटाइले रहे। बलेसर दउरि धूपि के सुरसती खातिर खर बिरउवा दवाई ले आ के खिआवें। एतना पयिसा रहबे ना करे कि असपताले ले जाके नीम्मन से दवाई करावें।गल्ला बेंचले से जवन आमदनी होखे ऊ खाद पानी नून तेल नेवता हंकारी कयिलही में ओरा जा। मलकिन क आंखि खराब हो गयिली सन उनके साफ साफ लउकबे ना करे। चलत क एन्ने ओन्ने ढहि परें।

छोटका की मान क खेती त रहे ना। मेहरारू की सिखवला पर खेत बंटाई देबे लागल। बलेसर के पता चले त दांत पीसि के मारे चलें बाकिर अपनिये हांफे लागें। निखिद्दिन गारी गुप्ता दे के पटा जां। बलेसर के अचलस्त भयिले क फायदा गाँव जवार क चोर चाई उठावे लगलें। दुशमन लोग लहका के मजा लेबे लागल। छोटका एतना डरपोंकना रहे कि डर की मारे रातिबिराति खेत देखे जयिबे ना करे। बजर पड़ो त पड़ो। एक राति खां परिकल सांढ़ आ नीलगाय मिलि के बड़का चक क खड़ी फसिल (गोजई आ केराइ) चरि लिहलें। बलेसर सुनलें त भहरा के गिरि परलें , फेरु ना उठलें। मलकिन कवनो तरे गोड़ घिसिरावत जीयत रहली। बलेसर उनकर सबसे भारी अलम रहलें। अब ऊ अकेल परि गयिली। दू महिन्ना कवनो तरे जियली। एक दिन सुनली कि दुसरका चक क बंटाईदार कुलि गल्ला चोरा के ध घरलसि आ कहि दिहलसि कि कुलि खेत मारि गयिल रहल, कुछ भयिबे ना कयिल, एसे खेत उलटवा दिहलीं हां। मलकिन चरपाई ध लिहली आ दसे दिन में झूलि गयिली। सांस उलटा चले लागल। पड़ोसिन लोग जुटल। । सिद्धा पिसान छुवावल गयिल। हाली हाली मूंहे में गंगा जल आ तुलसी दल डालल गयिल। ऊ सरगे चलि गयिली।

माई सुरसती क काम किरिया करे खातिर रमेसर गांवे अइलें। घर गिरहत्ती खेत बारी क कुलि हालचाल सुनला की बाद उनकी देंही में आगि लागि गयिल।उनुके बुझाये लागल कि दबि के रहले से जजाति खेतबारी इज्जत ना बची। उनकर पौरुष जागे लागल। काम किरिया बीतले पर अपनी ससुरारी से दू गो बदमाशन के बोलवा के साथे लिहलें, हाथे में लउर लिहलें। बदमशवन में से एगो की कान्हें में बंदूकि रहल, तीनों जने बंटाईदार क घर घेरि लिहल लोग। पाछे से छोटको पहुंचि गयिल। बंटाईदार थर थर कांपे लागल, ओकरी घर क बेकति फेकरे लगली। रमेसर डांटि के कहलें -- शुद्धे शुद्धे बताउ कि गल्ला केतना भयिल आ कंहवा बा?' हाली हाली गल्ला निकारि के बांटल गयिल। मलिकार रमेसर की हिस्सा में बारह कुन्तल गल्ला मिलल। बंटाईदार के दस बीस तमाचा मारि के छोड़ि दिहल गयिल। पड़ोसिहा जूटि के छोड़ा दिहलें। गाँव में पछुवा बेयारि में आगि लेखा ई बाति फयिल गयिल। कइ जने रमेसर की दुआर पर आ के चपलूसी बतिआवे लगलें। ओमे एक दू जने क एइसन दवाई जो बलेसर के जीयते भयिल रहति त आजु ई दिन देखे के ना परित।

घर की भीतरी से बड़का छोटका क मेहरारू लयिका दलानी में आ के दुआरे क बतकही सूने लगलें। ऊ सोचे लागल लोग कि ईहे लोगवा काल्हि ले हमनी के इज्जत के कवनो खयाल ना कयिल लोग आ आजु कवने तरे बदलि गयिल लोग। ईहे सन्सार हा।' एतने में का जाने कयिसे छोटका की मन में एगो लहर उठल। ऊ रोवे लागल। लोग चिहा गयिल। रोवते रोवत ऊ कहे लागल -- 'आजु काका रहितें त केतना खुश भयिल रहतें कि हमार लयिका गयिल इज्जत लवटा ले अयिलन सन। ऊ रमेसर

भइया से हाथ जोरि के मांफी मंगलसि--भयिया! जवन भयिल तवन भयिल। हमनी के अब चटकन लागि गयिल। अब कुछू ना बिलाये पाई। हमरा पर भरोसा राखअ। तू असाम जा, हम सगरी खेतबारी संभारब। बयेल बूढा गयिल बांड़ें। गाइ मरि गयिलि। बैंके से लोन लेके भा दू चार कट्ठा कत्तो बेचि के टरट्टर आ एगो लगहर लिया जाउ। रमेसर जवाब दिहलें--देखअ भाई लोग, एकरी खोपड़ी क दू चूड़ी कत्तो ढील बा। काहे के खेत बिकाई रे सारे? हम त बटले बानी,सब इन्तजाम क नु देब। घबड़ो जनि।' लोग बड़कू के हां में हां मिलावल। पड़ोस क बलिराजी ईया बतवली कि बलेसर बो क बड़ा मन रहे कि बड़का नाती पढ़ लिख के इंजीनियर होखे। ए बड़कू तोहार बेटा पढ़ले में तेज बा, ओके खूबे पढ़ा के इंजीनियर बना दीह। तोहार माई सरगे में बड़ा खुश होइहें।

आज बलेसर क खेती गाँव में सबसे टाप पर बा। जुताई टरट्टर से होले। तीनों चक में बोरिग हो गयिल बा। दुआरे पर एगो देसी आ एगो जर्सी गाइ बिया। बड़कू क लयिका इंजीनियर हो गयिल बा बाकिर छोटकू क लयिका गिरहतिये संभारत बा। अलबत्ता लयिकी इण्टर कालेज में प्रवक्ता हो गयिलि बा। गांव में जे बलेसर के परिवार क पहिले मजाक उड़ावे ऊ लोग अब अनमनाहे कहेला -- 'सबेरे क भुलाइल सांझि ले लवटि आवे तो ओ के भुलाइल ना कहल जाला।'

❑❑

❍ देवरिया , उ0 प्र0

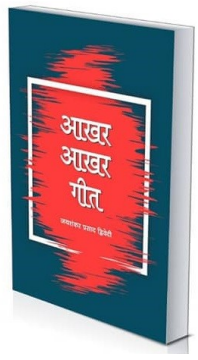

तारकेश्वर मिश्र 'राही'

एगो रोटी बदे

'सगरी जिनगिये बेकार हो एगो गइल
एगो रोटी बदे बचवन में मार हो गइल।

कवनी धीरिजवा से जिनगी बिताई
कवनी कमइया पर असरा लगाई,
जंगरा पेरत इ उमिरिया बितवली
केतना बिपत सहिके लरिका जियवली
पेटवे भरलका पहार हो गइल।
एगो...

जड़वा क रतिया मों कइसे बिताई
कइसे निखहरे मों लरिका सुताई,
उखिया की रसवा पर दिन बीति गइले
घुमते फिरत में सुरूज डूबि गइले,
खरची खोजत में अन्हार हो गइल।
एगो...

झंख मारि रतिया में भइलें उपसवा,
कांपेले ललन जब सिहिके बतसवा
पुअरा पहलिया पर सबके सुतवली
लरिकन के माई उपरां अंचरा ओढ़वली
तोपें मुंहवा त गोड़वा उघार हो गइल।
एगो...

चिहुकि-चिहुकि उठें जाड़ा से ललनवा
दुख ना सहाय बालुक निकसित परनवां
सुनालां की देश में सुराज होई गइले
घरवा के चोर अंगरेज नांही गइलें
देश के आजादी सिर पर भार हो गइल।
एगो रोटी...'

❑❑

❍ गोरखपुर,उ0 प्र0

कनक किशोर के चार गो कविता

कनक किशोर

भोर

ना महकल जिनिगी के रहिया
ना देखनीं हम भोर
राति कटनीं भोर के आस में
कहाँ भेंटाइल भोर
आँखि से टपकत खून साथी
जनि बूझऽ तू लोर

सभे बांटे गारंटी मुँह से
ना बांटे रोजगार
वादा के भरमार बा सगरी
वोट बनल बेपार
जे जीती उहे लूट मचाई
बिनु मचवले शोर

राजा-रंक के बीच बढ़ल
आपस के बा खाई
संत -सत्ता -कारपोरेट के
खेल समझ ना आई
का गाईं कजरी आ झूमर
टुभके भीतर मोर

चाटत बा दीमक के जइसन
देश के भीतर भीतर
कवना के हम कहीं सुघर बा
सबके एके चरितर
सभ लूटत बा हमरे हिस्सा
हम सबसे कमजोर

रोटी लागे चान के टुकड़ा
घरे अमावस बइठल
मेहरी लुगरी साड़ी पेन्हले
पेट भूख से सुटकल
ना सूखल आँखिन लोरवा
सपने रह गइल भोर।

रोजगार

दंगा के आग में
रोटी सेंके वाला जमात
हम ना

ना हमरा बाबरी मस्जिद
ना राम मंदिर से
कुछ लेवे के बा

ना तोहार
राजनीति से

हँ! रोटी खातिर
रोजगार
अपना आ परिवार खातिर
जरूरत बा

ओह रोजगार के
दंगा आ राजनीति खेल में
जनि जारऽ

दंगाई

ना ऊ मुसलमान होखे
ना हिन्दू
दंगाई के जाति
आ धर्म ना होखे

उन्हिन के दरिंदों कहल
दरिंदों के
अपमान होई।

बदलाव

राम भक्त भुलाइल जा ताड़े
गीता - पाठ
मौलाना भुलाइल जात बाड़े
कुरान - गीत

इस्लाम के मूल अर्थ
शान्तिप्रियता
हिन्दूत्व के ज्ञान सार
समता - समरसता
लोप हो रहल बा
देश से

मजहब आ धर्म के अर्थ
छेनी से वार करि
तूड़ल जा रहल बा,
बदलल जा रहल बा
पार्टी के अलिखित
संविधान के अनुरूप

मानवता के धरातल पर
खड़ा पुलिया के
तोड़ के।

नइखे सुनात कहीं
प्रेम गीत।
❑❑

❍ राँची झारखंड

खून से बढ़हन रिश्ता

डॉ रजनी रंजन

अलगु काका जादोपुर गाँव के प्रतिष्ठित आदमी रहलें।चार गो बेटा के साथ जिनिगी के जीअत रहलें। पत्नी अचानक एकदिन साथ छोड़ के चल गइली।कारण भा उनकर गइल अलगु काका के खूबे साले। बाकिर केकरा से कहस।

पत्नी से कइल वादा के निभावे खातिर एक एक करके चारो लइकन के शहर पढ़े खातिर भेज दिहलन।बाचल साथे गोतिया भाई के दस बरीस मनोहर, जेकर जमीन जायदाद ओकर पीतिया लोग लेके ओकरा के चिन्हे से भी इनकार कर देहलन।ओह। घरी अलगु काका ओकर बाप बनले आ ओकरा के अपना घरे ले अइलन। तबे से दुनु जन एक दुसरा के खूब खयाल रखस।

धीरे धीरे समय बीतत रहे।मनोहर घरहीं रहके पढ़ाई कइलन आ गाँवे में आपन जीविका खोज लिहले।

एने अलगु काका के चारो लइकन के सरकारी नोकरी हो गइल। उ सब कबो कबो घरे आवत रहले। अपना पसंद के शहरी लइकिन से बारी बारी से बिआह करके शहर में ही गृहस्थी बसा लिहले।

एने अलगु काका मनोहर के बिआह भी बगल गाँव के सुघड़ लइकी के देख के कर दिहले।

सभकर जीवन बढ़िया से बीतत रहे।बेटा पतोह साल दु साल पर आवे लोग बाकिर सब दारोमदार मनोहर बो पर छोड़ के दु चार दिन बीता के लौट जात रहले।जवन घरी मनोहर बो पेट से रहली।कय बार निहोरा कइला पर भी कवनो बहुरिया ना अइली बलुक ओकरा बाद से आवले छोड़ दिहली।

समय के साथ सभ शांत हो गइल रहे।शहर वाला शहर में मस्त आ गाँव वाला गाँव में।

एक दिन मनोहर बाबूजी से कहलें- राउर पोता पोती दुनो बी डी ओ के फार्म भरे के चाहतारेंऽ।आ आज काल आनलाइन एकर कोर्स होता उहे एके साथ करिहें। का कहतानी? अलगु काका कहलन- पढ़ल लिखल जरूरी बा।बाकिर उनकर मन करुआ गइल।आपन बच्चा लोग के इयाद आ गइल। मनोहर आ कनिया के बेवहार उनकर मन पसीजा देले रहे एही से कहलन-तुरंत हँऽ कह द।

घरहीं से फार्म भरके नैना आ दरशन वीडीओ के परीक्षा दिहलन आ पास भी हो गइलन।अब इहाँ एगो समस्या आ खड़ा भइल।आवासीय सर्टिफिकेट माँगत रहे।

बिना जमीन के आवासीय सर्टिफिकेट कइसे बनी। मनोहर अपना चाचा लोग से खूब निहोरा कइले बाकिर उ लोग कागज ना दिहलन आ बिना कागज के कागजात कइसे बनो? हार के मनोहर चुप बइठ गइले। एने अलगु काका अपना मनोहर के परेशानी में देख के खुदहीं बेचैन रहलें। एक दिन मनोहर के बोला के पूछलन- कागज चेकिंग कब होई। मनोहर कहले - होई त तीन दिन बाद। बाकिर उहाँ के डी सी आफिस में छोटका भइया बारन।ऊ त साफे मना कर दिहले।कहलन तोर जमीन हइये नइखे त माथा काहे फोड़त बाड़े। अलगु काका बुझ गइले कि उनकर छोटका बेटा जान गइल बा त उ त अइसहूँ अडंगा लगाई।

भोरे भोरे अलगु काका मनोहर के कनिया से कहके गइले कि साँझ ले अइहें। कनिया उनकर पोटली बाँध दिहली। मनोहर के जब पता चलल तऽ पुछलन कि कहाँ गइल बारन बाकिर स्पष्ट पता के बिना चिंतित हो गइलन आ कनिया के दुगो बात सुना देहलन।

सांझ के जब काका अइलन त पूछला पर कुछ ना कहलन।

मनोहर अलगु काका से ज्यादा ना बोलत रहलन एही से जबाब ना मिलला पर भी चुप रह गइलन। दु दिन बाद अलगु काका मनोहर के कहलन कि - एगो गाड़ी करऽ। हम बारह बजे ले आवत बानी।मनोहर गाड़ी बुक कर देहलन। ठीक साढ़े एगारह बजे अलगु काका लौट अइलन। नैन आ दरशन के आवाज लगइलन- दुनो के आवते हाथ में कागज धऽ देहलन आ कहलन पूछे खातिर ढेर समय बा। गाड़ी आवते होई।जा तइयार हो जा लोग।

नैना बाबा के अँकवार में भर लिहली तऽ दरशन बाबा के गोर पकड़ लेहलन।

जल्दी जल्दी तइयार होके ई लोग बहरी आइल तब तक गाड़ी भी आ गइल रहे।

मनोहर अलगु काका के कुछ ना कहलन बस लइकन सभ के साथे चल देहलन।

डीसी ऑफिस पहुंच के देखतारन कि काउंसलिंग के काम अलगु काका के छोटका बेटा करत बाड़न। पहिले तऽ सकपकइले बाकिर बाद में हिम्मत करके आगे गइलन। आवश्यक कागज देखावत घरी मनोहर के हाथ में आवासीय सर्टिफिकेट देख के झटका लागल।झट से कहलन-पक्का इ फर्जी होई। एकरा लगे कुछुओ नईखे।इ आवासीय कइसे बनवले? मनोहर शांत भाव से कहलन- असली बा।चेक कर लीं ही।हँ हँऽ ....उ तऽ करबे करब।

आनलाइन चेक करते उनकर बुद्धि हेरा गइल।मौजा खसरा एके रहे बाकिर अलगु काका के नाम के साथे पाँच बेटा के बीच जमीन बिभाजन लउकत रहे। पाँचवाँ बेटा मनोहर रहलन।

मनोहर ई देखके अचंभित हो गइले।

शाम के घरे आवत घड़ी ऊ मने मन सोंचले कि अलगु काका के नाम हटावे के कहब बाकिर बच्चा के भविष्य लउके तऽ मन डेरा जाय।इहे उहापोह में फँसल ऊ घरे पहुँच गइलन।

आवते अलगु काका के गोर धऽ लेहलन।कहे लगलन-ई का कइनी ह! भइया लोग के बारे में ना सोंचनी हऽ।अब ऊ लोग के का जबाब देब। आवते होई लोग।

अलगु काका कहलन- तूँ त हमरा के आपन सभ दे दिहलऽ।बाल बच्चा, परिवार के प्रेम,आपन जिम्मेदारी सब निभावत बाड़ऽ। दस साल से कोई बात तक ना कइलस ह। हम ई उमिर में तहार बचपन जिअतानी।ओ घड़ी तु टुअर रहलऽ ए घड़ी हम बानी बाकिर तहरा चलते हम ई दिन में भी सुख भोग रहल बानी।

अलगु काका के बात सुनके मनोहर के आँख भर गइल। ऊ कुछो ना बोल पवलन। ओही बेरा बाहर गाड़ी रुकला के आवाज सुनाई पड़ल। अलगु काका के चारो बेटा शहर से आ गइल रहलें। छोटका बेटा के मुँह पर अबहियो ऑफिस वाली अकड़ बाकी रहे, बाकिर भीतर कहीं ना कहीं गलतियो के भाव साफ झलकत रहे।

घर में घुसते सभे के नजर अलगु काका पर गइल। सबसे बड़ा बेटा धीरे से पूछलस —

"बाबूजी, ई जमीन वाला बात साँच बा का?"

अलगु काका शांत स्वर में कहलन —

"हाँ, साँच बा। अब मनोहर भी हमार बेटा ह।"

कुछ देर खातिर आँगन में सन्नाटा छा गइल। केहू लगे बोले खातिर शब्द ना रहे। आखिर मझिला बेटा कहले —

"बाकिर बाबूजी, बिना हमनी से पूछले…"

अलगु काका बीचहीं में बात काट दिहलन —

"जब तूँ लोग अपना जिनिगी के फैसला खुद कइलऽ, तब हम कुछ कहनी भा कबहूँ रोकनी? आज हम अपना मन के फैसला कइनी त एतना भारी काहे लागत बा?"

चारो भाई चुप हो गइलें।

ओहि घड़ी मनोहर हाथ जोड़ के कहलन —"भइया लोग, हमके कुछ ना चाहीं। बाबूजी जे कइले बानी ऊ बस बच्चा लोग के पढ़ाई खातिर कइले बानी। रउआ लोग कहब त हम बाद में नाम हटवा देब।"

अलगु काका थोड़ा तेज आवाज में कहलन —

"नाम अब ना हटी। ई दान ना, अधिकार बा। जवन अपनापन निभावेला, ओकर हिस्सा कागज से ना, मन से तय होला।"

मनोहर बो चुपचाप ओसारा से सभ सुनत रहली। उनकर आँख से आँसू टपकत रहे। नैना आ दरशन दूर खड़ा सबके चेहरा देखत रहलें। शायद ऊ लोग पहिला बेर परिवार के असली गांठ आ दरार दुनो एक साथ देखत रहे।

साँझ धीरे धीरे उतरत रहे। आँगन में पुरनका नीम के छाँव लंबा हो गइल रहे। अलगु काका खटिया पर टेक लगा के बइठ गइलन। बरिसन बाद उनकर चेहरा पर अजीब तरह के सुकून लउकत रहे।

थोड़ी देर बाद सबसे छोट बेटा धीरे से आगे बढ़लन आ मनोहर के कंधा पकड़ के कहलन —

"मनोहर… गलती तऽ हमनियों से भी भइल बा।"

मनोहर कुछ ना कहलन। बस चुपचाप उनकर हाथ जोर से पकड़ लिहलन।कहलन अब बेटा-बेटी दुनो के आशीर्वाद देके जाईं लोग। एह जमीन के परोपकार हम ना भूलाइब। बाप के निश्चय देख के केकरो कुछ आगे कहे के हिम्मत ना भइल। सब जन लौट गइलन।

ओह दिन जादोपुर गाँव में ना त कवनो पंचायत बइठल, ना कवनो बड़ा फैसला लिखाइल; बाकिर एगो बूढ़ आदमी अपना जीते जी ई तय कर दिहले कि कबो-कबो रिश्ता खून से भी बड़हन बन जाला।

❑❑

घाटशिला,झारखंड

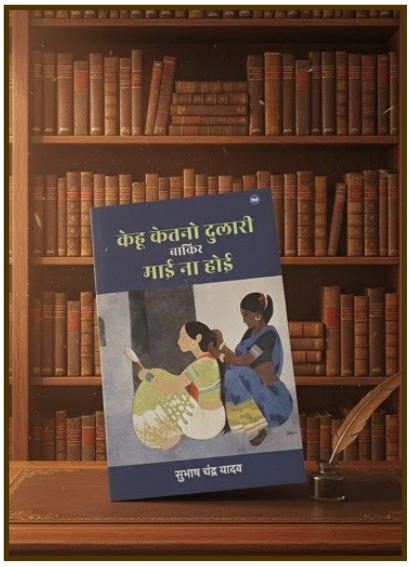

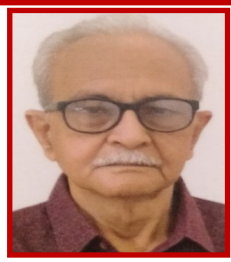

गइल भंइस पांकी में

शरण आशुतोष

छौ दिन खट के काम कइला के बाद एतवार के दिन थकान मिटावल हर कामकाजी मरद के जनम सिद्ध अधिकार हा। लेकिन हमार सुबह देर तक के सुतल, श्रीमती जी के सौतिया डाह के सूली पर शहीद हो जाला। कौनौ न कौनो बहाना आपन अनुसंधान के खजाना से निकाल के, श्रीमती जी हमार नींद हराम कर के ही दम ले ली।

तीन दिन के लगातार छुट्टी कई बरस के बाद मिलल रहे, शनिचर से अगला सोमार तक। मनभावन प्रोग्राम बना के शुक के रात में सुतनी कि गरमा-गरम चाय पकौड़ी के साथ बहुत दिन बाद एगो टि20 क्रिकेट मैच देखे के मिली। शनिचर के सुबह साढ़े नौ बजे से वेलिंगटन में भारत बनाम न्यूज़ीलैंड के वर्ल्डकप मैच होखे वाला रहे।

सपना में देखत रहीं कि कोहली आउर धोनी न्यूज़ीलैंड के गेंदबाजन के धुनाई कर रहल बाड़न।

" गुड मौर्निंग सर जी! उठीं पांच बज गइल।" हमरा के झकझोर के जगावत रही मलकिनी कि हम नींद में चिल्लइनी 'छक्का !' बस समझीं कि आफत मोल ले लिहनी। श्रीमती जी हमार रजाई खींच के हटा दे ली, "सिधाने टेबुल पर चाय धइल बा। हम जात बानी नेहाय-धोआए। आज मकरसंक्रांति हा। इयाद बा नू?" बोल के चल गइली।

कटकटी वाला ठंढ़ पड़त रहे। रजाई खींच-ओढ़ के फिर सुत गइनी।

जानी कि हमार पीजी डिपार्टमेंट में पढाई साढ़े छौ से एक बीस तक चलेला। सुबह पांच बजे जगरन, स्नान- ध्यान, नाश्ता पानी कर के छौ बजे घर छोड़े के पड़े ला। दू बजे तक लौउटी ला। शाम के साढ़े सात से नौ बजे तक क्लब, घर लउटके डिनर करते वक्त टीवी पर न्यूज, देर से देर दस-साढ़े दस में शयन, ई हमार रोजमर्रा के रूटीन हा। लेकिन शुक्रवार के देर रात तक बोर्डर फिल्म देख के सुतल रहीं। नींद पूरा ना भइल रहे।

"हई देखीं!? हम नहा-धो के पूजा भी कर लेनी आ ई मरद अभी तक फोंफ काटत बाडन, "उठीं-उठीं।" कोई सुगबुगाहट ना भइल हमरा में। खीझ के, रजाई खींच के कुर्सी पर रख देली।

"ऊठीं.. ईं.. ईं !"

हड़बड़ा के उठ के खड़ा भ गइनी।

"का भइल ? भूकंप आइल बा का?"

श्रीमती जी के सुन्दर मुखड़ा पर शिकन देख के हम दीवार घड़ी देखनी। छौ बजत रहे। ई आवे वाला सूनामी के संकेत रहे। मलकिनी झुँझला के बोलली,

"नामी प्रोफेसर,खंचिया भर ज्ञान, सब गइल चूल्हा में..."

जम्हाई लेत हम कहनी, "भोरे-भोर गुणगान भगवान के नु कइल जाला, दिलरूबा। हम कौन भागल जात बानी?"

दांत पीस के बोलली मलकिनी, " हूंह! दिलरूबा!? बोर्डर फिल्म के भूत अभियो उतरल नइखे!... ई का उठा लेआइल बानी?"

" पत्तागोभी ह ,बुझात नइखे?"

"खूब बुझात बा ! गोभी कहले रहीं नू!"

"त फरिया के कहे चाहत रहे, फूलगोभी ले आईं।"

"गोभी के मतलब फूलगोभी होखे ला, करमकल्ला ना।"

"पत्तागोभी करमकल्ला कहाए ला, ई त हम जानते ना रहीं। करम के कल्ला , कल्ला के मतलब लैम्प भा लालटेन के बर्नर; त करम के जलावे वाला!... अरे वाह ई त कमाल के सब्जी बा! जे खाई ओकर जनम-जनम के प्रारब्ध से मुक्ति!"

" बात मत बनाईं। तनिक अपनो दिमाग लगवल जाला। खिचड़ी के दिन (मकरसंक्रांति) करमकल्ला के कवन काम बा। खिचड़ी में मटर के साथ गोभी पड़े ला करमकल्ला ना।"

"ई सब हमरा ना बुझाला।"

"भोजन के सुआद खूबे बुझा ला! ई का बेसुआद बनइले बाड़ू, तनि हई डलतु,तनि हऊ डलतु? चाय एक दम फींका बा, सब्जी में नून कम बा, ई सब बुझाला लेकिन..."

" बस बस जाके ले आवतनी!... भोरे-भोरे माथा खराब कर के रख देली ई ..."

"बोल दीं,बोल दीं! रुक काहे गइनी?"

"चाय पिलावऽ त फारिग हो के टसकब।"

ठंढा हो गइल चाय के प्याला उठा के भुनभुनात जाए लगली, " पड़ल-पड़ल ठंढ़ा गइल...दस गो काम पड़ल बा, ई ना होखे की तनिका हाथ बँटाई ! रजाई में घुसल रहीं हें आ काम अढावत रहीं हें। इनकरे टहल में लागल रहऽ।"

" सुन ल ! जाइब एके शर्त पर कि नहा धोआ के पूजा कइला के बाद पकौड़ी-चाय मिली।"

" मकरसंक्रांति के दिन सुबह में काला तिल के तिलवा आ चिउड़ा आउर उजरका तिल के लाई। दिन के खाना में चूड़ा -दही मिली, सांझ के पकौड़ी-चाय, आ रात के तहरी।" दिन भर के मेन्यू बता गइली।

फारिग हो के झोला पकड़नी आ निकस गइनी। सोचले रहीं आज जमके साढ़े नौ बजे सुबह से इंडिया-न्यूजिलैंड के टी-ट्वेंटी क्रिकेट मैच देखब, पकउड़ी और चाय के साथ। इहाँ त तिलवा भकोसे के पड़ी।
शंकर दुकान खोलते रहे कि हम पहुंचनी। हमरा के देख के बोलऽलस।
"परनाम पोरफेसर साहेब! ताजा सब्जी ला ना सकलीं। जवन बा इहे सब बा।"
"बात ई बा शंकर कि हमरा सब्जी के बारे में ज्यादा ज्ञान नइखे, फूल गोभी के जगह पत्तागोभी ले गइल रहीं।"
"बोहनी नइखे भइल,एह से बाद में आ के ले जाईं। आ देख लीं अइसने गोभी बचल बा।"
"अच्छा त हम बोहनी कर देत बानी। एक रुपया के हरा मिरचा ,ना मिरचा त ले गइल रहीं। अइसन करऽ, धनिया के पत्ती दे द।"
"कवन दुनिया में रही ला, एक रुपिया में भिखारीओ दुआ ना देला! बीस रुपया के एक मुठ्ठा बा ।"
"ठिक बा दे द। ई छोट-छोट गोभी केतना के बाड़न सन?"
"अइसे त दस रुपया के एगो , लेकिन रउआ खातिर छौ रूपिया।"
"चार गो दे द। त चौबीस के गोभी आ बीस के धनिया पत्ती।कुल मिलाके चउवालिस। पत्तागोभी के बीस घटा दऽ त बाकि बचल चउबीस।"
पेमेंट कर के जल्दी जल्दी घरे अइलन ई तीसमार खाँ। नहा-धोके मकरसंक्रांति के कर्मकांड पूरा कइनी। मलकिनी प्रेम से दूगो तीलवा आ दूगो चिउड़ा के लाई आ एक गिलास पानी दे गइली। टेलीविजन खोल के न्यूज सुनत जलखई करत रहीं कि आगइली दिलरूबा। उनका हाथ में पॉलीथिन के थैली में पतरका बैंगन रहे।
" आंय जी, ई का ले आइल बानी? कलौंजिया बैंगन के कहले रहे? भरता गोलका बैंगन के नु बने ला।"
" फरिया के कहल चाहत रहे नु ?"
" खाली किताबी ज्ञान से जिंदगी ना चले! तहड़ी(विशेष प्रकार के खिचड़ी), भरता-चोखा साथे खाइल जाला। जाईं फेरके ले आईं। नीमन-नीमन चुनके...दूगो।"
गोलका बैंगन छोटा-छोटा लड्डू के साइज के भी मिलेला आ पपीता के साइज के भी । सोचनी कि साइज के भी फरिआ लेल उचित होई।
" कवन साइज़ के। जल्दी बताव, टाइम वेस्ट होता। मैच देखे के बा।"
"जाईं महाराज जाईं। भंटा कह देब त दुकानदार समझ जाई!"
"जाइब एके सर्त पर कि लउटब त पकौड़ी-चाय मिली ।"
"चूड़ा -दही मिली, सांझके पकौड़ी-चाय।"
" तिल के तिलवा खा लेनी। रस्म-रिवाज पूरा कर देनी।अब पकौड़ी चाय में एतराज ..."
बात पूरा ना भइल रहे कि बीचे में टोक देली, "अब भूंकवाईं मत,जाईं!"
"आज के बाद मार्केट ना जाइब हम। काल्ह से तू खुद जा के साग-सब्जी ले अइह।"
"हम झोला ढोअत टांग घसीटत सब्जी लावे जाइब नु?"
"ना जी मलकिनी! फोन पर फरमान जारी कर देब, ड्राइवर के हम भेज देब।..." बुदबुदईंनी, " बूझा गइल, आज के मैच जाईं पांकी में। अच्छा रहित कि छुट्टी ना दीहित सरकार।"
" अब लेट नइखे होखत!"
हम पौलीथिन लेके चल देनी शंकर के दुकान के ओरिया। बतावत चलीं कि शंकर हमरा साथ कबो जिला स्कूल में पढ़त रहे। ई बात अउर बा कि ऊ पांचवीं के बाद पढ़ाई छोड़ देलस आ हम आखिर तक खींच के ले गइनी। ऊ हंसमुख ह लेकिन अधकपारी। जइसऽहीं दूकान पर चहुंपनी ऊ हमार पॉलीथिन के देखते भड़क गइल,
" ईहो लउटावे के बा का ?"
मनुहार वाला मूड में कहनी, "शंकर भाई मजबूरी समझऽ! काल्ह डिपार्टमेंट में काम के बोझ तले हमार माथा एकदमे काम ना करत रहे। खरीदारी वाला फेहरिस्त घरे हीं छोड़ आइल रहीं। ओकरे खामियाजा आज भुगत रह बानी। . ह.... हमरा के एकरा बदले भंटा दे द।
अतना सुन के त ऊ अधकपारी पेनी से उखड़ गइल आ कहलस, "का परोफेसर साहेब रउओ एकदम से मेहरारू के अंचरा पकड़ के चलेवाला हो गइल बानी! सतरह बेरा फेरा - फेरी क रहल बानी।"ओकरा आपन बोले के लहजा पर दया आइल। नरम हो के,दांत निपोरत कहस, " पत्नी भगत जस कोल्हू के बैल! पेरा जाइब!!"
मनवा में कहनी , " दू दिन पत्नी-भगतई छोड़ के देखऽ , दिन में तारा ना देखाई पड़ जाय त नाम बदल दीहऽ!"
खैर! दोकानदार हमारा के बूझ गइल रहे। अगल-बगल देखके आश्वस्त हो के हम दोस्ती के वास्ता देत कहानी,
" शंकर भाई दोस्ती के लाज रख ल! घर में खाना-पीना मिलत रहे,अब तोहरे हांथ में बा।"
चाहे मिन्नत के असर होखे या भारी-भरकम गाहक के हाथ से निकल जाए के अहसास, हार दाव के ऊ हमरा के कलौंजीआ बैंगन के तौल के बराबर दूगो भंटा दे देलस। उहो मने-मने कहत होई कि आज केकर मुंह देख के उठनी हां, आ हम मने-मने कहत रहीं उफर पड़ो अइसन छुट्टी के। सोचलें रहीं कि इतमिनान से क्रिकेट मैच देखऽब। ईहां श्रीमती जी त दोसरे मैच रच देली। फिल्डिंग में दौउड़ा-दउड़ा के दिन में तारा देखा देली। खैर घरे अइनी। न्यूज चैनल जात्रा बिगाड़ देले रहे, एह से लाई खात अबकी बार स्टार स्पोर्ट्स लगा के देखे लगनी। तले मलकिनी

तमतमात अइली। कहली,
“पढ़ावे आ क्लब में ब्रिज खेले के बुद्धि बा, लेकिन साग-सब्जी कीने के नइखे? जइसे देख-संूघ के बौडी स्प्रे छांटिला ओसही साग-सब्जियो के छांट-छूंट के नू किनल जाला ?”
अतना सुन के हम त एकदमें अकबका गइनी आ कहनी,
“अब का भइल? फूलगोभी कहलु त करमकल्ला बदल के हम फूलगोभी ले अइनी। कलौंजिआ बैंगन बदल के भंटा ला देनी।"
“ फूलगोभी कहले रहीं, ई कहिया के मउराइल कीरीआइल उठा के लेआवे के ना! एकरा के हम का करब? गाय-गेरू भी मुंह ना लगाई।”
“बैंगन फेरे जात रहीं तब काहे ना कहलू? नौकर हईं की शौहर!”
ऊ झोला पटक के चल देली। हम सोचनी कि दू दिन के छुट्टी बा रार ठनला में फायदा नइखे। पढ़ल-लिखल कामकाजी मेहरारू से रार कइला पर कहीं हड़ताल कर दी, त कब तक होटल से खाना-नाश्ता मंगावत रहब। आपन शांति के बलिदान कइल बुद्धिमानी ना होई। एह से हम तुरंत आज्ञा के पालन कइनी। अपना लेखा मुंह बना के दू किलोमीटर दूर सब्जी मार्केट के ओर चल देनी। रास्ता भर सोचत गइनी। करीं त का करीं बाहर जाईं त दोकनदार के सुनी, घरे आईं त समझदार के! आज त बढ़ियां से पेरा गइनी। खैर! ताजा, भक-भक उजला फूलगोभी ले के थकल-हारल घरे अइनी। मलकिनी गोभी के मोआइना करके खुश हो गइली। राहत के सांस लेत टीवी खोल के न्यूज सुने बैइठ गइनी।

अमूमन घर के बाहर निकलते ही हमार दिमाग के बत्ती ट्यूबलाइट अइसन भक से जल उठे ला, आ घर के भीतर आते ही दिमाग के बत्ती पेट्रोमेक्स अइसन देर से जलेला। बात जब तक समझ में आवेला तब तक नुकसान हो चुकल हो ला। लेकिन आज त कमाल भ गइल!
ट्रे में आलू के कुड़कुड़ बजका आ भाफ उठत चाय ले के अइली श्रीमती जी, आ हमरा बगल में बइठ के प्रेम से ‘ए जी’ कहली त हमार दिमाग के ट्यूबलाइट भक से जल गइल ,कान खड़ा हो गइल। आवे वाला अटैक से होशियारी से सलटे के बा ई सिग्नल बुद्धि झट से दे देलस। पहिला बेर घर के अंदर अकील के ट्यूबलाइट जलल रहे।
“ एजी गलती त आदमीए से होखे ला न?” प्रेम के चासनी में डूबल मेहरारू के बोली त ब्रह्मा जी के आसन डोला दे ला, हम त इन्सान हईं।
बुद्धि के ट्यूबलाइट भुकभुकाए लागल।
“ हं हो!”
“ हम हूं त आदमिए हईं नु!”
बुद्धि के ट्यूबलाइट बंद हो गइल आ पेट्रोमेक्स जले के प्रक्रिया में चल गइल।
“एहू में शक बा का!”
“गलती के निराकरन होखे के चाहीं कि ना?”
“बिलकुल! कवन भूल भ गइल बा, बतावऽ।”
“जाए दीं। ढ़ेर दाउरा देले बानी रउआ के!”
बुद्धि के पेट्रोमेक्स भी बंद भ गइल।
“बोलऽ-बोलऽ! डेरा मत! हम भूल सुधारे खातिर बड़ले बानी।”
बैल के न्योत दे देनी, आ बैल मार हमरा के।
“ दही के साथ खाए खातिर बासमती चिउड़ा आ तहरी खातिर मोहनिया के गोविंद भोग मंगवावे के भूला गइल रहीं।
“अब हम ना जाइब। लाई वाला चिउड़ा दही के साथ खा लेब। अरवा चावल के तहरी बना दीहऽ।”
“साढ़े आठ बजत बा,मैच त साढ़े नौ बजे शुरू होई नु । एक घंटा बहुत होखे ला। लपक के जाईं, झट से लेके आईं।”
“ झट से ले आईं? पांच किलोमीटर दूर बा ‘गणेश पंसारी’ आ रउआ इनफार्मेशन खातिर मलकिनी जी, आज ड्राइवर छुट्टी पर बा। उहो त मकरसंक्रांति के दिन गंगा नहाय के हकदार बा कि ना? काल्हुओ ना आई। एतवार हा।”
“ ई कार के बात बीच में कहां से आ गइल ? रिक्शा से चल जाईं।”
“आज रिक्शा मिली। गंगा नहाए गाइल होईं हें सन।”
“घरे बइठल अटकलबाजी करत रहीं।” झनक के पैर पटकत चल गइली।

मन मसोस के एहतियातन दूगो झोला ले लेनी,एगो चिउड़ा खातिर आ एगो चावल खातिर। किस्मत साथ देलस, घर के पास खाली रिक्शा भेंटा गइल। रिक्शावाला से पूछनी,
“गणेश पनसारी भंडार जा के दूगो सामान खरीद के वापस आवे के बा। चलबऽ?”
“बइठीं।”
रिक्शा चल पड़ल। हमरा दिमाग में त भारत-न्यूजीलैंड मैच के मुंगेरी लाल वाला सपना चलत रहे। इंडिया धो देलस न्यूजीलैंड के। धोनी के तीस बौल में सेंचुरी।
“सरकार चहुंप गइनी।”
भ्रम टूटल। रिक्शा गणेश किराना के सामने खड़ा रहे।
“ ‘गणेश पंसारी’ के दुकान पर जाए के रहे, ले अइलऽ ‘गणेश किराना’। घुमाव रिक्शा।” आज आफत पर आफत पड़त जात रहे। गरीब रिक्शावाला मिमिआइल,
“राहता में टोकले रहतीं!”
अब ओकरा के कइसे कहीं कि मुसीबत के मारल मुंगेरी लाल बैइठल रहन रिक्शा पर सपना में डूबल। बेचारा रिक्शावाला निमन आदमी रहे। गणेश पनसारी से खरीदारी

शालिनी कपूर

एगो भुला दिहल गइल मेहरारू

आलिया रहमानी बेर - बेर "मिर्जापुर कइल गुलजार हो..." लूप में सुन रहल बाड़ी। रेखा भारद्वाज आ उत्पल उदित आवाज़ में कोक स्टूडियो भारत से हाले रिलीज़ भइल ह ई गाना 'कचौड़ी गली'। तब उनका इचको ना मालूम रहे कि ऊ खाली एगो कजरी ना, बलुक एगो भुला गइल औरत के खोज के शुरुआत सुन रहल बाड़ी।

दिल्ली में बरखा के दिन रहे। दुपहरिया सांझ बुझात रहे। दफ्तर में काम कुछ कम रहे आ आलिया पत्रिका के अगिला अंक खातिर सांस्कृतिक विषयन पर सामग्री खोजत रहल। एही बीच यूट्यूब पर इ वीडियो सामने आ गइल। कोक स्टूडियो के सुघर सजल उत्पल उदित आ रेखा भारद्वाज मंच पर विराजल बा लोग, संगत मंडली साथे।
आलाप ले के गाना सुरु भइल—
"मिर्जापुर कइल गुलजार हो,
कचौड़ी गली सून कइल बलमु..."
गीत में कुछ अइसन रहे कि आलिया रुक गइली।

ओह्ह! केतना बरिस बाद ई गीत फेरु सुने के मिलल ह। आखिर कवन बिरहिन के लिखल, गावल कजरी ह कि मन के बेध जाता।

गीत खतम भइल त आलिया नीचे लिखल परिचय पढ़ली—"परंपरागत कजरी",बस एतने।ना लिखनिहार के नाव आ ना पहिलका गावे वाला के जिक्र। त का बुझल जाव कि इ सचहुँ परम्परा से चलल आवत कजरी ह कि कवनो किस्सा बा एकरा पाछे।
जिज्ञासा अइसन कि अब टिप्पणी पढ़े सुरु क दिहली आ पढ़त-पढ़त ऊ रुक गइली।
केहू त लिखले रहे—
"ई कजरी सुन्दर वेश्या के ह।"
ओकरे नीचे जवाब रहे—
"गलत बात। ई गौहर जान से जुड़ल बा।"
तीसर टिप्पणी रहे—
"असल साँच अब केहू ना जानेला।"
आलिया देर तक स्क्रीन निहारत रह गइली कि कुछ और पता चले।
काहें कि पत्रकारिता में एगो बात सिखवाल गइल रहे—
जहवाँ तीन आदमी तीन तरह के साँच बतावत होखे, ओहिजा कहानी जरूर लुकाइल होले। बस आलिया ठान लिहली कि अगला फीचर एहि कजरी पर लिखाई।
आ अगिला हफ्ता ऊ बनारस में चहुँप गइली।

कागज पर लिखल असाइनमेंट रहे—कजरी पर फीचर लिखे के। बाकिर असल में सवाल त ई रहे कि इ कजरी पहिला बेरी के गवले रहे आ के रचले रहे। आ जदि सुंदर वेश्या के कर के घरे के ओर वापस चल पड़ल। मुसीबत पीछा ना छोड़लस। दू किलोमीटर भी ना गइल रहे रिक्शा के चक्का के ट्यूब पंकचर हो गइल। आसपास कोई पंकचर रिपेयर करे वाला ना मिलल। खाली रिक्शा के इंतजार में समय भागल जात रहे। रिक्शावाला के उचित पेमेंट कर के दूसर रिक्शा के इंतजार में खड़ा-खड़ा एक घंटा बीत गइल। बेचैनी पराकाष्ठा पर रहे।तीन किलो चिउड़ा आ पांच किलो चावल के बोझ उठाके तीन किलोमीटर दूर घर जाइल असंभव रहे। रिक्शा मिलला पर घरे पहुंचनी। घड़ी के दूनो सूई बारह पर अटकल रहे।
हकासल-पिआसल थैला सहित रूम में भगनी। टेलीविजन खोललीं। क्रिकेट इंडिया हार के वर्ल्डकप से बाहर हो गइल रहे। ऐने मलकिनी हथेली पर चावल लेके परखे लगली। कभी चावल के देखऽस कभी हमरा के, आ हमार नजर उनका चेहरा के बदलत भाव-भंगिमा पर टिकल रहे। दिल के धुकधुकी बढ़त जात रहे।

❑❑

○ पटना , बिहार

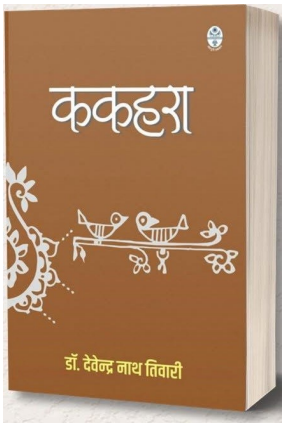

लिखल आ गावल ह त साँच काहे इतना ढाँपल - ढुंपल बा? इतिहास में उनकर नाव काहे ना दर्ज भइल?

बनारस आलिया के हरमेसा से अजीब सहर लागेला। ए सहर में सभ कुछ एके साथ घटेला।मौत आ संगीत ,भक्ति आ बाजार,याद आ भुलावा। भोर में गंगा आरती देखे वाला आ लोटा भर जल ढारे वाला लोग साँझे ठुमरी सुनत मिल जाला। ए सहर में समय सीधा ना चलेला,गोल-गोल घूमेला।
एहि से नैना के लागल कि अगर सुन्दर भा गौहर जान कहीं बचल होयह ,त एही सहर में,नाम बन के ना त किस्सा बन के।
कचौड़ी गली आलिया के कल्पना से बहुत छोट निकलल। अइसन बात नइखे कि आलिया बनारस पहिला बेर आइल बाड़ी। बलिया आ बनारस के दुरिये केतना बा। क बेर त उ कॉलेज के ओर से सारनाथ आइल बाड़ी त कभी देव दीपावली कभर करे मय घाट नाव से छान मरले बाड़ी। बाकिर एह बेरी जेकरा खोजे आइल बाड़ी, उनकर त इतिहासो में कहीं नाव नइखे। कबो - कबो लागेला कि इतिहासो प्रिविलेज्ड लोगन के ध्यान में राखके लिखाइल बा।
कचौड़ी गली के जीवन सान - सौकत कवनो जमाना में रहे, अब उ धूर में बिसरा गइल बा। गली में दुकान बा,बिजली के तारन के जाल बा, आ पातर गली में मोटरसाइकिलन के आवाजाहि बा। बीच-बीच में कुछ पुरान झरोखा अबहियो बाचल रह गइल बा। अइसन लागत बा जइसे ऊ आज ना, कवनो दोसर समय में खुलत होखिहन स।
आलिया एगो पान के दुकान पर रुक गइली, - "ई कचौड़ी गली ह नु ?"
दुकानदार मुस्किया के बतवलस, - "हाँ बिटिया। बाकिर जवन कचौड़ी गली तू खोजत बाड़ू, ऊ अब कहाँ बचल बा?"
"मतलब?"
"मतलब इमारत बच जाला बाकिर उ जमाना ना बचेला।"आलिया ई बात अपनी डायरी में लिख लिहली।

अगिला हफ्ता दिन ऊ लोगन से मिलत-जुलत रहली।लोकगायक, संगीतकार, पुरनिहा बनारसी, शोधकर्ता। मने, जेतना जगह आ जेतना लोगन से उनुका जानकारी मिले के गुंजाइस रहे, कुल्हि जगह गइली, भेंट कइली। हर केहू के लगे कहानी के एगो टुकड़ा रहे।पूरा कहानी केहू ना जानत रहे।
केहू कहे—"सुन्दर बहुत नीक गावे वाली रहे।"
त केहू कहे—"नाव सुनले बानी, बाकिर पक्का कुछ ना कह सकत बानी।"
केहू कहे—"ई गीत के भीतर जवन बिछोह बा, ऊ कवनो औरत के जियाइल पीर लागत बा। बाकिर हम ठीक - ठीक ना कह सकेनी कि इ केकर लिखल हउवे।"
आलिया नोट्स लिख रहल बाड़ी, बाकिर धीरे-धीरे उनका लागे लागल कि ऊ जानकारी ना, परछाईं बटोरत बाड़ी।

आलिया अब थाक गइल रहली। एगो आखिरी कोसिस करे खातिर केहू के बतवला पर वापसी के टिकट खातिर एजेंट से कह के उ ललिता घाट आ गइली। एहि जा आलिया के भेंट भइल रहमान चाचा से। अस्सी बरिस के उमीर पार चाचा आवाज काँपत रहे।बाकिर याददाश्त अबहियो चकाचक रहे। आलिया के कवनो उम्मीद त ना रहे बाकिर तबहियों आपन आखिरी कोसिस कर लीहल चाहत रहुवि।

बात सुन के चाचा पूछलें—"जानेलू, सबसे बड़हन झूठ का होला?"आलिया ना में मुड़ी हिला दिहली।
चाचा गंगा के ओर देखत कहलें—"ई कि इतिहास पूरा होला।"
कुछ देर चुप रहके फेर धीरे से कहलें —"सुन्दर रहे कि ना रहे, ई बात से बड़ सवाल इ बा कि लोग उनका के याद राखल चाहत बा कि ना।"

चाचा बीड़ी सुलगा लीहलें, धुँआ में धीरे - धीरे ऊपर उठत हवा में घुल गइल।
"हमार बाबा कहत रहलें—कवनो गावे वाली रहे। नागर से लगाव रहे। एहि मिर्जापुर के कवनो किस्सा रहे। बाकिर बिटिया, लोक में कहानी बच जाले, औरत ना बांचेले।"
ओह रात आलिया के नींद ना आइल। पहिली बेर अइसन लागल कि ऊ खाली एगो गीत ना खोजत रहली ह; उ इतिहास के अन्हार कोना टोवत रहली ह। जहवाँ कुछ नाव मिटा दिहल गइल, कुछ आवाज दबा दिहल गइल। बाकिर ओकर टीस,उ पीर अबहियो जिंदा बा।
आ ओह पीर के भीतर बार-बार एगो चेहरा उभरत बा। कुछ धुँवाइल, अधबनल, उ चेहरा उभरे सुन्दर के।
जेकरे बारे में केहू पूरा यकीन से कुछ ना कह सकेला।
बाकिर जेकरा के भुला देवे में इतिहास आज ले सफल ना भइल।आलिया के आपन सवाल के जवाब मिल गइल रहे।

"हम ई साबित ना कर सकेनी कि 'मिर्जापुर कइल गुलजार' सुन्दर वेश्या लिखले आ गवले रहली।
बाकिर एतना जरूर कह सकेनी कि इतिहास अइसन मेहरारून के नाव सहेजे के कबो खास कोसिस ना कइलस। लोग कहेला कि बनकट मिसिर आ दाताराम नागर के बीच दुश्मनी रहे। ई दुश्मनी सत्ता, प्रतिष्ठा आ प्रभाव के रहे। बाकिर एह कहानी में एगो तीसरा नाव जवन बार-बार उभर के आवेला उ ह सुन्दर। जहाँ-जहाँ नागर

के किस्सा मिलत रहे, ओहिजा सुन्दर के परछाइयो जरूर मिलत रहल बा। आ जहाँ-जहाँ सुन्दर के गीत सुनाई पड़ल बा, ओहिजा नागर के नाव हवा में तैरत मिलल बा। जइसे दुनो के नियति एक-दूसरा में फँस गइल होखे।

आलिया लेख के आखिरी हिस्सा लिखत बाड़ी—
"हम ई साबित ना कर सकेनी कि 'मिर्जापुर कइल गुलजार' सुन्दर वेश्या लिखले रहली। ना हम ई साबित कर सकेनी कि लोक में प्रचलित हर किस्सा ऐतिहासिक रूप से सही बा। बाकिर एतना जरूर कह सकेनी कि इतिहास अइसन औरतन के नाव सहेजे के खास कोसिस ना कइलस।

खिड़की के बाहर साँझ उतर रहल बा। दिल्ली के आसमान में बरखा के बादर फेर मेड़राये लागल बा। आलिया के लागल जइसे बहुत दूर, कचौड़ी गली के कवनो पुरान झरोखा पर एगो औरत चुपचाप ठाढ़ बिया।
ओकर चेहरा साफ नइखे देखात, बाकिर आँख में चमक जरूर रहे। जइसे ऊ कहत होखे—
"चलऽ, देर से सही... गीत के बहाने ही सही... आखिर केहू हमके खोजे त आइल।"
आलिया के लागल, शायद कहानी के असली अंत इहे बा।
ना नागर।
ना बनकट मिसिर।
ना काला पानी।
बलुक एगो भुला दिहल गइल मेहरारू के धीरे-धीरे स्मृति में वापस लवट आवे के कहानी।

❑❑

❍ नोएडा, उ0 प्रदेश

दिवाकर प्रसाद तिवारी

गउएं में रहीं सइयां

गऊएं में रहीं सईयां शहरिया न जाईं
दिलवा के बतिया हमहूँ के बताईं
शहरिया के मेमवा से मत बतियाईं
नेहवा के बंधन बस हमसे लगाईं।

ऊपर के चमक दमक सबके सोहाला
लोगवा रोएला जब सब लुटि जाला
जानी हम चुपे छुपे ओसे बतियाइले
केतना सफाई से बुद्धू बनाइले?

रूपवा देखा के तोहे अंगुरी पर नचईहें
एक दिन छोड़ी तोहे सब चलि जइहें
उल्लू मत बनीं सइयां शहरिया न जाईं
नेहवा के बंधन बस हमसे लगाईं।

मेहरी के बाति मनलें नामी भइलें तुलसी
सांची बाति कहि दी त मुंह जाई झुलसी
इज्जत के बाति हमसे मत बतियाईं
गउएं में रहीं सइयां शहरिया न जाईं।

आइल मोबाइल जबसे सइयां के हाथ में
उठी उठी मेसेज देखें आधी आधी रात में
जब मोहे नींद आवे चुपे बतियाइले
पूछिले सवाल हमके अंखियाँ देखाइले।

बहुत अति भइल अब नाहीं देखल जाई
अबकि जो देखीं हम लेब फरियाई
मुबाइल उ एही सिलबट्टे कुँचाई
बुलाइब हो थाना पुलिस नालिस लिखाई।

गउएं में रहीं सइयां शहरिया न जाईं
माई बाप कुल के ना इजतिया नसाईं
जियते जिनिगिया में अगिया मत लगाईं
नेहवा के बंधन बस हमसे लगाईं।

गउएं में रहीं सइयां शहरिया न जाईं...

❑❑

❍ देवरिया (उ० प्र०)

रंजन प्रकाश

आखिर सभे फंस गइल

आखिर सभे फंस गइल, मल्टी मिडिया के झाल में
ढेर लोग लुकाइल बा, एह मकड़ी के जाल में

गिनत अंगूठा संघतियन के, सभे लउकत लटकल बा
मुंछन पर सभे ताव देत बा, बाकिर बेभावे भटकल बा

चोर लुकाइल बा मन में, हंसत चेहरा भीतरे दरकल
छह पांच के चक्कर में, सभे बा बेभावे भटकल

मल्टी मिडिया पर आके ऊ, मरखहवा बैल बनल बा
ढाही मारत खूंटा उखाड़त, देखीं ऊ बैताल बनल बा

अपने बा उ लहू लुहान, दोसरो के भी कइले बा
ओकर गर त फंसले बा, दोसरो के उ फंसवले बा

होत फजीरे आँखिन मलत, मोबाइल पर अंगुरी नाचे
आइल सनेसा आगे भागे, पास अपना कुछुओ ना बांचे

केहू के फोटो केहू के नांव, कउओ ना करे एतना कांव
केकर केकर धरीं नाव, कमरी ओढ़ले सगरी गांव

होठन पर मुस्कान चमक, भीतरे भीतर खूब ठनल बा
पहचानीं त हम जानी, राम इंहा रहमान बनल बा

गते गते जिनगी सरकल, गांव-गांव में शोर मचल बा
पोसल-पालल जिनगी में, तूं बतलाव का बचल बा

एतना ऊँचा उठ गइल, जमीन अब छुआते नइखे
का करब अब तू रंजन, जब कुछउ भेटाते नइखे

❑❑

❍संस्थापक/संचालक : भोजपुरी डिजिटल लाइब्रेरी
(www.bhojurisahityangan.com
Email: ranjanprakash.boi@gmail.com
PH: 8340535561
(203, विश्व शाकुन्तल अपार्टमेंट, रोड नं. 02, मंदिर मार्ग, पश्चिमी शिवपुरी,पटना 800023)

डॉ सुनील कुमार पाठक

एने से इंडिया रेलित!

"का हरज बा
लड़इया कवनों
अपना भूँई प /नधाइल बा?
लड़े द मरदे
सरवा मरस-कटस सँ
ठीके तऽ बा
अभी गूँगिये /नधले रहे के काम बा
डीजल-पेटरोल
आ एल पी जी -
ऊफर पड़ो ,
गछिया एने /ढेर रोपाइले बाड़ी सं
बुझात बा -
सरकरवा जानत रहल हियऽ
का दो कि
ई नउबत/अइबे करी?
एही से
गाछ लगाओ /गाछ लगाओ
चिचियात रहल हियऽ।"
-एकलंगी भाँजत चलि गउवन
दुलारचन के चाय-दोकान पर
गेना काका।
बाकिर घरे अउवन त /दलानी में टीवी देखत
नतिया से जब पाला पड़ुवे
त अकिले हेरा गउवे
धउड़ल कोरा में कूदत आके पूछुवे-
"ए नाना !ई सार /कवन मिसाइल
छोड़त बाड़ें सँ कि
तनीं एनियो /छटक के आवत नइखे,
आइत तब नू मजा आइत -
एने से इंडियो रेलित!"

❑❑

❍ फ्लैट नंबर–303,परमानन्द पैलेस
(दानापुर–801503(पटना),बिहार।

का ई सांच ह?

कनक किशोर

का ई सांच ह?
लोकतंत्र
राजतंत्र के माफिक
प्रजा के /चूस रहल बा
रूप बदलि के,

का ई सांच ह?
अधिनायकवादी प्रवृत्ति
पनप रहल बा /लोकतंत्र के पहरूआ के
मन में /ठग रहल बा
आम जन के
रूप बदलि के,

का ई सांच ह?
लोक बिला रहल बा
लोकतंत्र में /सियासी चाल से,
चउथा स्तंभ /कर रहल बा
गुनगान /सत्ता के
रूप बदलि के,

का ई सांच ह?
खो रहल बा
धरम /आपन पहचान
सत्ता से गंठजोड़ करि
बाजारवाद के गोद बइठ
रूप बदलि के,

का ई सांच ह?
साहित्य में महंथी के
बोलबाला बा /सच्चा साहित्यकार
किनारा बा
जे आयोजन के माला उठाई

ओकरे गले में माला जाई
मंच ओकरे गुन गाई
सब आयोजन के पीछे
महंथ जी भाई
रूप बदलि के,

का ई सांच ह?
भाई ना रहल भाई /भउजाई ना रहल माई
चाचा, काका ना रहले आपन
गोतिया - दयाद के का कहीं आपन?
माई के बखरा बंटाता
बाबू के दुरदुरावल जाता
दोष अपना के ना समय के देता
मौका मिलते सटा के काट लेता
आजु के मनई
रूप बदलि के,

का ई सांच ह?
आदमियत /ईमानदारी
भाईचारा
प्रेम /नेकी
ना रहल समाज में
सभे आ बइठल बाजार में
रूप बदलि के,

का ई सांच ह?
धरम /मजहब
मंदिर /मस्जिद
गिरजाघर /गुरुद्वारा
भुला गइल आपन काम
बेंच देलस आपन ईमान
आ बो रहल बा जहर
साम्प्रदायिकता के /बांट रहल बा मनई के
रूप बदलि के,

का ई सांच ह?

विकास /लूट के दुआर ह
शिक्षा /आजु बैपार ह
कृषि /किसान के मुआर ह
मजदूर /शहर के सियार ह
सेठ /सत्ता के इयार ह
राजा /देश के मऊआर ह
सभे अपना के बूझे सरकार /रूप बदलि के,

का ई सांच ह?
लोक /आजु बीमार बा
न्याय /आजु बिकात बा
लूटेरा /आजु खुशहाल बा
पढ़ल - लिखल /आजु बेरोजगार बा
घर में /आजु खुलल दुकान बा
मनई /आजु परेशान बा
मुंह में राम,बगल में छुरी
पलक झपकते मूड़ी ममोरी
रूप बदलि के,

का ई सांच ह?
जल /जंगल
जमीन लूटाता
ताल - तलैया /पोखर सूखाता
आजु विकास के
आन्हर दौड़ में /दरक रहल बा
खड़ा हिमालय
सबके पीछे सरकार बा
रूप बदलि के,

का ई सांच ह?
नारी अस्मिता
खतरा में /कवनो उपाय ना
पतरा में /घर - बाहर बा एक कहानी
गीध ताक में
जतरा में /बात करेला नारी शक्ति के
वस्त्र विहीन करे
भोग्या समझे /पलक झपकते टूट पड़े ऊ
रूप बदलि के,

का ई सांच ह?
सत्ता /कुर्सी
नेता /बिकात बा दिन - रात,
सिद्धांतवादी नेता
सचहूं मुसम्मात,
सत्ता खातिर /गठबंधन
पार्टी पर कुठाराघात,
सब दल भीतर से /एके बा जाति
नेता बहुरुपिया /बनल कुर्सी के गुलाम
रूप बदलि के,

का ई सांच ह?
हो रहल बा /नंगा नाच
भरल बाजार में
सरकार के अंकवार में
धरम के संसार में /न्याय के दुआर प
रूप बदलि के,

का ई सांच ह?
आचार संहिता नाम के /चुनाव आयोग बेकाम के
जनवादी सब कागजी
ना कवनो ऊ काम के/देशभक्त चौकीदार में लउके
नया रूप सद्दाम के /सामने कुछ, भीतर बा कुछ
रूप बदलि के,

का ई सांच ह?
ग्लोबल गाँव में /गाँव भुला गइल
बाबा के दुआर /मुरझा गइल
सब पीपल - बरगद
कटा गइल /आम, महुआ, जामुन
बिका गइल /डिजिटल दुनिया
मनई के खा गइल
सब कुछ खा गइल मुअनी डाइन
रूप बदलि के,

का ई सांच ह?
का सुराज /आम जन के
अधिकार ह?
अधिकार /सभे चाहेला
कर्तव्य ना बूझे /का ई इंसाफ ह?
का सरकार
लूट के /बैपार ह?
ई सवाल ना सांच ह
झूठ सांच पर भारी
रूप बदलि के।

❑❑

❍ राँची, (झारखंड)

डॉ कमलेश राय

गीत

‘कबले हकसल पियासल लकरइबऽ हिरना
कवना गछिया के छइयां जुड़ाइबऽ हिरना।

आगी बोवेला अकास जरे रुखवा-परास
बाटे सगरी सरेहिया में पसरल पियास
पानी-पानी कहि कहाँ गोहरइबऽ हिरना।

जेके बूझि-बूझि ताल, होके धावेलऽ बेहाल
ऊँहा जइते भुँजाई तोहार सोना नियर खाल
आगी-पानी भला कइसे अलगइबऽ हिरना।

तोहार असरा उजारि, छानल जात बा बजार
तोहरा हिचकी कऽ लागल बाड़न गंहकी हजार
केकरा आगे जाके लोरवा चुवइबऽ हिरना।

कहीं कुँआ कहीं खाई, पीछे परल बा कसाई
चारों ओरियां से होता तोहरा तन कऽ नोचाई
सींग अछते तू कबले परइबऽ हिरना।’

❑❑

❍ आजमगढ़,(उ0 प्र0)

उदय शंकर प्रसाद

बफर

अब ना रहल उ भोज भात
ना दही चीनी के इयारी
अउर ना रहल घिव पतई
ना दरी के बनल कियारी
अब ना लऊके लोटा जग
अउर भइल पूछल भारी
का लेम का रउरा चाही,
जब से धइलक बफर के बीमारी

जिन्स टीशर्ट अउर लहंगा शोभे
अइसन का बा लाचारी
भवे भसुर सब एके जगहे
धइलक फैसन के बीमारी
अब ना कवनो लाज शरम
नाही रिश्तन के बा इयारी
मरद मेहरारू सब एके जगहे
जबसे धइलक बफर के बीमारी

खात रहऽ अउर नाचत रहऽ
चले डीजे के रंगदारी
पीअ पियावऽ अउर नचावऽ
धइलक सबके ई महमारी
जवन वियाह मे मार ना भइल
ओमे कइसन खातिदारी
सभे भुलाइल पुरानका भोज
जबसे धइलक बफर के बीमारी

❑❑

❍ चंपारण,बिहार

अशोक कुमार मिश्र

मोबाइल के जंजाल

मोबाइल के जंजाल में,
फँसल बा गाँव-शहर ले लोग,
घर-आँगन सून पड़ल बा,
जइसे पसरल होखे सोग।

पहिले चउपाल सजत रहे,
स्वस्थ रहे सभे मगन रहे,
अब सबके आँखि गड़ल बा,
स्क्रीनिये पर रोज।

बाबूजी के बात सुने ना केहू,
ना दादी के कवनो कहानी,
रील अउर स्टेटस में बितऽ ता,
अब सब्हन के नईकी जवानी।

खेती, मेहनत, मेल-मिलाप,
धीरे-धीरे सब छुट गईल,
अपनापन के मीठ रस मन से,
दिन पर दिन दूर भईल।

लेकिन आसरा के किरिन,
कहीं ना कहीं से आई जरूर,
संस्कार अऊर प्रेम से फेरू,
जहान में छाई नया सुरूर।

❑❑

❍ **डीएवी बीआर, बीना ,सागर (म प्र)**

संगीत सुभाष,
प्रधान सम्पादक,
सिरिजन, भोजपुरी तिमाही ई पत्रिका।

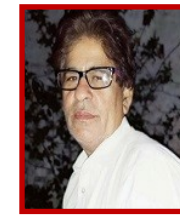

कउवा! जनि बावऽ कोणाच तू

कउवा! जनि बावऽ कोकाच तू।
झूठे नधबऽ नया नाच तू।

बोलऽ कब हंसन के रहलऽ?
पाँखि उखरलऽ जब-जब चहलऽ।
सुखववलऽ नदिया के सोती,
गिद्धन के भरि बाँहें गहलऽ।
खिंचलऽ ह सइसइ गो खाँच तू, । कउवा! जनि बावऽ कोकाच तू।

करिया तन मन करनी करिया
टेढ़ नजर, विपरीत नजरिया
कुररत कर्र कर्र चढ़ल माथ पर
बीतल तहरी सजी उमरिया
रोटी छिनलऽ बनि पिशाच तू। कउवा! जनि बावऽ कोकाच तू।

आपन मरे त जाति जुटावऽ
दूसर मुअले जश्न मनावऽ
चोंच देहि में मारि - मारि के
खून माँस हड्डी गटकावऽ
कहिया ले रहबऽ घपाच तू। कउवा! जनि बावऽ कोकाच तू।

चढ़ि मुड़ेर घरपाहुन गवलऽ
पाहुन आपन पूरुब पवलऽ
घरे बुला के आवभगत करि
उनका बदे पलानी छवलऽ
कइलऽ केतना घींच - घाँच तू। कउवा! जनि बावऽ कोकाच तू।

दूध पिये बिलगावे पानी
हंसन के ह इहे निसानी
गरज परे जब - जब समाज का
होत ठाढ़ बिन आनाकानी
कइल छोड़ि दऽ तीनि - पाँच तू। कउवा! जनि बावऽ कोकाच तू।

❑❑

❍ **गोपालगंज बिहार**

भोजपुरी गजल

मनोज भावुक

1.

वक्त रउओ के गिरवले आ उठवले होई
वक्त ह, वक्त प औकात बतवले होई

एह चिथड़ा के हिकारत से ना देखीं साहेब
काल्ह तक ई केहू के लाज बचवले होई

धूर के रउरा जे मरले कबो होखब ठोकर
माथ पर चढ़ के ऊ रउआ के बतवले होई

जे भी देखियो के निगलले होई जीयत माछी
अपना अरमान के ऊ केतना मुअवले होई

काश! अपराध के पहिले तनी सुनले रहितीं
आत्मा चीख के आवाज़ लगवले होई

जिंदगी कर्म के खेला ह कि ग्रह-गोचर के
वक्त रउओ से त ई प्रश्न उठवले होई

जब मेहरबान खुदा, गदहा पहलवान भइळ
अनुभवी लोग ई लोकोक्ति बनवले होई

अइसहीं ना नू गजल-गीत लिखेलें 'भावुक'
वक्त इनको के बहुत नाच नचवले होई

2

कइसन-कइसन काम नधाइल बाटे इंटरनेट पर
माउस धइले लोग धधाइल बाटे इंटरनेट पर

सर्च करीं जे चाहीं रउरा घरहीं बइठल-बइठल अब
सबके वेवसाइट छितराइल बाटे इंटरनेट पर

बेदेखल-बेजानल चेहरा से भी प्यार-मुहब्बत अब
अजबे-गजबे मंत्र मराइल बाटे इंटरनेट पर

जब-जब कैफे वाला कहलस सर्वर डाउन बा मालिक
तब-तब बहुते मन बिखियाइल बाटे इंटरनेट पर

रूस, कनाडा, चीन, जर्मनी, भारत, यू.एस या लंदन
एक सूत्र में लोग बन्हाइल बाटे इंटरनेट पर

साली से जब पूछनी, 'काहो- दुल्हा कतहूँ सेट भइल'
कहली उ मुस्कात खोजाइल बाटे इंटरनेट पर

मन के अँगना में गूँजत बा 'भावुक' हो तोहरे बतिया
गोरिया के लव-लेटर आइल बाटे इंटरनेट पर

3

हमार हमसफर हमें मिली जरूर एक दिन
जो ना मिली त हाथ ऊ मली जरूर एक दिन

इहे त सोच-सोच के कदम बढ़त रहल सदा
जे मंजिलो से रास्ता मिली जरूर एक दिन

तमाम सरहदन के बान्ह टूटबे करी कबो
ए यार फूल प्यार के खिली जरूर एक दिन

अगर तू मन में ठान लऽ ए जुल्म से लड़े के त
हमार आ तहार भी चली जरूर एक दिन

ए जिन्दगी के जंग में इहे तू सोच के बढ़s
हमार दाल भी इहाँ गली जरूर एक दिन

ई सोचियो के यार तू लिहाज त कइल करs
जे उम्र त तहार भी ढली जरूर एक दिन

हिकार लऽ, नकार लऽ, अभी मगर ई जान लs
हमार भी कमी इहाँ खली जरूर एक दिन

❑❑

(***लेखक मनोज भावुक भोजपुरी साहित्य आ सिनेमा के जानकार हईं.***)

❍ नोएडा (उ०प्र०)

कनक किशोर

जीवन अनुभूति के गझिन बुनावट निबंध के आधार

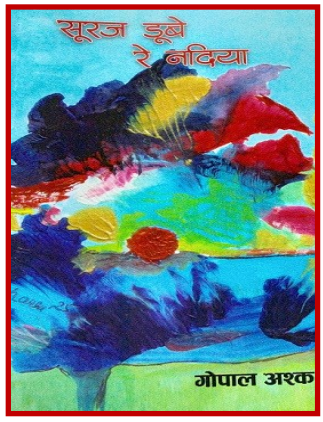

1 **निबंधकार:**

आजु के दिन नेपाल भोजपुरी साहित्यांगन के गोपाल अश्क ऊ फूल हवें जेकरा के किनार कर देला पर आंगन में से बसंत परा जाई, साहित्य बगिया मुरझा जाई। भोजपुरी, हिन्दी, नेपाली में समान रूप से सक्रिय रचनाकार के नाम गोपाल अश्क ह। अश्क इहां के उपनाम खुद से रखले बानीं बाकिर इहां के साहित्य से गुजरला प लागेला कि इहां के रामकहानी के अश्क से बरियार संबंध रहल बा आ इहां के साहित्यिक अवदान में अश्क के महत्वपूर्ण योगदान रहल बा। कविता त आह से उपजल मानल जाला अश्क जी के गद्य साहित्यो आह के उपज ह। अश्क जी संवेदनशील मनई हईं। संवेदनशील व्यक्ति से ई दुनिया छल करे में बाज ना आवे। बाकिर अश्क जी अस भीतर से मजबूत मनई दुनिया के देल अश्क में ना अझुरा ओकरे के आपन साहित्य के सीढ़ी बना लेला। गोपाल जी बहुआयामी व्यक्तित्व के रचनाकार हईं जे इहां के बहुस्तरीय आ विविध वर्णी साहित्यिक कृतियन के देखि पता चलेला। भोजपुरी में अबले इहां के 12 गो विभिन्न विधा के संग्रह आ चुकल बा। खंडकाव्य, गीतिकाव्य, गजल संग्रह, कहानी संग्रह, महाकाव्य, उपन्यास, एकांकी संग्रह, गीत संग्रह, निबंध संग्रह के साथे भोजपुरी नाटक, भोजपुरी भाषा, भोजपुरी समालोचना आदि पर शोध ग्रंथ आ भोजपुरी व्याकरण, भोजपुरी वर्ण- विन्यास, भोजुपरी के आदिम धरोहर आदि पर इहां के पुस्तक आइल बा। एकरा अतिरिक्त अनुवाद आ संपादन से भोजपुरी के समृद्ध कइले बानीं। इहां के भोजपुरी साहित्य में योगदान देखत डॉ ब्रजभूषण मिश्र कहले बानीं कि ' आजु के तारीख में अश्क जी से बढ़ के सबसे बेसी किताब लिखेवाला आ हर एक विधा में लिखेवाला भोजपुरी साहित्यकार, नेपाल में हमरा जाने केहू नइखे'। गोपाल अश्क के ' सूरज डूबे रे नदिया ' सद्य प्रकाशित ललित निबंध संग्रह ह जेकरा में कुल12 गो निबंध संकलित बा। एह आलेख में एह संग्रह के निबंधन पर कुछ बात - बतकही के प्रयास आगे कइल गइल बा।

2 **किताब पर दू बात :**

संग्रह के बारहो निबंध गुच्छ मनई के जीवन यात्रा से जुड़ल बाड़े सं। निबंधकार जीवन पथ के राग आ आग भरल अनुभूति के गझिन बुनावट के निबंधन के आधार बनवले बाड़ें जे बुझात बा पाठक के आपन जीवन के हिस्सा ह। अनुभव के सार के माध्यम से लेखक संकलित निबंध में जे इनपुट्स रखले बाड़ें ऊ आजुवो मनई खातिर सबसे अधिक मूल्यवान बा। जीवन के जटिल राह के सफर के अनुभूति आम मनई असहीं बिखेर देला, जेकरा कारण केहू दोसर भा समाज के कामे ना आवे। गोपाल जी एह संकलन में मनुष्यता आ लोक के पक्ष में आपन जटिल जीवन प्रणाली के अनुभूतियन के रखले बाड़ें जे देखला पर हर मनई के जीवन हिस्सा ह। जीवन में आंतरिक आ बाहरी चल रहल युद्ध के गाथा सार एह निबंध संग्रह के कहल जाय त कवनो गलती ना होई।एह में संकलित निबंध सब ई बता रहल बा कि जीवन के राजपथ पर हरदम निर्माण काम चलत रहेला, कुछ टूर - फुट होत रहेला जे लेखक जस विकसित दिमाग के होला ऊ ओह से सीख लेला। ओही सीख ले लेखक कहले बाड़े कि ' जेह दिन मान लेब कि हम सीख लिहलीं, ऊ गलतफहमी बड़ी महँगा पड़ी। अंतिम सांस ले सीखे के बा कुछ ना कुछ '। संकलित निबंधन में माई- बाबूजी, परिवार - समाज, लइकन एगो अंतःसलिला जस करीब - करीब हर निबंध में कवनो ना कवनो रूप में मौजूद बा। माई - बाबू के स्मृति त निबंधकार के मन में स्थायी रूप से घर बना लेले बा, एह से कई तरह से याद कइले बाड़ें। निबंधन में उल्लेखित आत्म संस्मरण से लेखक के गाँव, घर आ समाज के परिवेश के समझल जा सकेला। कहीं - कहीं समाज के संरचना के सामने रखले बाड़ें।निबंधकार के गाँव से लगाव आ अपनापन, बचपन के खेल आ इयार, खेत आ नदी के इयाद अभावो में खुशहाली खोजे के दृष्टि के परिचायक बा।दूसर शब्द में एकरा के अभावो के बीच खुशी के उद्घोष कहल जा सकेला। एह सब के उपस्थिति के कारण निबंध सब में जीवनी आ इयाद आख्यानो के आनंद मिलत बा। एह इयाद आख्यान में माई के लोरी, बरतन

के खनक, चिड़ियन के कलरव से खुलत नींद, बाप के बिमारी, परिवार में आप - आप के फैलल महामारी, समाज से भाग रहल अपनापन मौजूद बा। रोटी खातिर संघर्ष मौजूद बा। कथेतर गद्य में कथ्य आ शिल्प के साथे रसमय प्रवाह के बनल रहल जरूरी होला। गोपाल जी के निबंधन में भरपूर रसमय प्रवाह किताब के पन्ना - पन्ना में मौजूद बा। निबंध बात - बात बतकुचने नूं होला। एह संग्रह के निबंधन में विषय से हट कहीं बतकुचन लउकत बा त ऊ सार्थक बा, लोक उपयोगी बा।गोपाल जी के निबंध जीवन, ओकर संघर्ष आ जीवटता से हमनी के परिचित करावत बा। इनके निबंध मनई के संताप, विजयी जिजीविषा आ निरंतर कवनो परिवर्तन से जुड़ल रहे के कहानी ह। किताब में मनई के जीवन के जन्म लेला से चिता के सवारी तक के कटू सत्य के साथ में समय के साथ बदलत परिवार आ समाज के स्वरुप के सामने रखले नइखे गइल ओकरा पर चिंतन करि फिलोसफर के अंदाज में गहन विचार करि निदानो रखल गइल बाद। जिनिगी के बादो के बात आ ओकर सटीक अध्यात्मिक विवेचन कइल गइल बा। एह संकलन के निबंधन में रचनाकार के निजी जीवन बड़ी रचनात्मक आ संवेदनशीलता के साथ दर्ज कइल गइल बा। जीवन के आपाधापी में कतने संवेदन के अपहरण हो जाला बाकिर अश्क जी बचा के रखनी तब त निबंध रूप में सोझा आइल। अश्क जी एह निबंधन के माध्यम से आपन जीवन के कई गो संवेदनशील पहलुयन के सामने रखले बाड़ें। जे देखि लागेला कि अपनन के बीचो आदमी केतना अकेला हो जाला, कबो - कबो केतना संकुचित हो जाला, अपने में केतना संदिग्ध हो जाला आ एकर जबाब खोजेला त शक के सुई अपनो ओरि आवत देखेला। गोपाल जी के निबंधन से गुजरला पर हमरा कौशल किशोर जी के कविता इयाद आ गइल -

' बेर नव रही है/ दिन ढल रहा है

शाम की बेला है/दूर क्षितिज पर सूरज डूब रहा है

उगना और डूबना /प्राकृतिक क्रिया ही नहीं है/ जीवन क्रिया भी है

इसमें उम्मीद है/यह अँधेरे को पांव जमाने नहीं देती। '

निबंधन के स्वरुप देखि ब्रजभूषण बाबू के कहल ' एह निबंध संग्रह में जीवन दर्शन भरल पड़ल बा, ' आ भगवती बाबू के कहल ' इहां के हरेक निबंध में जीवन दर्शन के गूढ़ आ अजगुत भाव भरल बा', एकदम सांच बुझात बा। संग्रहित निबंध सब वयक्तिक परक, चिंतनपरक दर्शन से भरपूर वैचारिक से ओतप्रोत पठनीय बन पड़ल बा।

3 **कुछ किताब से :**

' बाकिर ई कहानी ना ह ' एगो आत्मपरक निबंध एगो सांच घटना पर आधारित बा। पारिवारिक कलह आ उपेक्षा से तंग आई के रचनाकार के माई घर छोड़ कुम्भ मेला में चल जात बाड़ी आ फिर लौट के नइखी आवत। एह पारिवारिक संवेदनशील त्रासदी के निबंध रूप में रखल गइल बा। बदलत समय के साथ बदलत परिवार के रूप आ ओकर घातक परिणाम के निबंध में बड़ी सुन्दर ढ़ंग से रखल गइल बा। एह निबंध में मेहरारून के अपने जाति के प्रति सुभाव आ ओहनी के आपन सुभाव के सुनर वर्णन बा।' अपने बनावल दुनिया जब दुतकारेला त आदमी के मउवत से बढ़िया उपाय दोसर कुछ ना लउके। अपमान के जिनिगी से त अच्छा सम्मान के मउअले होला '. निबंध के एह पंक्तियन से लेखक के संवेदनशीलता समझल जा सकेला। एह पीड़ादायक घटना के दोषी केहू दोसर रहे बाकिर अंत में लेखक अपने माथे सबके दोष ले लेत बाड़ें। घर के अंदर घर आ उहो घर मरघट जइसन के कहानी ह ई निबंध।

' मजदूरी आ प्रेम ' में आत्मियता, मानवता, आ प्रेम के मूल्य बतावल गइल बा। मेहनत के साथ प्रेम जुड़ जाला त ऊ बोझ ना रह जाए। ' मजदूरी के साथे - साथ प्रेम दिहल जरूरी बा। बिना प्रेम के मजदूरी नीरस मजदूरिए में सिमट रह जाई। बाकिर जब ऊ मजदूरी प्रेम के रस में सराबोर होके छलकी, त दिल आ दिमाग दुनू के दुनिया महक उठी'। निबंध के एह पंक्तियन से लेखक के संवेदनशीलता के पता चलत बा।

' बोतल के टुका ' व्यक्तिपरक निबंध ह। परिवार का ह? माई - बाबू का होले? बेटा बड़ होखला पर काहे बदल जाला? भरोसा आखिर का ह? का ई विश्वास ह? एह सब सवालन के जवाब एह निबंध में बा। लेखक के जीवन सिद्धांतो समझावे में ई निबंध सक्षम बा। निबंधकार के जीवन के जटिल घरी देखे के मिली एह निबंध में जे बतावत बा जीवन केतना कठिन हो गइल बा? समय केतना बदल गइल बा? आपन जिनिगी देखत लेखक स्वीकार करत बा कि सांचहूँ हम बोतल के टुका हईं। ' नदी तर के खेत ' में गाँव समाज के रहन - सहन, बचपन के दिन, माई - बाबू के चिंता, लइकाई के अलहड़पन के बढ़िया चित्र उकेरल गइल बा।

' जरूरत आ ख्वाहिश ' मनई के जीवन में दूनों का होला के बड़ा दर्शनीय ढ़ंग से समझावल गइल बा। निबंध सार इहे ह कि' ख्वाहिश पहिलकी सीढ़ी ह, आ जरूरत दोसरकी। ख्वाहिश बनके जीये के इच्छा रहल आ आदमी जरूरत बन गइल।'

एह संकलन के दोसरो निबंध सब में जिनिगी के उथल - पुथल राह के कहानी बतावत कही पंचतत्व, कहीं परम ब्रम्ह परमेश्वर, कही जीवन सत्य, कहीं गीता के बात, कहीं आस्तिक - नास्तिक के बात, कहीं मृत्यु के बाद के बात के आलोक में जीवन यात्रा के बात करत बतकुचन कइल गइल बा। एगो

निबंध में आपन तीन गो साहित्यिक सखी मित्र लोगिन के बात कइल गइल बा। खुल के ओहनी के गुन धरम के चरचा विस्तार से कइल गइल बा अपना से संबंध के साथ। अंत में ओह तीनों में से एगो के साथ बिआहो के बात कइल गइल बा। आजुओ रचनाकार ओह दूगो के भुलाइल नइखन। रउवा मन के उत्सुकता जानत बानी हम। हम ना बताइब ओहनी के नाम। अतने बताइब तीनों सुनर बाड़ी सं। निबंध संग्रह पढ़े के पड़ी नाम जाने खातिर।

4 एगो पठनीय किताब:

सरल, सहज भाषा में बिना विद्वता प्रदर्शन के सुलझल भाव में निबंध संग्रह संकलित कइल गइल बा। एकर सब से बड़ खूबी बा कि लोक परिवेश आ समाज - परिवार के सच्चाई के बेलाग रखल गइल बा। जेकरा कारण विषय - वस्तु के नजरिया से एह संकलन के बारहों निबंध पठनीय बन पड़ल बाड़ी सं। निबंधकार हर निबंध में जवन परिवेश निर्माण कइले बा ओह में हमनी के समय, समाज, जीवन आ संघर्षरत यात्रा के दुनिया से साक्षात्कार हो जात बा। बुझात बा निबंध के जिंदगी से उठाके किताब के पन्ना में रख देल गइल होखे। मानव मनोविज्ञान के बारीक समझ से लिखल गइल बा लालित्य पूर्ण ई निबंध संग्रह। जीवन के विसंगतियन के बीच सच्चाई के सामना करे के सलाह देता गोपाल जी के ई संग्रह। किताब के मूल्य रु. ४५०/ बा जेकरा पर नजर पड़ते मन तींत हो जात बा आ ई भोजपुरिया के अनुकूल नइखे लागत। पूरा विश्वास बा अश्क जी के एह निबंध संग्रह के भोजपुरी साहित्य जगत में भरपूर स्वागत होखी। भविष्य खातिर हमरो ओरि से मंगलकामना बा, स्वसथ रही आ सिरिजना में लागल रहीं।

समीक्ष्य पुस्तक का नाम - सूरज डूबे रे नदिया
विधा - ललित निबंध
निबंधकार - गोपाल अश्क
प्रकाशक -ओरिएन्टल पब्लिकेशन, काठमांडू
मूल्य - रु. ४५०/ (पेपर बैक में)

❑❑

❍ राँची, (झारखंड)

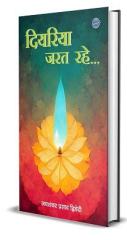

धीरेंद्र पांचाल

पहुना

कवने करनवा हो
भइला बिरनवा हो
पथरो के आवत रोवाई होई पहुना।।

कहाँ बोला गाँव बाटे
गाँव के का नाव बाटे
राखि दा धनुहिया थकल होई पहुना।।

बबूनी सुनरकी हो
धोतिया पुरनकी हो
मघवा में छहवाँ जड़ात होई पहुना।।

होइहें घरे बाबू माई
छोट बड़ सग भाई
कइसे उनके खनवा घोंटात होई पहुना।।

बघवा बघिनिया आ
अमवा डहूनिया आ
सउसे सिवान घबड़ात होई पहुना।।

खोंतवा के चिरई हो
तलवा के जरई हो
घरवाँ के तुलसी झुरात होई पहुना।।

काठ के करेजवा हो
कवन रंगरेजवा हो
छतिया पे रखले मसान होई पहुना।।

कवने करनवा हो
भइला बिरनवा हो
पथरो के आवत रोवाई होई पहुना।।

❑❑

❍ भीषमपुर , चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

सन्नी भारद्वाज

बाबूजी

तोहार दुख केहू माथे ना उठाई बाबूजी।
खाली सुखवे में हिस्सा बटाई बाबूजी।

कहा कहा धइल बाटे धन इ बताईं
पाई पाई जोरल जाई कीरीया धराईं
कूल्ही सांचल तोहार अंगूरी गिनाई बाबूजी
खाली सुखवे में हिस्सा बटाई बाबूजी।।

बाबा के सिकरीया हउ आजी के पैजनियां
माई के कंगनवा आ नाकी के नथुनिया
का का रखले बाड़ी बड़की भऊजाई बाबूजी
खाली सुखवे में हिस्सा बटाई बाबूजी।।

घोड़ा वाला सारी चाही अंगना दुवारी चाही
तलवा में तरी दे द अधवा कियारी चाही
बाहा बोदर तक ले बिगहा नपाई बाबूजी
खाली सुखवे में हिस्सा बटाई बाबूजी।

बाबूजी बटाइब रऊआ बटी महतारी
हितई में साढ़ू चहीहे, चाही ससुरारी
फुआ, बहीन लोग तोहरे प थोपाई बाबूजी
खाली सुखवे में हिस्सा बटाई बाबूजी।।

हर जोर बैल रऊवा नाधी खिंचनी
फांकी रहनी कि रऊवा बांकी खिंचनी
लोग सोझा राऊर कइल बिसराई बाबूजी
खाली सुखवे में हिस्सा बटाई बाबूजी।।

तोहार दुख केहू माथे ना उठाई बाबूजी।
खाली सुखवे में हिस्सा बटाई बाबूजी।

❑❑

कैमूर ,बिहार

अभियंता सौरभ कुमार

दोहरा चरित्र

मइके में रहली त भउजी के, दिन-भर खूब नचवली,
'सीता' नियर रहस ऊ घर में, पाठ ईहे पढ़वली।
बाकिर जहिआ खुद पतोह बन, दोसरा के घर गइली,
सासु-ससुर के देखत देरी, तिरछी नजर कइली।

'पति आ हम' के जपे लगली, अलग होखे के माला,
महतारी-बाबूजी के सेवा, अब त बोझ बुझाला।
दोसरा के बेटी 'दासी' होखे, आपन बेटी 'रानी',
गजबे बा ई दौर साहब, आ गजबे बा ई कहानी।

मइके वाली 'मर्यादा' के, देहली खूब दुहाई,
ससुराल में पहुँचते मैडम, आपन रंग देखाई।
भउजी के त कहत रहली, 'सबके संगे रहना',
अपनी बारी 'प्राइवेसी' के, पहिन लिहली गहना।

खूब पढ़ली-लिखली बाकिर, मति गइल बौराई,
घर तोरे में लागल बाड़ी, ई कइसन चतुराई?
जे माई-बाबू पाल-पोस के, लड़का के काबिल कइले,
आज ऊहे ई 'नया पतोह' के, आँख में कंकड़ भइले।

स्वार्थ के ई चश्मा चढ़ल, रिश्ता भइल बेगाना,
भूल गइली 'बेटी' बन के, मइके के समझाना।
कलयुग के ई चाल देख के, धरम-करम सब रोवे,
आपन घर के आग लगा के, के सुख से अब सोवे?

❑❑

सिवान , बिहार

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

सासुजी के मेहना

सखी सहेलियन से ढेर कुछ सुनली
सुनि सुनि ओकरा त मनही में गुनली
ससुरे साँसत में नाही हौ रहना।
सुनब न कब्बों सासुजी के मेहना॥

ससुरा रहली ना, गाँव- घर देखली
अँगना ओसारी दुअरा ना झँकली
भेंटत कहाँ से ससुर के ओरहना॥ सुनब न कब्बों---

आँखिन में लिहले मायके क पानी
पिया के संगे सहरिये में बानी।
घरी घरी नइहर क कहनी उचरना॥ सुनब न कब्बों---

ससुरा के रीतिया इचिको न जनलीं
दर देयादन के कुछहू ना मनलीं।
सगरों मायके के मय में चहकना॥ सुनब न कब्बों---

ननद ना जनलीं,ना देवर परखलीं
जेठ-जेठानी कबों ना निरेखलीं
फिर गोतिन देयादिन के का कहना॥ सुनब न कब्बों---

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

आकृति विज्ञा 'अर्पण'

निर्गुण

मनवा जोगी रे घूमे नव बाट रोज
बाकी रास आवे न नगर.....

कुअंवा होई गये रे थोथल
नदिया होई बैठल छिछल
पानी तनिको बढ़े
से आवे बाढ़ रे.....
बाकी रास आवे न नगर.....

जोहड़ा फाट फाट अघाये
बरखा ऋतु भर भरि जाये
उहो लोग जोहि के
देई रहे पाट रे.....
बाकी रास आवे न नगर.....

चिरई से छीनलै डार
लोग अस बूझेदार
बिरछा काटि काटि के
साजे लोग दलान रे.....
बाकी रास आवे न नगर.....

मनवा जोगी रे घूमे नव बाट रोज....
बाकी रास आवे न नगर.....

❑❑

❍ गोरखपुर,उ0 प्र0

डॉ प्रतिभा सिंह

गाँव के परधानी

लगातार एक हप्ता के घनघोर कोहरा आ बादर भरल दिन रात का बाद आज तनि घाम भइल बा। हम कुल काम समेट के छत पर खटिया डाल के लेट गइलीं। जनवरी क नरम घाम देंह पर पड़ल त अलसाइल सरीर पर ओंघाई छा गइल। आ जब आँख खुलल त दुपहरिया क तीन बजे जात रहल। घाम अबहीं भी ओहितरे लागत रहे। बाक़िर जनवरी के दुपहरिया क सन्नाटा अइसन की मन कवनो अनजान भय से भर गइल। न जाने मन में बार-बार अइसन विचार काहें आवत रहे कि कहीं त कवनो अनहोनी भइल जरूर हं। पेड़-पालों एकदम स्थिर, जइसे सगरों ओर मनहूसियत छाइल बा। मन बहुत खराब भइल रहे। हम सोचलिन कि नीचे चलिके तनि केहू से पूछीं कि कहीं कवनो बात त ना भइल ह। बाक़िर पहिले छत पर ही चारों ओर तकली पर कहीं कउनो मनई लउकते ना रहल। हम नीचे अइलीं त घरे में कहीं केहू ना रहे। हॉल की जंगला से झांक के देखलीं त दुई-तीन मेहरारू जवन घर क बहू रहलीं अपने में बतियावत रहलीं। बात त कुछ जरूर भइल रहे, नहीं त इ मौसम एतना शांत आ डरावना ना लागत, ई सोच के हम पड़ोसी की घरे गइलीं।

''ए भाभी आज मन कुछ ठीक ना लागत बा पता न काहें?''

''अरे, ना जानत हऊ बहिनी। मिंटू मर गइलन।''

''का...?''

हम अवाक हो गइली। जइसे हमके काठ मार गइल होखे।

''ई का हो गइल भगवान।''

हमरी मुँह से निकलल। आ ओही ज हमहूँ खटिया पर बइठ गइलीं।

''बहुत खराब भइल हो बहिन जी।''

''ओ घर क सबसे बड़की पतोह कहलीं हमसे। जबकि हमरी दिल-दिमाग में उ लइकी घुमत रहे जवन दुर्भाग्य से मिंटू क मेहरारू रहल। उमर उहे बीस-पच्चीस बरिस रहल होई। गोर एकन दुब्बर-पातर, छुई-मुई अस सीधी-सादी लइकी। जवनी उरि में ओकर बियाह होखे के चाही ओ उमिर में उ बेवा हो गइल। अउरी ना त आठ बरिस क रीसु भी रहलँ। रीशू मिंटू क लइका बाटे, उ त अबहीं पापा कहे सिखलन हँ, तबले उनका कपार से पापा क हाथ उठ गइल। ओह, ई प्रकृति क कइसन पाप ह। भगवान ई क्रूरता त ना होखे के चाहत रहल ह।

मिंटू हमरी मोहल्ला क रहे वाला एगो मिलनसार लइका रहलन । उनकर औसत लम्बाई गोर रंग आ गोल चेहरा रहल। उ बहुत खुसमिजाज रहलन, केहू के भी एक नजर में अपनी ओर खींच लेत रहलन। पहिली बार मिंटू हमसे रीतू की बियाह में मिलल रहलन। तब हमहूँ नववधु ही रहलीं। मेहरारून की भीड़ से दूर चुपचाप एक जगह बइठल रहलीं। तबहिएं उ आ गइलँ-

''का हो भाभी तू एहर काहें अकेले बइठल बाटू? कुछ खइलू-पियलू ह कि ना?''

हम मिंटू के चिन्हत ना हई ई बात उ समझ गइलँ-

''ए भाभी तू टेंशन मत ला, हम घरवें क मनई हई। बतावा का खइबू?''

हम तुरन्त लियावत हई।

''अरे ना भइया। रउआ परेसान न होईं। हम जाके खा-पी लेब।''

ई दुई मिनट की बातचीत में ही मिंटू क व्यक्तित्व समझ में आ गइल। तबसे त न जाने केतनी बार उ हमसे मिललन आ ओही सनेह से।

पिछली बार के परधानी में मिंटू क बाबूजी परधान भइलन। उ लइका एतना मगन रहल कि जइसे ओकर बाबूजी परधान ना भइलँ हं, देस क परधान मंत्री हो गइल हवन। आ नयका परधान जी के कम ना रहलँ लइका के एकदम निछट्टा छोड देहलन। उ केहर जात-आवत बा, कब केसे मिलत बा रात-रातभर गायब रहत बा न महतारी के धियान न बाप के। देखते- देखते बाप नाम भर क परधान रह गइलन। कुल काम त मिंटूए देखे लगलन। अब उनकर नाम परधान जी हो गइल। बाप-बेटा के परधानी क लाभ-काम देख एगो बाप भी आपन बेटी बियाह देहलस, ओ मिंटूआ से। मिंटू केहू तरे बीए तक क पढ़ाई कइले रहलन। बाक़िर भाग क निम्मन रहलन कि उनकरा के एमए पास सुन्दर आ सुशील लइकी मिल गइल। बाप-बेटा आ महतारी त

फूले ना समइलन। राजकुमारी अस लइकी पाय के। आ नाम भी त रहल रानी। एकदम गऊ अस रहलीं रानी।

ओइसे हर लइकी जइसे रानी भी त राजकुमार अस पति क सपना देखले रहलीं। बाक़िर हाय रे किस्मत, रानी क त जिनगिए अन्हार हो गइल। उनकर पति त पहिले रात में ही आपन असली रंग देखा देहलस। शराब की नशा में एतना धुत्त कि देह पर सोझार कपड़ा बा कि ना एहू क ना धियान रहल। पहिले त रानी के लागल कि शायद बियाह की खुशी में उनकर दोस्त लोग जबरदस्ती पिया देहले होइहें। बाक़िर ई का कि दूसरा-तीसरा आ चउथा दिन भी इहे रहन। उ समझ गइलीं कि उनकरा संगे धोखा भइल ह। पर अब क भी का सकत रहलीं। केहू तरह से गरीबी में करजा-कुआम कई के महतारी-बाप पार घाट लगवलन। त अब ई कुल देखे के मिलत बा। रानी त चाह के भी महतारी-बाप के कुछ ना बता सकत रहलीं। उ दूनो जानी रोगिहा सरीर क मनई हवन भला कइसे बरदास करतन। उ आपन करम क फल समझ के चुप हो गइलीं।

हम आवत-जात खूब धियान देत रहलीं। जबसे गाँव क परधानी मिंटू के घरे गइल रहल तबसे उ होस में ना रहलन। इहाँ सहर में जमीन, त उहां फ्लैट आ घरे मा रोज दारू-मुर्गा। काम के नाम पर सब फिसडडी। गाँव क मनई त एह लिए जितवले रहलन कि ई गाँव के भला खातिर कुछ करिहन, बाक़िर इहाँ त जीतले के बाद कुल वादा भुलाय गइल।

खैर, गाँव क जनता उ बाप-बेटा के एक बार त परधानी देके देख लेहलस। अगली बार मिंटू क बाबूजी हरलन त एकदम कि फिर कबहूँ पराधानी लेइ क हिम्मत ना भइल। बाक़िर मिंटू के त छोटका परधान कहइले क आदत लाग गइल रहे। अब उ आदत एतना जल्दी कइसे छूटी। परधानी भलहीं चल गइल, बाक़िर मिंटू आजो गाँव के दुई-चार चोर-उचक्कन से घिरल रहेलन।

अबहीं लगभग दुई महीना पहिले सुनायल कि मिंटू के पीलिया भइल ह, बाक़िर उ कवनो डॉक्टर के देखावत नइखन। कहत बाटें कि हमार बिमारी अपने से ठीक हो जाले। भला बतावा कउनो रोग अपने से ठीक होला। न कवनो परहेज, न दवाई। फिर त उनकर लीबर एकदम्मे खराब हो गइल। डॉक्टर कहलन मुश्किल से महीना भर बचिहे। कोहराम मच गइल पूरा क्षेत्र में। बाक़िर जवन होखे के ह उ होई के रही। केहू के रोवले-हँसले कउनो फरक ना पड़े के ह। मिंटू क बाबूजी अपनी बूढ़ हाथ से जवान बेटा के दाग देहलन। अब त उहे समझत होइहे कि जवान बेटवा के आग देहले में केतना दरद होला।

अउरी आज जब हम दुपहरिया तनि अराम कइके घरे में से निकलनीं ह त ई खबर सुने के मिलल। मन दुख से भर गइल ह। यद्यपि हम सामने से त मिंटू के मृत शरीर नहिएं देखलीं। काहें से कि हमरी में एगो जवान लइका के एह अवस्था में देखले क साहस न रहल। ओइसे उनकर त जवन भयल उनकी मन बढ़ुई से भयल। बाक़िर उनका पीछे एगो पाँच बरिस क लइका अउरी पच्चीस बरिस क सुघर मेहरारू रहे। अब ई दूनो केकरे सहारे ई लम्बा जीवन कटिहें भगवान जाने।

ई खबर सुनतहीं हमार कपार भारी हो गइल रहे। हमरी में तनिकों हिम्मत ना रहे कि तनि पुरनके परधान के दुआरे जाके एक आखिरी बार मिंटू के देख लेहीं। भारी मन आ भारी कदम से हम अपनी घर के ओर मुड़नीं। दिमाग में बस इहे घूमत रहे कि अब उ नवयुवती का होई आ उ सुघर सा निरपराध लइका क कवन गलती।

❑❑

❍ आजमगढ, उत्तर प्रदेश

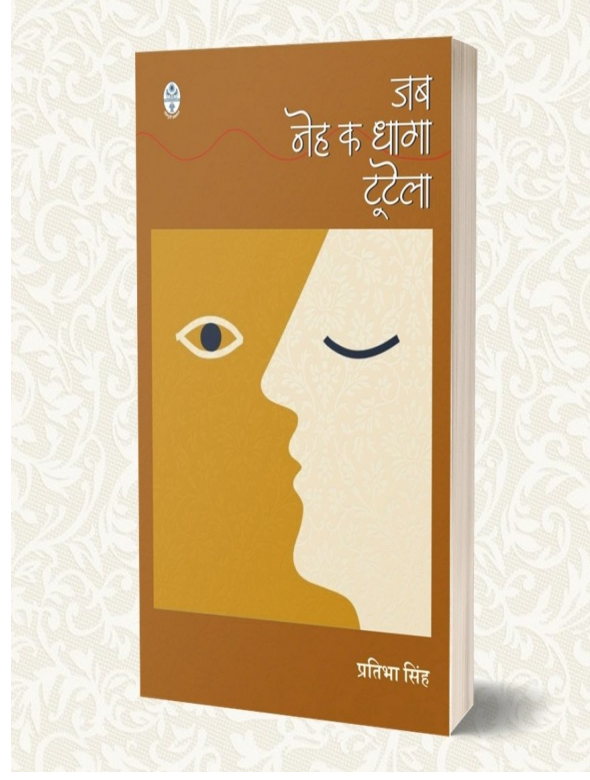

श्याम कुंवर भारती

पिया छोड़ा ना सहरिया

खेतवा जोतवले हइ, पनिया भरवले हइ।
खेतवा निखार कके बियवा छिंटवले हइ।
लगवले हई महंग वाली मजदूरिया हो,
पिया छोड़ा ना सहरिया।
देखा आके आपन खेतबरिया हो।
पिया छोड़ा ना सहरिया।

रोपावे खातिर धान पिया बियवा सुखात बा।
कइसे होई धनरोपनी पिया कुछउ ना बुझात बा।
बिना धनवा बिना होई ना अब गुजरिया हो,
पिया छोड़ा ना सहरिया
देखा आके आपन खेतबरिया हो।
पिया छोड़ा ना सहरिया।

सासु धान रोपिहे ना ससुर खेतवा जोतिहे ना।
ननदों मोबाइल छोड़िहे ना देवरा कुछउ करिहें ना।
गोदी में लइकवा बुझा मोर मजबूरिया हो।
पिया छोड़ा ना सहरिया।
देखा आके आपन खेतबरिया हो।
पिया छोड़ा ना सहरिया।

केतनो कमइबा पिया अनजवे तू खइबा ।
सुखी जाई खेती पिया आके का तू करबा।
आवा संगवे लुटल जाई खेती के लहरिया हो।
पिया छोड़ा ना सहरिया।
देखा आके आपन खेतबरिया हो।
पिया छोड़ा ना सहरिया।

❑❑

बोकारो, झारखंड

डा.एम डी सिंह

सतुआ भइल किसान

रहिला धइलस राहि राजा कऽ सतुआ भइल किसान
जव गोहूं के दई दरत बा मनई भइल पिसान

हे मन आवा बइठा सोचा
भागी के जिन बांचा-गोंचा
ऊंच नीच जवन भइल तोसे
ओकर मुंह मिलि-जुलि के नोचा

सुना मरदे ना चेतला तऽ जिनगी भइल हेवान
जव गोहूं के दई दरत बा मनई भइल पिसान

महाजन खेती अब करत बा
किसनन गर गेरायं धरत बा
मिलत मजूरा ना किसान के
मजूर मजूरी बदे लड़त बा

उकठल ऊंखि रहरि बिलाइल पलिहर भइल सीवान
जव गोहूं के दई दरत बा मनई भइल पिसान

बरध बगेद के टट्टर किनला
रहट बेचि के दमकल्ल लिहला
पानी बदे तरसबा बबुआ
कुइयां पोखरि भठला मुनला

कहां फलाने अब का होखी तेल गइल ईरान
जव गोहूं के दई दरत बा मनई भइल पिसान

❑❑

गोरखपुर, उ0 प्र0

डॉ प्रतिभा सिंह

तीसरकी बेटी

आज मन भयल कि देख ही आई ओह बच्ची के। एहि बहाने ओकरे माई से भी मिल लेब। न जाने केउनी हाल में होई। भगवान जाने उचित देखभाल त छोड़ा दू जून क रोटी भी नसीब होत होई कि ना। ओइसे हमार जायल ओकरी घरे वालन के ठीक ना लागेला, बाक़िर जाय के त पड़ी ही। हम ओकरी पड़ोस में रहे वाली आठ बरिस के छोट लइकी के बोलवली, जवन रिश्ता में उ नवजात बच्ची क चचेरी बहिन रहे। हमरी खातिर सहूलियत इ रहे कि उ पहिले से ही हमके जानत रहलीं।

“नीला का तू हमके ओ बच्ची के घरे ले चलबू?”

“ले चलब मइडम जी।”

“अच्छा तू बतावा त का हमार जायल उ लोग के ठीक लगी?”

“ना मइडम जी, बाक़िर रउआ तबहूँ चलीं।”

“काहें? अगर हमार जायल उनके बढ़िया ना लगी कि ना हम कइसे चलीं?”

हम नीला क मन पढ़ल चाहत रहनी।

“एह लिए मइडम जी कि उ लोग ओ बचिया के दूध ना पियावेनऽ ठीक से, ओके केहू ना मानेला। ओकर मम्मी भी ना। अउरी ओकर पापा त एकदम ना।”

ओ मासूम लइकी क भावना आहत रहे।

“त एम्मन हम का कर सकत हईं?”

हम छोटकी नीला क मन टटोलनीं।

“एहलिए कि रउआ समझइहें त शायद उ लोग ओ बुचिया क धियान रखें।”

“बाक़िर हमके त ना लागत ह, बाक़िर अब तू कह हऊ त चला एकबार चलिके देखीं जा।”

नीला ठीक बा मइडम जी कहत बत्तीसी देखउनी। हम अगली सुबह ओ आठ साल की लइकी के ले के ओकरी गाँव में पहुंच गइलीं।

उफ्फ, इ का...? बरमदा में ओ एक महीना की नवजात कन्या शिशु के असावधानी से पकड़ के एगो मेहरारू कुर्सी पर बइठल रहे। ओकरी ठीक सामने वाली कुर्सी पर एगो नाई बइठ के कन्या शिशु क बार छिलत रहे। ओ दूनहून के आँख में निरसता रहे। उ ओतनी ही असावधानी से ओकर बार छीलत रहे जेतनी असावधानी से उ मेहरारू उ लइकी पकड़ले रहे। हम धियान देहनीं उ बच्ची के कोमल कपार पर बार छिलववले से खून निकलत रहे। उ बच्ची तेज-तेज रोवत रहें। ओकर रोवल-सुनके नीला क आँख भी डबडबा गइल।

“अरे जरा ठीक से बुचिया के पकड़ ला, देखा त ओकरी कपार से केतना खून निकलत बा।”

बाक़िर ओ मेहरारू पर हमरी कहले क कउनो असर ना भइल। हम ओ बच्चा के महतारी से मिलल चाहत रहनी, बाक़िर उ मेहरारू इ कहिके हमके अंदर जाए से मना क देहलस कि “ओकर तबियत ठीक ना बा। अउरी आज त मूर (मूल नक्षत्र) बा। उ आज ना मिल सकी।”

एतना कहिके उ मेहरारू मुँह बनावत दूसरी ओर मूड़ी घुमा लेहलस। हमहूँ आपन मन मार के वापस चलि अइनी।

हमके ठीक से याद ह उ साँझ, जब उ मेहरारू हमसे मिले आइल रहे। हमार काम वाली बतउले रहे कि उ मेहरारू ओकर पड़ोसी रहे। आ ओके हमरी मदद क जरूरत बा। हम अपनी काम वाली से पूछलीं कि के कइसन मदद। त उ कहलस कि रउआ परेसान न होखी ठीक मेहरारू ह, उ बस अभागी बा। ओकरा के रउआ से बड़ा उमीद बा। हम ओकरा से मिले खातिर हामी भर देहली। फिर त उ अगली साँझ हमसे मिले आइल गइल।

“मइडम जी, हम सुनले हईं रउआ समाज सेवा करत हईं?”

“ना त, ई तोहसे के कहलस ह, हम त लेखक हईं।”

“अब जवन होखे मइडम जी। हम जाहिल मेहरारू का जानी। बस रउआ हमार पार-घाट लगा देही।”

“कइसन पार-घाट?”

“हम पाँच महीना क पेट से हईं।”

“हम्म, त?”

“त मइडम जी, हमार पति दिल्ली, रहत हउवन, इहाँ केहू अइसन ना बा कि हमार मदद क सके।”

“काहें? तोहार सास-ससुर, ननद-देवर, जेठ-जेठान केहू ना बा? नइहर त होई?”

“अरे मइडम जी, हम रउआ से का बताईं? हमार मरद हमके हर तरह से बरबाद कई देहलस। सास-ससुर आ जेठ-जेठान त ओकरी चाल से बहुत पहिलहीं हमके अलगिया देहलन। अकेले रहल हमार मजबूरी हो गइल ह। जब हम घरे में केहू से मदद लेहल चाही ना त उ फोन पर खूब गाली-गलौज करेला। उ कहेला कि हम केहू से बोलब त उ हमार नटई दबा देही। अब बताई बहिन जी जेकर

पियक्कड़ मरदे अपनी मेहरारू के संगे अइसन करी त ओकर मदद केहू अउरी कइसे करी।"

"बाक़िर तोहार मरद तोहरी संगे एतना रूढ़ व्यवहार काहें करत हवन? भला कउनो अदमी अपनी मेहरारू के अपनिए परिवार से ना बोले दे, ई त हम पहिली बेर देखत सुनत बानी।"

"अब का कहीं मइडम जी, भगवान तनकी सा ठीक सकल आ उजर चमड़ी दे देहले हवन। बस हर घड़ी ओके इहे चिंता लागल रहेले कि हम केहू के संगे भाग न जाईं अब रउवे बताईं मइडम जी भला हमके भागे के रहत, त उ आ चाहे केहू अउरी का रोक लेही हमके।"

"अच्छा, त तू हमसे का चाहत हऊ?"

"तनि एक बार हमके कउनो बढ़िया डॉक्टर से देखा देहीं रउआ। तसल्ली हो जात कि हमार बच्चा ठीक बा।"

"हम्म ठीक बा, काल्ह सबेरे दस बजे आ जइहा देखा देब।"

उ जब चल गइल त हमार काम वाली बतउलस कि इहो कुछ कम ना हईं एकर केहू से ना पटेला। एकरी खातिर ई अपनहीं जिम्मेवार बा। जबान क तेज हिय, सास-जेठान के पट-पट जवाब देबेले। अब तू चाहा कि सब तोहार कामो करे आ तू केहू क एगो बात बरदासो ना करा, त इ कइसे होई। अउरी बाकी त हम ओकरी बारे में सब रउआ के बताई देहले बाटीं।"

"हम्म।"

ओ मेहरारू क नाम संतोषी रहल, ओसे ले बड़ तीन बहिन आ दुई गो भाय रहलन। जेउनी बरिस उ जनमल ओही बरिस एतनी बरसात भइल कि माटी क घर ढह गइल। बाप मड़ई बनावे खातिर बास काटत रहे तबहिएं कउनो बिषहर कीरा काट लेहलस। बाप त ना बचलन, पीछे रहि गइलन पाँच गो छोट लइका आ विधवा मेहरारू। बहुत मुस्किल से उ मेहरारू पाँच गो लइकन के पललस-पोषलस। बेटा बड़ भइलन त ईंट-भट्ठा पर काम करे लगलन। लइकी बड़ भइनी त अगल-बगल की गाँव में नीक-गत देख के बियाह गइलीं। संतोषी अपनी दूनो लड़की बहिन से भी सुधर रहे, बाक़िर ओकरी नसीब में मनचाहल बर कइसे रहे, आखिर रहल त उ गरीब ही ना। उ अठारह बरिस क सुकोमल लइकी बियाह देवल गइल चालीस बरिस के महेन्दर से। महेन्दर छ फुट क लम्बा-चौड़ा आ साँवर रंग क रहलन। संतोषी गाँवे के स्कूल से कक्षा आठ तक क पढ़ाई कइले रहलीं। बाक़िर ओकर मरद त एकदम्में निपढ़ रहे। बाक़िर भाई संतोषी के अपनी नटई क फाँस ना बने देहलन। उ जइसहीं अठारह बरिस क भइलीं, उ बियाह देहलन जइसे-तइसे बाप के उमिर के अदमी से।

"फेर त ए लइकी के साथे एकर भागो बढ़िया मजाक कइलस। एकर मदद करे के चाही।"

अगिला दिन ठीक दस बजे उ हाजिर रहे हमरी दरवाजा पर।

"मइडम जी, हमरी लगे त पइसा-रूपिया ढेर ना ह। तनकी सी रूपिया जुटा के धइले रहनी, रउओ ले लेहीं आ एसे अधिका लागी त रउरा लगा देब। हम तनी-तनी कइके रउआ क चुका देइब।"

उ हमके मुट्ठी से मुड़ल-तुड़ल तीन या चार गो सौ क नोट थमावत कहलस।

"अरे ना-ना, ई पइसा रखा तू, हम जवन लगी लगा देब, आ तोहके लउटवले क कउनो जरूरत ना ह।"

हम ओकरा के डांट के कहनी। उ संकोच से पइसा खूंटा में बांध लेहलस।

"उ हमार मरद जबसे कमाए गइल ह, तबसे हमके कुछऊ ना भेजेला। एक ठो फोन तक उ हमके देहलहीं ना ह कि गाढ़े-सकेते केहू से बतिया लेहीं।"

"काहें? पइसा ना ह आ कि रखहीं ना देला?"

"अरे मइडम जी हम फोन रख लेब त केहू से बतियावे ना लागब। उ कहेला कि मेहरारू जात पर भरोसा ना करे के चाही।"

"अरे, तोहार पति पागल ह का?"

"मइडम जी, कहँ कि बियाहे ना होत रहे आ भाग फरियाइल कि बेटी के उमिर क ठीक-ठाक सकल वाली लइकी मिल गइल। एहिलिए हमरी उपर एतनी सक-सुबहा करेला उ।"

संतोषी बिना बाप के लइकी रहल आ गरीब महतारी के कोख से जनमल रहल। भाइयो बियाह के बहाने बहिन के बनवास दे देहलन। एहर ओकर मरद हर घड़ी ओकरी पर पहरेदारी लगवले रहत ह। संतोषी त इहाँ ले कहत रहे कि अगर दुई लइकिन के बाद एक बार जब तीसरकी बेटी भइल त उ हम तीनों माई-बेटी क नटई रेत के मार देही। उफ्फ, केतनी पीड़ा होले आजो लइकिन क दुर्गति देख-सुन के। खैर अगिला दिन हम संतोषी के देखा देहलीं अस्पताल में। डॉक्टर बतवलन कि खून क कमी ह, शरीर बहुत कमजोर ह, यदि अइसहीं रही त उ बच्ची बची ना। संतोषी एकबार दबल जबान से हमसे कहलस–

"मइडम जी, इ लोगन से कहीं त तनि हमके पता कइके बता देबे। हमरी पेट में बेटा बा कि बेटी।"

हम ओकरा के डांट के चुप करा देहनीं। बाक़िर डॉक्टर सुनि लेहनी। उ ओकरा के तसल्ली देत कहनी–

"इ तोहार तीसरका बच्चा बा, आपन उमिर देखा आ सोचा कि का तोहार उमिर तीन बच्चन क महतारी बने क बा। देखा, पहिले त आपन धियान रखा, ताकि इ बच्चा हाथ लग सके आ सबसे जरूरी बात कि अब बस। आगे चउथा की बारे में मत सोचिहा।"

"डक्टराइन मइडम, हमरी चाहे आ ना चाहे से का होत ह। उ मनिहें तब्बे ना।"

"अरे, सरीर तोहार ह कि उनकर ह। झेलत तू बाटू कि उ? बात करत हऊ।"

उ चुप रहल, बाक़िर हम समझत रहनी कि उ दुब्बर-पातर कमजोर मेहरारू के एगो जल्लाद पति के खूटा से बान्ह देहले बाडें ओकर निर्मोही भाय। बिना कउनो दया-मया क ओ आदमी के ओकरी सरीर के भोगे के बा बस। एगो अस्सी-नब्बे किलो की भरल-पूरत पहाड़ अस अदमी के सोझा एगो चालीस-पैंतालीस किलो के दुब्बर-पातर मेहरारू क का औकात बा।

हॉस्पिटल से लउटत क हम ओकरा के खूब समझवलीं कि उ आपन आ अपनी बेटिन क खूब खियाल रखे। बेटा-बेटी में अब कउनो फरक ना रह गइल ह। बेटिन क परवरिस ठीक से करबू त इ बेटन से ज्यादा सेवा करिहें। उ हमार बात ध्यान से सुनत त रहे बाक़िर हर बात के जवाब में बस एतना ही कहे कि हमरी चहले से का होई मइडम जी, अब उ जवन कहे या अब उ जवन समझें। साँच कहीं त ओकरी ए लाइन से हमके बहुत झल्लाहट होत रहे। न जाने काहे हमके उ मेहरारू बिलकुल नापसन्द हईं जवन अपना खातिर स्टैंड ना ले सकेनी।

हम अस्पताल से ओह मेहरारू के ओकर घरे के रस्ता पर छोड़ के मुक्ति पउनी। ओइसहूँ ओ रूदाली मेहरारू से हम बोर हो गइल रहनी। हमके अपना पर गुस्सा भी आवत रहल कि न पता काहे हम अइसन मेहरारू क सहयोग करत हईं जवन अपनी या अपनी बेटिन खातिर आवाजो ना उठा सकत हियऽ। हम निश्चय कइनी कि अब अउरी भावुक ना होखे के बा। उ रूदाली मेहरारू एगो बेटा खातिर बेटिन क लाइन लगावत बा त ओइसहूँ हमरी घृणा क पात्र बा। अब कउनो कीमत पर ओकरा से दूरी बनाके रहब। करीब बीस-बाइस दिन बाद ओ मेहरारू क फोन आइल। उ रोवत रहे, आ बेतहासा रोवत रहे।

“अरे तू कहो रोवत बाटू? का भइल? कुछ बतइबू?”

“मइडम जी, काल्ह रात से उ आइल बाटन घरे। उनकरा के देखतहीं हमार दूनो बुचिया रोवे लगलीं हँ सन। उ मारे डर के घरे में ना जात हईं सन।”

“काहे, का तोहरी मरद क सिंग जामल बा का कि तोहार बुचिया देख के डेरात हईं सन?”

“अरे रउआ ना जानब मइडम, उ बिना बात के बात हमरी बुचियन के पीटे लगीहन।”

“अरे त का तू अपनी बुचियन के बचा ना पावत हऊ।”

“उ कसाई हउवन, रउआ उनकर गुस्सा ना जानत हईं।”

हमके पता चलल कि उ गर्भवती मेहरारू के देखभाल खातिर आइल ह। बाक़िर इहाँ त ओकरी अइले से दूनो बेटी आ मेहरारू मारे दहसत के काँपत बाटीं। उ लगभग रोजे उन्हन के पीटे। हमार मेड बतवलस कि ओकर मरद हमहूँ के खूब गारी देत रहल ह। कारण इ रहल कि हम ओकरी मेहरारू के हॉस्पिटल ले जाके देखउनी हँ। एक दिन उ हमके फोन भी कइलस–

“अरे मइडम, तू त लिखले-पढ़ले हऊ, फिर काहें हमरी गिरहस्ती में डंडा कइले बाटू?”

का भइल? आ तू के हउआ?”

“हमके त ना बुझात बा कि तू एतनी अनाड़ी बाटू। त अब सुनि ला कान खोलके। उ हमार मेहरारू हियऽ, हम चाहे कुछऊ करीं ओकरी साथे, तोहसे का मतलब। आज त हम परेम से समुझावत हईं हमरी मेहरारू के मत पढ़ावा। हमके कउनो तमासा ना चाही बस।”

हम कुछ बोलीं ओकरी पहिलहीं उ फोन काट देहलस। हम ओ जाहिल आदमी से उलझल भी ना चाहत रहनीं। एह लिए हम ओकरा के कॉल बैक ना कइनी। करीब महीना भर बाद हमार मेड बतवस कि संतोषी का तबियत बहुत बिगड़ गइल बा। उठा-पठा के अस्पताल ले गइल बा ओकर मरद। अब जवन भी होखे हमरा चिंता त लगिए गइल–

“भइल का ह ओके? हम त कहलहीं रहनीं हँ कि उ सरीर से श्रम ना करे बहुत। माँ अउरी बच्चा दूनो कमजोर हवऽ।”

“अरे मइडम जी, उ ठहरल मेहरारू जात कय भी का लेही। उ जल्लाद आदमी के रोजे मेहरारू क देह चाही भोगेके। संतोषी ओके मना कइलस कि कम से कम एह हालत में त ओके छोड़ दे, बस एहि पर उ ओकरा के खूब पीटलस।”

“ओह, उ अभागी मेहरारू नइहरो से तिरस्कृत आ ससुरा से भी मारल। भगवाने मालिक बाड़े ओकर।”

संझा तक खबर मिलल की डॉक्टर ओके एडमिट कई लेहलन। बच्चा तुरंत पेट चीर के निकालल ना गइल होत त महतारी अउर बच्चा दूनो ना बचतन। बाक़िर हमार जवन सबसे बड़ उत्सुकता रहल उ इ जाने क रहल कि ओकरा के बेटा भइल बा कि बेटी। बाक़िर पता चलल कि एहबार फिरो बेटी भइल बा। ओकरी घर में त मातम पसरबे कइल, हमरियो मन में उदासी बइठ गयल। एगो बेटा खातिर ओकर दुर्गति देखके त भगवान से इहे प्रार्थना रहल कि ओकरा के बेटा ही हो। बाक़िर भइल बेटी, तीसरकी बेटी।

आ तीसरकी बेटी भइले कि बाद ओकर जवन दुर्गति भइल कि हमार जी दहल गइल। आपरेशन से उबरे में समय त लगहीं के रहल। बाक़िर ओकरा के त अस्पताल से घरे लियावे खातिर ना त पति तइयार होखे न सास-ससुर। सब इहे कहे एक त तित लउकी उप्पर चढ़ल नीब क डाढ़। हमार मन ना मानल, हम ओकरा के देखे खातिर हॉस्पिटल पहुंचली, त उ हमारा के देख के रोवे लागल–

“दीदी हम का करी? केहर जाईं? का एतनी बड़ दुनिया में हमरा खातिर कहीं कउनो जगह ना ह।”

“देखा तू अधिका मत सोचा। अबहीं त बस ई करा कि ससुरा मत जा। तोहरी पास जवन होखे, ओके लेके नइहर चलि जा।”

“दीदी रउआ शायद जानत ना हईं न, कि हमार नइहर त एतना गरीब ह कि भरपेट खाना खातिर भी तरसेला।”

“कउनो बात ना ह। तू उहाँ नून-रोटी खा लिहा बाक़िर कुछ

केशव मोहन पाण्डेय

भकजोन्ही

बइठाका के इज्जत बहारन में ना फेंकाव, से सुँघनी लाल दिन-रात घर के मान बढ़ावे खातीर तेलो बेल कऽ लेलन। उनका घर में उनकर धरम पत्नी जीतन के साथे बेटा सुरुज आ बेटी सरोजो बाड़ी। लाला बड़ा तेज हवें। जब कहीं परिवार नियोजन के चर्चो सुने के ना मिलत रहे, तब्बे ऊ अपने परिवार के संख्या पर ब्रेक लगा दिहलें। सुरुज त सोंझ सड़की के सीधवा मुसाफिर हवें। ना नौ जानेलन, ना छव। एक बेर त ईऽ कहल जा सकल जा ता कि उनके देंह बाप के गुन से कम आ महतारी के गुन से ढेर बनल बा। सरोजो एगो बेटी के धरम निभावे में टोला भर में एक नम्मर पर। सभे जानेला कि सुँघनीए लाल डेरा गइलें, ओहके पढ़े ना दिहलें, ना त ऊ सरोजवो ईए बीए पास हो गइल रहीत। गुनी त एतना कि ओहके गुन देख के बड़का-बड़का घर के बहुरियो लोग दाँतें अँगुरी दबाए लागेला लोग।

जीतन कम ना हई। साइत उनकर भगिए बहरा गइल रहलऽ जे ऊ सुँघनी के संघाती बन के एह घर में अइली। ओह बेचारी के रतियो भर तिरछोलई ना भावेला। ऊ तऽ सुँघनी के गइयों में हँ, भँइसियो में हँऽ। ऊ बेचारी त हर ऊँचका अथान के देवीए-देवता समुझ के अँचरा पकड़ के दसोनोह जोड़ ले ली। ऊ जेही जेठ-जेठानी के देखेली, आजुओ, मुड़ी के बार उजरो हो गइला पर, चमकत टिकुली ले घुँघुट सरकाइए लेली। ऊ मेहरारू भले पढ़ल-लिखल ना हऽ, कलम-दवात से भेंट ना हऽ, बाकिर ऊ बुझेली कि मेहरारू के गहना लाजे हऽ। जीतन में एह लाज के साथे सहुरो हऽ। चलला-फिरला, बोलला-बतिअवला, सब में उनकर लाज झलके ला।

सुँघनी लाल तऽ अजबे लाल हवें। ना तीन में, ना तेरे में। बेआर आह के बेओहार करे के कला केहू उनसे सीखेऽ। समय के साथे आपन आ बिरान में फरक डाल के ऊ आपन गाड़ी चलावे में माहीर हवें। बतीओ सहीए हऽ, अगर उनका में ईहो कला ना रहीत तऽ चार कठा खेती ले के ऊ चार परानीन के गाड़ी केऽ तरे डगरइते? . . . ओहू में सूरुज बहरी पढ़ेलन। विधाता सुँघनी लाल के साइत एही खातीर बनवलहीं बाड़न। काहें कि अइसन लोग तब्बे दाल गला सकेला, जब ओहमें दू अछरीयो ज्ञान होखे। ओकरा बोली से मन के मताऽ देबे वाला महुआ के रस चुअत होखे। ओके चेहरा पर हमेशा भोरहरीया के बोलिहा जिन। आखिर में तोहार भाय-भउजाई ही मदद करिहें।"

ओह दिन त शायद ओके हमार बात समझ में आ गइल आ कि आपन मजबूरी समझ, उ मेहरारू नइहर चलि गइल।

पूरा पचीस दिन बाद संतोषी ससुरा अइनीं। उ बच्ची मूर में पड़ल रहे त शांति खातिर अट्ठाइस दिन बाद पूजा होखो के रहल। उउरी इत्तेफाक से आज जब हम ओ बच्ची के देखे पहुंचली, त ओकर इ दुर्गति।

ओह दिने त हम चुपचाप बच्ची के देख के वापस आ गइलीं। बाक़िर दिमाग में त इहे घूमत रहे कि अब ओ बच्ची क का करिहें उ ओकर ससुरा वाला। उनहन के निर्ममता से हमके चिंता होत रहल। एहलिए हमके संतोषी के समझावलो जरूरी रहे। हम एकदिन चोरी से ओके घरे बोलवली। हमके उम्मीद कम रहे, बाक़िर उ आ गइल।

"देखा संतोषी हम समझत हईं कि एक समय तू कउनी परिस्थिति से गुजरत हऊ, बाक़िर तोहरा के धीरत रखे के परी। अउरी सबसे जरूरी बात कि तोहके अपने लिए ना सही अपनी बच्चियन खातिर मजबूती से जिए के परी। काहें से कि अब तू अकेले ना हऊ कि रो-गाके बिता लेबू। तोहरी पीछे तीन गो लइकी हईं। एगो बात गाँठ बान्ह ला कि ओ लइकिन के तोहरी नीयन जिनगी ना देबे के ह। स्वाभिमान से जिए के ह त अपने के मजबूत करे के परी। ओइसहूँ इ समाज मेहरारू के कहाँ जिए देला शान्ति से। ओपर से तोहार तीन गो लइकी। तूहईं डेराइल-सहमल रहबू त तोहरी बेटिन क का होई।"

हम आपन बात ओके कहाँ तक समझा पउनी हम ना जानत हईं। बाक़िर ओकरा के एतना समझ आइल कि बेटी बोझ ना होले, जेतना कि इ समाज ओके गिरावेला, उ ओकर पात्र ना हियऽ। अगर ओके सही शिक्षा आ संस्कार देहल जाए त उ कई लइका पर भारी हियऽ। उ मरद के बता के थोड़े हमरी घरे आइल रहे। ओकरा के जाए के जल्दी रहल। बाक़िर जात-जात उ जवन बात कइलस ओसे हमके तसल्ली मिलल।

दीदी हो, दुनिया चाहे जवन समझे, बाक़िर हमार तीसरकी बेटी सराप ना ह, इ बरदान हियऽ भगवान क। अबहीं ले हम भटकत रहनी ह, बाक़िर ओकरी अइले से ही हमके स्पष्ट रस्ता मिलल ह। अब हम तोहके बचन देत हईं कि हमार सगरो जीवन एह तीनो बिटियन के खातिर समर्पित ह। आ एक दिन हम एक दुनिया के देखाइब कि हमार बेटिन पर हजार लइका कुर्बान हवन।"

उ चलि गइल एतना कहिके, बाक़िर आज हमके पहिली बार लागल कि ई मेहरारू साधारण नइखे। ओकरी चेहरा पर जवन आत्मविश्वास से तेज आइल बा, उ ओकरा के मजबूत आधार देही। सही में तीसरकी बेटी हरदम रुदन करे वाली डेराइल-सहमल मेहरारू के एगो नई दृष्टि दे देहलस।

❑❑

❍ आजमगढ, उत्तर प्रदेश

अँजोर फूटत होखे। अऊर ऊ तीत-मीठ, सब बातीन में चवनीया मुस्की छाँटत होखे। अदा अइसन कि सामने वाला तरस जाय कि ब्रह्मा जी काहें ना अइसन हमरा के गुन दिहलन।

सुँघनी लाल बिधना के बनावल एगो अइसने जीव हवें। उनसे बजारी के दर्जन भर दवा दुकानदारन से ठेहुन भर चलेला। डंडी मारे वाला बनीयो लोग ललवा के देखते सलामी ठोंके ले, आ मनुहारो करें ले कि अबकी बेर हमरे दुकान पर गोंहकी लाएब। सुँघनी लाल ओह लोगन के सलाम के जवाब में कमर ले आपन नटई नेहुरा लेलन। कपड़ा वाला मरवाड़ी से ले के, दर्जी, मोची, सबसे ललवा के पटरी बइठेला। पहीले-पहील लाला भले ही परहीत खातीर बाजारे गइल होइहें, बाकीर जब दुकानदारन से असीम आव-भगत पवलें तऽ होशियार हो गइलन। तब से परहीत में लछमीयों के आशीष भेंटाए लागल। लाला के एह कला से ढेर आमदनी भइल। अब उनके घर लिख से लाख हो गइल। जिनगी के रंग बदले लागल। उनके लइकनों के आँखि में एगो दोसरे ढंग के अँजोर होखे लागल। सही बात तऽ ईऽ रहे कि चदरा से बेसी पाँव पसराए लागल। मानल मन बड़ा जल्दी बहके ला बाकीर बहकल मन बड़ा धीरे से मानेला। दुनिया बदलत रहे। बदलत एह दुनिया में निपढ़ो लोग संसारिक बेओहार निभावे वाला बुद्धि तऽ जाने लगलन। सुँघनी लाल के दाल अब गलबे ना करे। खर्चा बढ़ गइल आ आवग कुछू हइए ना। बूढ़ होत छाती के बाती में एतना जाँगरे ना रहे जे अहरी-बहरी जाऽ के कुछ मेहनत कइल जाव। खैर, जे मुँह देहले बा, ऊ कवनो जतन तऽ करबे करी। भले आलसी लोग भगवाने के बोल देलन तऽ का हऽ, उनके शरण में तऽ सभे जाला। सबके ऊहे न देखेलन।

एतना दिन के अंतराल में बाजारी के दुकानन पर नवका-नवका सेठ बइठत बाड़ें सो। पुरनका शायद रिटायर हो गइलें सो। लाला पुरनका सेठन से ढ़ेर पटरी बइठला के वास्ता देऽ के नवकन से उधार-पाँइच शुरू कऽ देहलन। महीना-दू-महीना के वादा जब बरीस निचकावे लागे तऽ सेठन के पारा चढ़े। - 'काऽ भइल ए ऽ मंशी जी? . . . ढेर वादा खिलाफी हो ताऽ। . . कुछ नया पुरान हिसाब होत रहेला तऽ ठीक रहेला।'

काने के जरी ले मुस्की मारत सुँघनी लाल बड़ा अदब से जवाब देसऽ, - 'हँऽ बेटा, हमहूँ जानऽ तानी कि पान के पŸ ा ा आ पइसा फेरात रहे तब्बे ठीक हऽ, नाऽ तऽ सड़ला के डर रहेला। . . . बाकीर काऽ करीं होऽ? . . देखऽ ना, लखनऊ में एगो हमार भाई रहेला, ऊऽ कहलस कि घबड़ा मत, दिवाली में हम बीस हजार रूपया ले के आवऽ तानी। . . पँइचा-उधार सधाऽ के तहरा खातिर राशन-पताई खरीद देब।'

अब तऽ लाला के एक्के दाव में लइकाइएँ में ठकुराई करतऽ ऊ सेठ राम के सब सिट्टी-पिट्टी बंद हो जाव। ऊ दोसरे कल्पना में बिचरे लागें। - 'चलऽ, एह उधार देहला के एतना तऽ मुनाफा होई कि बीस हजार के ना तऽ पाँचो-सात हजार के सामान लाला हमरा दुकान से ले जइहें।'

अइसहीं अजीब-अजीब के चमक देखाऽ के लाला अउरीओ उधार के सुतार बइठा लेलन। जवन सेठ लोग सामान निकलला में तनिको देर करें तऽ लाला गरमइबों करेंऽ, - 'का हो मर्दवा, . . काहें देर हो ताऽ? . . . सामान देबे के मन नइखे करत तऽ छोड़ऽ। साफ-साफ कहि दऽ। हमरा खातिर ढेर दुकान बाऽ। उधारे न ले तानीऽ, आज ना त काल्ह दिअइबे करी। . . . कवनो खैरात थोड़े माँगऽ तानीऽ।'

सुँघनी लाल के एह अचूक प्रहार से दुकानदार राम के बहाना बनवला के अलावा अउरी कवनो दावे ना मिलेला। आपन दाँत चिआरत कहे लागेला लोग, - 'ना चाचा! . . हम दोसर कुछ सोंचे लगनी हँऽ।'

'बेटी जवान हो गइल। लइका पढ़ के घरे आ गइल। एक्को पाई लगे ना। कहाँ से काऽ होई? . . . कबले दुकानदारन से आइस-पाइस खेलल जाई? . . चाहें छोड़ऽ। का चिंता करे के बाऽ? . . जे तरे निबहऽ ता, ओही तरे निबहीऽ। जे सिरजले बाऽ, ऊहे पाली-पोसी। ना कपार ठोंकला से लकीर बदली आ ना दुखड़ा रोअला से बिपत जाई। जवने तरे चलऽ ता, कुछ दिन अउरी चलेऽ। आगे सोंचल जाईऽ। . . . सब दिन अन्हारे ना नु रहीऽ। कबो तऽ बादर बिलाई आ किरीन फूटीऽ। ईहो तऽ एगो कला ही न हऽ। एह बनीयन से उधार लेबे के सबके ढंग थोड़े न बाऽ। . . . आम, नीबू, बनीया . . . चाँपे तऽ रस देसुऽ। . . बस एक्के गो चिन्ता बा कि ऊ हमार पुतवा ना जाने, नाहीं तऽ नवका दुनिया के ऊ नवही, उल्टे हमरे के बाउर बुझे लागी। ऊ काऽ समझताऽ कि एड़ी के पसेना मुड़ी पर चढ़ाऽ के आ नस-नस के साहस बटोर के झूठ बोले के पड़ेलाऽ। ओह तरे के कला दइब सबके थोड़े देलन। बाभन कुल में जनम भइल रहीतीं तब काऽ? तब तऽ दूनो हाथ में लड्डूए रहीत। पहिले के जमाना में एक मुठी चिउड़ा पर अन्हरिया रात में दउड़े वाला आ धरती के देवता कहाए वाला ऊ जीव कब आपन खाला? जानकर आटा, आनकर घी, चाभऽ-चाभऽ बाबा जी।' - इहे सब सोंचते सोंचत लाला के बुझइबे ना कइल कि कब सरोज एक गिलास पानी आ झोला दे गइली। ऊ तऽ सोंचला के दुनिया तब पराइल कि जब सूरुज आ के कहले, - 'बाबुजी, . . आज से हम बाजारे जाएब।'

बेटा के ई बात सुनऽ के सुँघनी लाल के तऽ साँप सूँघ लेहलस। भकुआ गइले। काऽ कहें? बात टाले खातीर गिलास के पानी गटई में गटकावत कहलन, - 'तूँ का खरीदबऽ? . . . अभीन शहर से नया-नया घरे आइल बाड़ऽ, अभीन भाव-ताव समझऽ। बाजार में ठगाऽ जइबऽ।'

अपना पहिलका सिद्धान्त-युद्ध में बेटा से जीत के सुँघनी लाल

अइठत बाजार के डगर धऽ लिहलन। बाजारे तऽ गइलन, बाकीर आज गिलास के पनीयो ना जतरा बनवलस। शायद अब असलीयत से सामना करे के बेरा आ गइल रहे। आज तीन-चार दुकान में गइलन। कहीं दाल ना गललऽ। सबसे एक्के बात सुने के मिलल, - 'जबले पहिलका ना मिली, अब अउरी एक्को चिटुकी उधार ना मिली।'

मुँह लटकवले घरे आ गइले तऽ पहिलका भेंट सूरुजे से भइल। चवन्नी मुस्की वाला अपना बाबुजी के चेहरा पर बारह बजत देखलन तऽ ऊ डेरा गइलन। पूछलन, - 'का भइल बाबुजी! . . . समनवा कहाँ बा?' जब सुँघनी खाली हाथ बाजार से घर के राह पकड़ते, तब खाली इहे सोंचत अइले कि जवाब का देबऽ? ऊ जानत रहले कि सभे चुप रही बाकीर ई सूरुजवा ना मानी, जरूर पूछी, से सहीए भइल। कहलें, - 'पता ना कवना के मुँह देख के गइनी हँऽ कि जतरा पर पानी फेराऽ गइल हऽ। . . शायद सुरती निकालत में कहीं पइसवे गिर गइल हऽ।' अपने बाप के चोखा मुँह देख के सूरुज सहीए बुझ गइले। आ ऊ एक बेर फिर से अपने जनमल बेटा के हराऽ दिहलें। उनके चेहरा पर एह बात के गर्व झलके लागल। . . ओह दिन बिना तेल-तासने के तरकारी रिन्हाइल। सूरुज फेरा में पड़ गइलन कि एही घर से हमरा खातीर डिब्बा के डिब्बा घीव जात रहल हऽ आ अब तेलो खातीर तरसे के पड़ ताऽ। उनका पढ़ल-लिखल कपार में भी ई ना समाइल कि बाप-महतारी कवन-कवन अधापन कऽ के बेटा-बेटी के पढ़ावे ला। अरे, माई-बाप तऽ अपने एक चिटुकी नमक चाट के पानी पी लीऽ बाकीर संतानन खातीर सिरनीए-मलीदा चाही। वाह रे माई-बाप अइसन जीव! सहीए बात बुझाला कि एतना पाप बढ़ला के बाद भी धरती माई-बाप जइसन जीवे के कारण धीरज धइले बाड़ीऽ, ना तऽ कब्बे पलट गइल रहतीऽ। सुँघनीयो लाल एगो बापे न रहलें। ऊ काऽ बतावें कि कपार पर करजा एतना हो गइल बा कि बोझ से कब फाट जावऽ, कवनो ठेकान नइखे। दूसरको दिने जब खालीए वापस आ गइलें तऽ लाला दुकान ना खुलला के बहाना बनवलें। कहलें कि हड़ताल बाऽ। ई सुन के सूरुज कुछ देर सोंचे लगले कि ई शहर के बेमारी हड़ताल एह गाँवों में आ गइल। वाह रे प्रगति। बाकीर तीसरका दिने सुँघनी लाल का कहें? . . कुछ-कुछ सच्चाई के लगे जाहीं के पड़ल। बाकीर ओहू सच्चाई के बेचारू मान बचावे खातीर झूठे के चादर में लपेटले रहले। कहले, - 'पइसा तऽ बा नाऽ, से उधार लेबे के हिम्मत ना भइल हऽ। आज ले मुँह नइखीं खोलले, तऽ का खोलीं। कहीं जबान खाली चल गइल तऽ इज्जत गाछे टंगा जाई।' सुँघनी लाल के पता ना कवन मजा आवे कि ऊ अपना घर के आ आपन सच्चाई सबसे छुपवलें रहें। बेटा तऽ उनकर जामल हऽ। ऊहे तऽ उनके मूल धन हऽ। ओहसे का पर्दा? . . . बेटी तऽ इज्जत हऽ। ओहके ओढनी से खाली ओके तने ना ढँकाला, माई-बाप के इज्जतो ढँकाला। बाप के नाक ऊँच करे खातीर कुल-मरजाद आ रहन के निर्वाह करत सरोज से तऽ कुछ छुपावे वाला रहबे ना कइल। बाकीर सुँघनी लाल के ना जाने काऽ मजा आवेला। आ जीतन! . . . ऊ तऽ मेहरारू ना, छछात देवी हई। और सब तऽ दूर फेंकी, सबसे बढ़ के तऽ ऊ इनकर पत्नी हई। पति-पत्नी के रिश्ता से समर्पित और कवन रिश्ता हो सकेला? . . जब दू देश के दू गो चिरई, आग के साक्षी मान के साथे जीए-मुए के कीरीया खा के तन आ मन में बस जालें तऽ ओही के तऽ पति-पत्नी कहल जाला। बाकीर लाला तऽ ओह जीतन से भी कुछ ना बतावेलन।

अब बेटा पढ़ के घरे आ गइल, जइसे उनके पोल खुलला के बेरा आ गइल। बाप के ओह बात पर सूरुज कहलें, - 'सिंहासन काका के गुड्डुआ दुकाने पर नऽ बइठेला, ऊऽ तऽ हमार ईयार हऽ। दऽ हम ओकरा से उधार ले आईं।' लाला तऽ अन्हरीआए लगले। अब ना बनल, तब बनल। मामला बिगड़े ना, से कहलें, - 'तूँ का जइबऽ। तहार इयार हऽ तऽ का हऽ, दुकानदार केहू के ना होलें बाबू। . . ऊ तहरो के ठग दी। . . हमहीं बिहान जाएब। एह बेरा केहू तरे डगरे दऽ। परान हार गइल बाऽ।' सूरुज तऽ चुप हो गइलें, बाकीर बाप बेटा से कुछ छिपा रहल बाड़े, ई बेटा पढ़ लिहलस। जेठ अपना जवानी पर रहल। पछीम के कीरीन मलुआत रहे। साँझ के चिन्हा चारू ओर लउकत रहे। गाछ-वृक्ष धुर्रा से भरल रहे। चिरई-चुरूंग चेंव-घेंव कऽ के आपन-आपन घर खोजत रहलें सों। सुँघनी लाल डोल-डाल गइलें तऽ सूरुज बाजारे चल दिहलें। गुड्डू अपना दुकान पर बइठल रहले। सूरुज के देखले तऽ अँकवार में भर लेहले। सूरुज के हाथ पकड़ले अपना नियरा बइठवले आ लगले हाथ पूछियो लेहले, - 'का होता सूरुज?' 'बी. एस सी. के परीक्षा दे के अभीन तऽ घरहीं बानी।' एगो लमहर साँस छोड़ते गुड्डू कहलन, - 'अब कुछ करऽ कि काका के कष्ट पराय। बड़ा परेशान बाड़न। . . आच्छा, ई बतावऽ कि तहार हऊ चाचा कबले अइहें?' 'कवन चाचा?' - सूरुज भकुअइले। 'तहरा बाबुजी के मामा के साली के लइका केहू बा नऽ, जे काका के ढेर मानेला? . . जे उनकर सब करजा भरे के कहले बाऽ?' 'ना तऽ। . . . कइसन चाचा आ कइसन करजा गुड्डू?' एक बेर तऽ गुड्डुआ बउआ गइल। ओकरा बुझाइल कि सूरुजा के तऽ मजाक कइला के पुरान आदत हऽ, बाकीर जब बार-बार सूरुज एक्के बात रटेंऽ तऽ लागल की बात सही बाऽ। सूरुज आगे कहले, - 'तहनी के केऽ तरे विश्वास क लिहल लोगीन इयार? . . आरे मर्दवा, आज के जुग में आपन भाई तऽ एगो रोटी देबे के बेरा दस बेर सोंचऽ ता, तऽ ऊ तेल-तासन वाला भाई का करीहें होऽ?' 'ठीक कहऽ तारऽ, बाकीर हमहीं भर ना, बाजार के सगरी दुकानदार ई

सोंच के उधार देत रहलें कि लाला लोग ढेर रिश्ता निभावेला लोग। ऊ लोग दिन भर में जेतना साँस ले ला लोग, ओतने रिश्ता निभावेला लोग। . . रिश्ता के तरे बनेला आऽ के तरे निबहे ला, ई केहू तहनी से सीखे।'

'तऽ काऽ आज ले बाबुजी के गृहस्ती करजे से चलत रहल हऽ का?'

'तब का ईयार! . . . एक हप्ता पहीले काका कहले कि सूरुज आइल बाड़े, भाई के खबर आइल बा। आज अइहें, बिहान अइहें। ई खेल जब बरदास के बाहर होखे लागल तऽ सभे सामान दिहल बन्द कऽ दिहल।' अपना बाबुजी के ई छली रूप देख के सूरुज के बुझइबे ना करे कि काऽ करें। मन करे कि एक पसर मुसमरवा फाँक के निश्चिंत हो जाई। जब गुड्डू दुकानदारन के गिनवलन तऽ पता लागल कि सुँघनी लाल लाखन के करजदार बाड़न। सूरुज के मन कोठा -कोठा नाचे लागल। एक बेर तऽ मन कइलस कि एह छली रूप रखे वाला बाप के गटई में गमछी कस के मुआ दीं। बाकीर खीस के एही अँगना में एगो आदर भरल पेड़ जामे लागल, जवना के गर्व कहल जा सकल जाला। ऊ सोंचे लगलन, - 'बड़ा जीवट बाप बाड़न ईऽ। गृहस्ती चलावे खातीर कर्जा के परवाह कइले बिना आज के जुग में निमन-चिकन खिआ के बी. एस सी. पढ़ा लिहल कम ना होला। दुनिया के सगरी बाप अइसहीं होलन का कि कर्जा में डुबीयो के संतानन के सुख के ललसा मन में धइले रहेलन?'

सूरुज सोच के ओह गाँव में चल गइलन, जहवाँ लागल कि उनकर बाबुजी एतना बिपत एही से न उठवलन कि बेटा पढ़ के नौकरी पइबे करी। आ बेटा निकलल आज के पढ़वइया। जहाँ नोकरी के सपनो देखल दुस्वार बाऽ। सूरुज के चेहरा के भंगिमा लागल बतावे कि ऊ कुछ प्रतिज्ञा करत बाड़े। पलट के गुड्डू से सट गइलन, - 'गुड्डू हो। . . हम एह कर्जा के उतारेब। बाबुजी घर चलावे खातीर कर्जा लिहलन तऽ हम उनके कर्जा उतारे खातीर मेहनत करेब। . . . बस, आज के बाद हमरा घरे उधार ना जाई। आज भर हमार बात मान लऽ। आज हमके सामान आ कुछ रूपया दे दऽ।'

गुड्डू बड़ा निहोरा पर उनके बात मान गइलन। सूरुज सामान ले के घरे अइलन तऽ उनके बाबुजी बेचैन हो गइलन। पूछलें, - 'कहाँ से सामान आइल हऽ हो?'

'गुड्डू के दुकान से।'

'कुछ कहतोऽ रहल हऽ का?'

'का बाबुजी?'

'माने बड़ा नीक लइका हऽ। गइला पर बिना चाय पिअवले ना आवे देला।'

'हँऽ। . . . कहत रहल हऽ कि काका कहाँ बाड़े? . . ढेर दिन देखले भइल।'

दूनो जने अपना-अपना बात के चोरी पर मुस्कुराए लगलें। रतहीया राज बढ़े लागल। रात के करीका रूप चारू ओर बइठल रहे। पसीना चुआवत जेठ के संझा के हवा में तनी गुदगुदहवा ठंडा रहल। आकाश में चनरमा हँसुली के सकल ले के रात रानी के गरदन में चमकत रहलन। उनका आगे-पीछे जोन्हीयो झोहल रहली सों। गाछ पर भकजोन्ही अपना छली रूप पर घमण्डे डुबत-उतरात रहली सों। बरला पर तऽ चनरमों के कुछ ना बुझे सों, बाकीर बुतइला पर अस्तित्वे खतम हो जाए। ओकनी के भरमावे वाला क्षण भर के अँजोर के रात के अन्हरीया लील ले।

सुँघनी लाल कुरसी पर बइठल रहलन। सूरुज खटिया पर छितराइल रहलें। बाप अपना पूत में चनरमा के जोत देखत रहलें तऽ बेटा गाछी पर भजोन्हीन के बरत-बुताइल, आ ओह से तुलना कऽ के अपने बाबबुजी के देखत रहलें। सूरुज खातीर दूनो में कवनो ढेर अंतर ना रहे। दूनो अपना-अपना अस्तित्व खातीर दुनिया के धोखा देबे में माहीर बाड़ें। ओने बाजार में गुड्डू से होते, मुँहे-मुँह सगरी दुकानदार लाला के असलीयत जान गइलन। सभे एक्के सुर में पीटे के पलान बनवलन। गुड्डू एगो असली मीत के धरम निभवले। कहले, - 'पीटला से पइसा मिल जाई का?'

नकछेद काका खाँसत कहलन, - 'चल के थाना में चार सौ बीसी के पिटीसन दे दिहल जाव।' . . . .

आज के बिहान तनी दोसरे ढंग के भइल बा। दिनकर के ललका अँजोर में पीड़ा के पीअरी धइले बा। बेआर में एगो दम्मी सधले डर के कँपकपी बा। चिरई जइसे बिलखत बाड़ी सों। जइसे शिवालय से घंटा-घड़ीयाल के स्वरे नइखे फूटत। जइसे आज के बिहान दोसरा जुग के बिहान हऽ। कुफुत के बिहान हऽ। बिपत के बिहान हऽ।

सूरुज भिनसरहीं एगो जरूरी काम बता के शहर चल गऊवन। सँऊसे दिन केऽ तरे बितल, एकर लेखा-जोखा विधतो ना पवले होइहें। होत तिजहरीया सड़की पर लउकले। ईऽ काऽ? . . ऊ एगो ठेला पर सतुई के लस्सी बेंचत रहुवन। लस्सी के मटका पर टहकदार रंग में लिखल बा - 'बिहार के टा ॅनिक'। . . . एने चार सौ बीसी में सुँघनी लाल के पुलिस जेल ले जात बिआ। ओने अपने बाप के कपार से करजा उतारे खातीर बेटा ठेला रूपी पनछुइया नाव से जीनगी के समुन्दर में आगे बढ़ रहल बाऽ। बेटा के लिलार पर एह बात के गर्व बा तऽ बाप के चेहरा पर पछतावा बाऽ। सूरुज के आँख के सामने उनकर बाबुजी आ अन्हरीया रात के भकजोन्ही बाड़ी सों। दूनो आपन अस्तित्व कायम रखे खातीर अपनहूँ साथे छल करे में माहीर बाड़ें। ना जाने दुनिया में अइसन केतना लोग बा? ना जाने सूरुज जइसन बेटो बाड़े का???

❑❑

उत्तम नगर, नई दिल्ली

KBS AIR & GAS

KBS Air & Gas Engineering

SALE & SERVICE

* PSA Nitrogen Gas Plant
* PSA Oxygen Gas Plant
* Air Dryer
* Gas Dryer
* Ammonia Cracker with Purifier Etc.

Head Office : Plot No.-20, UGF-3, Avantika - II, Ghaziabad- 201002 (U.P.) India

E-mail : kbsairgas@gmail.com | Website : www.kbsairgas.com

MOB. : +91-7042608107, 8010108288

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

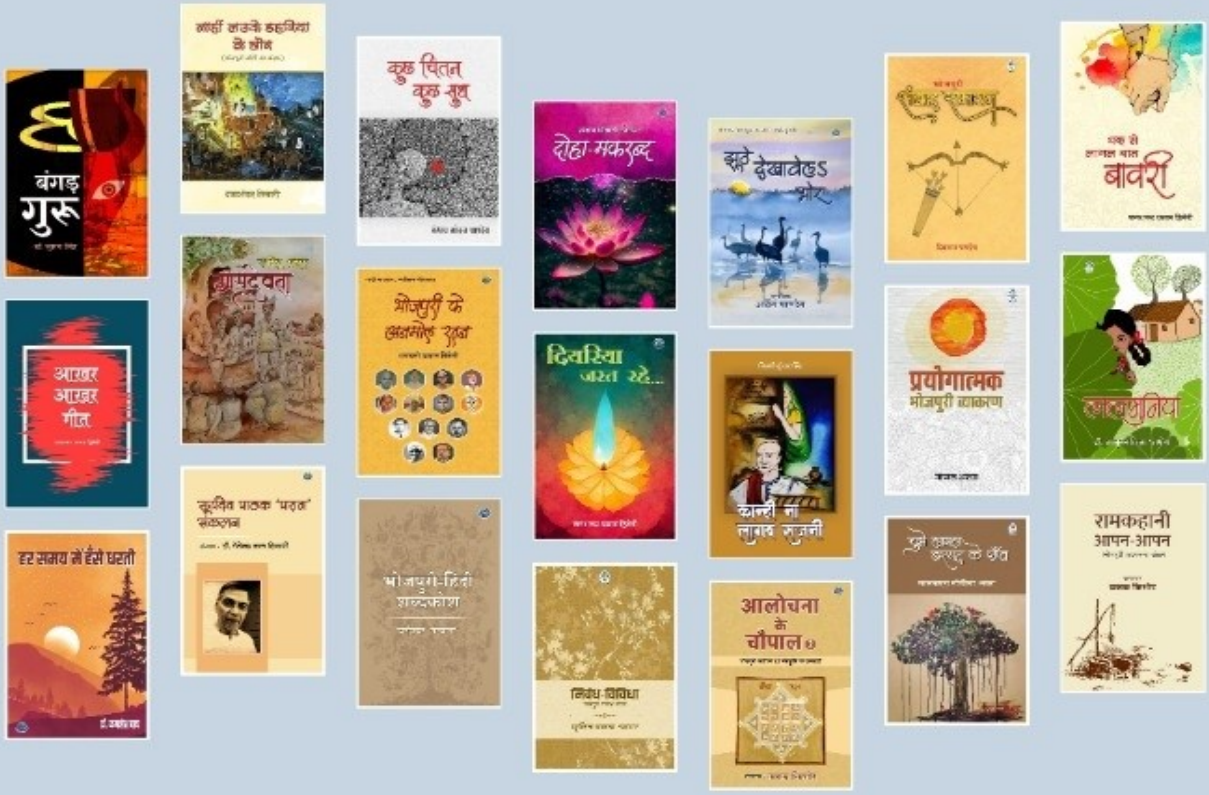

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

लाइक आ सब्सक्राइब करी आ

भोजपुरी साहित्य : रचना-आलोचना

से जुड़ी

@RachanaAalochana